

NOW THE PROPERTY OF THE PROPER ॥ ज्यथ पन्तित श्री जिनविजयमञ्जाराज विरिष्ति ॥ ॥ श्री घनाशालिभक्नो राम ॥ ॥ प्रारम् ॥

या ससारमा परिव्रमण करता प्राएतिमे चुझकादि क्वा रुष्टाते डार्नेन एवो पामव ते पण पामी शकाय, परतु श्री। 出品 उत्तमकूल अने

द्वमहार तेमा वानना नाजन धया, सिंहासन थयुं, तपना प्रन्नावर्ष। मने नावना प्रजावधी सन्नतिना चार जीवनी हत्या करना सुद्धान्द्रावन म मनावर्ग

अरतेषर म

परा मुक्ति

तषा परना वेशम F तथापि याहि वानधर्मेनु प्रधानपर्धु पोताना पंतु या प्रकार वान पवाय तमञ Ħ त्म, गष्ट मने स्पर्श कवलङ्गान मृत्यन महत्वप्र व्हाडीए ग्रीए सिंबतमा प्रसिद्ध हे मारीसाञ्जनमा

नावनु फल इाराजने 둳

रुपजदेव प्रजुए प्रथम घन्नसार्थं वाहुना नवमा मुनिजनोने घृतनु दान दीधुं, तो तीर्थंक प्रथमों वेनार ते वानधर्मज डे

र प्र पान्पा बाहु मुनिषे पाचको मुनियोने आहार पाषी लाबी

मागस्या अन्म

सिं जन्म पामहो, न्यांपण सकुर समीपे दीक्ता प्रहुण करी कर्म खपावी सिद्धिप क्षे पत्रकुमर मने हासिन्नव्हुमर मात्र मुनिने दान देवापी अत्यत्त कृष्वान पक् क्षित्रे जण सर्वार्थोत्रह विमानमा गया त्यापी ज्यनी महाविदेहक्षेत्रे कोर महोटा

| र सद्ग्रहस्थोनी नामाविष्यि । भित्रेता पुरुषोत्तम भामरासिंह | ् क्षत्रवा १ क्षा प्रमचद कुत्रवती १ जेतअसर | १ वकीस मन्नेचद कासिदास १ दीवबंदर | र गामी हावचद जुगसदास र हार हरसन्दर हरिपैद | १ माण्पानाचद तलफचद | १ मदेता हेमचंद गुलाव वंद |
|---|--|-------------------------------------|--|---------------------------------|--------------------------|
| श्वगानधी साधय श्रापनार सद्यहस्थोनी नामावित्त | ov द्या बातानाई वगनवास | उ पारिष्ठ पानाचर फर्पण्य | १ जागतार वब्द्युजार क्रुस्तार | , यन्यास तमेर्विजयकी मोतीविजयकी | र अजार |
| एः फ्रमेतम भमरासि | १० हा पुरुषेतमदास गुवावनंद महेता | ए पारिष्ठ विज्ञुवनदास जगजीवनदास | १ श्री षादानेत्रधमीयनक सन्ता | | १ माठ मायोकचंद मोपासिंह |

• PPPPPPPP

| १ ,, क्षामजा राम्या। १ ,, वेवकरण ऊर्वेरचर्व (क्षा मगनदादा जीवराजनी मारफत) ॥ क्षा मगनदादा जीवराज १ केठ मेमचक रायचंद | १ कोट फरेरवास हरजीवन १ ,, तसकचंद माथेकचंद १ क्रा शुकराज बहराज | १ , माबनलाल हमचि १ केन मोतीचंद देवचंद १ मारवाडी षचलजी नलाजी १ क्रेन चंदनलाख रुगनाथ १ क्रा लालजी केशवजी |
|---|--|--|
| र मोही कपूर्वद गोपालजी र वोराजी र राण्जादयजी रवजी र घूरिया र होज सखाराम जुनेनेबास | १ पूना १ झा बिवनाय दुंबाजी १ ,, बात्त्वंद सांघाजी १ सात्तापूर | १ शा ईम्बरदास प्रमीचंव ११ मुंवर्ड १० शेठ बाबजीनाई चापरिंह १ " तेजरिंह नीमरिंह १ " दीरजी हेमराज |

| | ज सम्बन्धी ज सम्बन्धी प्राकृ | , 00 | ₽-R • | 00 0 | 0 0 |
|---|--|-----------------------------------|--------------------------------------|------------------|-------------------------------|
| , | १ वाकानेर १ थ्री तपागछनान्त्रेनार खाते १ क्वा करवानजी पवमिति १ सा करवानजी पवमिति १ सरपवड १ महता नहुनाई क्वजी १ सरत १ सरत १ सरत १ सरत १ सरत १ सरत १ स्रेत १ स्रेत १ स्रेति १ केवरी सब्बुनाई फनेनाई १ केनाई | ध बेराज्यरत्नाकर जाग ? सो | म्माशासिन्ध्नो रास | मोक्तमाखा | नकामरस्योग मंत्रयपृत् |
| | र बा गवरां चद गावद होदरा शिक्पवास शिक्षवास शिक्पव शिक्पव शिक्पव शिक्पव शिक्पव शिक्पव शिक्पव शिक्पव शिक्पव शिक्पव शिक्पव | - | _ | 817 | युग्न विम |
| | , पूनमर्सव मनजी श्वा विषेत्र मानग्व क्रा विष्ट्र मानग्व श्वा विष्टुबाई प्रीक्रमवास श्वा व्रष्टुबाई प्रीक्रमवास श्वा जमजीवन रागवंव क्रा जमजीवन रागवंव क्रा जमजीवन रागवंव | स्त्री (जैन) सीपिमा जापेला पस्तको | स्त्यमंत्रने प्राणीतः किस्सातः ११६-० | Q 89 | ठावरेशमासा मर्भ यन |
| | सा अहें सा सि | स्त्री (क्षेत्र | महत्यमञ्ज | र पंत्रमतिक्रमया | इ. उपदेशमार |

ाउं के कार्यवान, मुंशोजवान, ब्रीप्रेशवान, ब्रीप्रेशवान, श्रीप्रकार्या कार्या कार्यावान, ए पाय अ कारता वात्रमा मयमनो बेवान पया मोक्षेत्र क्षापे छ क्षात्रे वाक्षीता जया वात्र पया सुख कारता वात्रमा मयमनो बेवान पया मोक्षेत्र क्षाप्त, पाच्या शांतिजयंव ॥ पाञ्चवान अोगाविक्ते क्षापे छे ॥१॥ क्षात्रयवानपी सम्बद्ध सुख, पाच्या शांतिजयंव ॥ पाञ्चवान पी परम पद, श्री श्रेयास कुमर्वे ॥ श्राह्म क्षापि सोष्ठाह ॥ ४ ॥ ते मादे नवि जन तुमे, वे व्या वात सुपात्र ॥ नरजवनो ए लान छे, श्रीच करण निज गात्र ॥॥। प्रवाद श्रुप मी ॥ (वीजे वीजे रे वामाको नवन वीजे एवेही) श्री गुरु देव मसावे पूर्ण, वीजेत इक्षित पाया ॥ वात कन्यञ्जम रास रचते, क्षाणे क्षाप्रवारे ॥ में वानताया गुण गाया ॥।।। एक्षाकणी॥जिम कन्नयञ्जम बिजेत स्री गुढ़ देव प्रसादे पूरण, वेठित इडित पाया ॥ वान कस्पञ्जम रास रचते, झार्थ द भाविक छपाया रे ॥ में वानतथा गुण गाया ॥॥।ए आकणी॥जिम कस्पञ्जम विक्त पूरे, तिम ए गुनफल वाता ॥ वानादिक भविकार भनेषम, गयाथी मुख्याता रे ।मेंग ।।।।॥। मंगवाचरण ते मूब मनोहर, सुनप ते पीठ प्रकास ॥ वचन युक्ति ते स्कंप विरा जे, वार शाखा छस्त्रास रे ।मेंग।।श। नव नव क्षेप हातनी रचना, प्रतिशाखा प्रतिमा से।। देकिष्य पत्र सवा नवपद्यव, सुक्त पुष्प सुवासे । ।मेंग॥॥। गुज्ञ फल ते तस स्र

सुविहित सुनि पुगव, बुव गजीवजप सवाया ॥ शाति सुवारस परम महोदवि, जनम सुपस ठपाषारे ।मिण।११॥ तस सेवक कोविद क्षिर केखर, हितविज्ञय गुरु राया ॥ यट स्ट्रीन श्रायम जलनिविमें, बुद्धि जि**द्धा**ज तरायारे । मिण।११॥ तास क्षित्य पन्ति जि र्षेनो कहेवो, रीफववो ते स्वाव ॥ योता पढी विविध जातिना, स्वाव प्रहे थाथ पावे रे । ।में०॥ ए॥ रक्षक ते गुरु वक्ता समबुं, कब्यडुमनो स्वामी ॥ ते पासेची फल मागीचे, यातमने हित कामी रे ।मिं०॥६॥ ए फख स्वादन्यो ड ख जावे, दाहिये मगख मावो।। क्षेत्री विविष्ण प्रकारे विषिद्धी, स्वस्वरची करी गावो रे ।मिंग।। उ।। स्री तपगष्ठ सूर्रह्मा झ नीपम, श्री विजयवेवसूरिक्षा। गौतम जंबू वयर समोवढ, गुण्यदी तेष्ठ मुखिका रे ।मिंग ।।।।। तस पट्टे श्री विजयरिष्ठ गुरु, मुनिजन कैरव वेक्षा।।गुणमयी रोक्ष्य नूषर कपम, संघ नकस सुखकेवारे ।मिंग। ए।। मेक्ष्यट पति राक्षा जगतरिष्ठ, प्रतिवोधी जक्ष ली संग तक्ष्य सुखकेतारे ॥मंगा ए॥ मक्षाट पात राक्षा जगतत्त्व, गायना नास झिल्य हो ॥ पत बाखेटक नियम करावी, आवक तम ते कीयों रे ॥मंग॥ १०॥ तास झिल्य अस ू. रे मिणारशा स्री महावीत्ने वारे मनोबर, पंच पुरुप सु कहाया ॥ लिव्यपात्र स्री भूर, माणविजय मन नापा ॥ तास् सतीपे विबुध जिनविज्ञये, पिरुआना देशी विविध प्रकारे। नोपम, श्री विजयदेः

व्यवहारी धनसारने रे खो, बिबसंते मुख जोग रे ॥ सोजागी बाब ॥ पुत्र पया है ब्रांत क्यवारे बो, पूरव पुष्प संगोग रे ॥ सोजागी बाब, व्यवहारी धनसारने रे बो ॥ ॥ ए घाकशी ॥ धनवन ने धनवेचजी रे खो, धनवंच्यिम बाब रे ॥सोण। घ्रष्यापक प्रमान प्राप्त प्रकार क्या प्रकार के ।। सीण ॥ क्या मिण ॥ व्या ॥ ॥ विन्याविक गुण अप्याप है खो, संक्य क्या प्रके ते हे ॥ सीण ॥ अति सुक्र सोह्यस्मणा रे बो, देवकुमर सम हे हे ॥ सीण ॥ व्या शहे ते ॥ सीण ॥ व्या है तो, सोवकुमर सम हिंदी, सिण ।। शिण ॥ शा ॥ वानकी ॥ ॥ वानकी ॥ । वानकी ।। वान ॥ ॥ वानकी ॥ । वानकी ।। वान ॥ ॥ वानकी ।। वानकी स्वा है सो, धनवंद्याविक है गुण्यमणि स्पण जनार रे ॥ सीण ॥ व्यण ॥ ॥ ममवारी प्रमे समे रे बो, धनवंद्याविक है हो ॥ वानकी ।। वान ॥ वानका ॥ वाण ॥ वाण ॥ वाण ॥ वाण ॥ वाण ॥ वाण वाण वाण वाण हो ।। या घावव्यक वे दंकना रे हो, साचवे मन वर्ग राग रे हो ॥ सोण ॥ व्यण ॥ ॥ सिण ॥ वाण देवाव्के हो, साचवे मन वर्ग राग रे हो ॥ सोण ॥ वाण ।। वाण वेरचवंदा साते सवर हे छो, वानके ।। सि

ध पापंत युगते करे रे सो, टालवा पापना पंक रे ॥ सोण ॥ ब्यं ण ॥ए॥ रापयात्रा रखीया सम्पारे यो, साचूने वसती बान रे ॥ सोण ॥ पढिसात्रे जाने करी रे दो, निरवय झस स न ने पान रे ॥ सीण ॥ ब्यंण ॥ १० ॥ यतः ॥ मतुषुवृत्वुत्म ॥ जर्यति वंक्ष्च्वाया, को एसवें जयवंता वर्तों कारण के, तेवसंसारसागरने तरी गया।।!।बेझना नियम घरे हित का रे खे, क्षेति (बेस घरी जम रे ॥ सो० ॥ सातकेत्रने साचवे रे द्यो, नियम घरे हित का म रे ॥ सो० ॥ व्य० ॥ ११ ॥ पुष्प सयोगे ब्रन्यवा रे द्यो, कृशिववती सुद्धमांब रे ॥ सो० ॥ गन वर संयोगपी रे डो, निरुपम नाग्य विकाल रे ॥ सोण॥ ब्यण्॥ ११॥ वेख्यो सुपनी बीपतो रे डो, फड्यो फूच्यो ० सुरबुक्त रे ॥सीण ॥देखी श्वानंद क्रपन्यो रे डो, कंतने कहे परतक्त रे ॥ सोण ॥ ब्यण ॥ १३ ॥ केत कहे कामिनी प्रते रे दो होशे पूत्र प्रवान रे ॥सीण. कुष मेरण कुब दिनमपी रे छो, क्षेत्र नूप समान रे ॥सीण ॥ ब्यण ॥१४॥ * प्रत्यूपे अति मझु रे सी, तेस्वा शास्त्रना जाख रे ॥ सीए ॥ फल पूर्वपासुहष्यातषा रे सो, ह्या चान्नय वानतः ॥ अवातसृषु माधन्य, (तथा पर राजने रहेवा माटे स्थानक आपवापी कोड्या वेड्य बाश्यय वानतः ॥ ३

सुजाल रे !!मोठ !! ज्यव !! १५॥ अगन अबूत इत्प्पी रे हो, से से ह्यापा निवान रे !!सोठ !! भाजनी होट खुड़ी थया रे हो, दीको ग्रेमे वान रे !! सोठ !! ह्या का आहं॥ अनुक्रमें ग भे बचे हावे रे हो, मानस सर जिस हसरे !! सोठ !! जिन कहे वीजी डालमारे हो, पुष्पे कुत अवतंत्त रे !! मोठ !! छाठ !!? !! पुष्पे कुत अवतंत्त रे !! मोठ !! छाठ !!? !! करवा उनम काम !! !! साधुने वस्ताविक हिंदे, दोष्ट्र संप उन्तर !! जिनपूना गुरु नेवना, सत्त जिन जिन !! शा पा ।! पीष्पेय सत्मायिक हर्ल, वर्ष नियम विताना !! वित्य करवा उनम काम !! !! साधुने वस्ताविक हिंदे, दोष्ट्र संप वित्यम किताना !! वा करवा उनम काम !! !! साधुने वस्ताविक हिंदे। ये हे वित्यम किताना !! वा सत्त हिंदे। वहार !! यो पोष्टे वा उत्तर ।!!!! इंद्राविक देहि सक्तः, मिलिंग हिंदे हुप् अपगर रे !! चुष्पे स्पत्त हुख पामीये !!!! । इंद्राविक होत होते हुखे , हुर रे !! विति विद्यत वेसे मिले, कित सुरवुक्त अरपूर रे !! चुष्पेण !!!! व सम

सारो रे ॥ ताण ॥शा पिक झुननी गुण वर्णना रे, न घटे तुमने रे तात ॥ नीति गास्त्रमें पिक कही रे, ते यू वीसरी वातो रे ॥ ताण ॥था। पतः ॥ अतुषुत्रशुत्म, ॥ प्रत्यक्ते गु रव स्तुत्या, परोहे मित्र वापना ॥ कमीते वास जृत्यात्र, पुतात्र्वेच झतास्त्रियः ॥ १॥ म, ॥ वित्रक्क नित्र गुला, न परुस्त न य मुश्रस्त पत्रस्त ॥ महिलान नोत्तयावि हु, न र झाप ॥ सुत पिए। विनय न साचव र, भागतणा थान चनान , मर्यादायी टवे रे, म गरो मातमे झात॥ तातमे पिरा नवि लेखवे रे, प्राइक होय जो जात रे ताण ॥ ६॥ ते माटे हवे आजधी रे, मुत गुषा वर्धान वात ॥ मत करण्यो कोइ घागते P सावायं –प्रत्यक्षमा गुरुना, परोक्षमा मित्र भने वायवांना, आपणुं कापं षड् रद्धा पडी दास धने भतुचरोना, तेमजपुम धने सीना मरण पडी बढ़ाण करवा ॥शा। ॥ शार्पोडुन ंग्याप असे माहप्प गर्गा कवि परा निवकता गुण प्रत्यक्षे कद्वाची, पुत्रना गुण परीष्ट्रे क्यापी अने सीना गुण कवि परा निव्हें नेजवाषी पोतार्तु महोटाइपर्णु सचवाय हे तेम इता को कवि बोदो, तो माननी नाग थाय गर्गा झुत गुण वर्षावते बक्रे रे, वयुता बहीए रे झाप ॥ सुत पिए जिसरु = सम्बन्धे पिए। विनय न साचवे रे, मानतएो। होय व्यापो रे ॥ ताण ॥ ५ ॥ कुळ तत्व ग्रेवनी रे, मृतने कहे (मुवि ए स्रमन स्रांत वातहो रे, प्राषात्रकी निरधार ॥ माडी जाया दोहीला रे, जारो लयस परोक्षमा मित्र अने वायवोना, आपणुं कार्य घड़ रद्या विख्यातो रे ॥ ताव ॥ ॥ वचन सुखी . ए अम वचन

करता क्षेत्र कारण के, एक चंद बाखा जगतना भ्रंबाराने हुर करे हे, पण तारादोनो तमूद के करता ने भागा तान बचन सुणी ततक्षों रे, बटकी बोद्धमा रे तेह ॥ एक पखो इम कि तायता स्वाता । १॥ व्यवसायार्थे जयविमें रे, कर ने नातं बाते करा बचन सुणी ततक्षों रे, अदि नीव वीच सुरो रे ॥ ताणा। १॥ कि कम नातं करा करा वावं अभे रे, राखु अमे ब्यवदार ॥ बित परेहे । अत्यादार ॥ अति विका करा व्यापारे रे ॥ ताणा। १॥ अति वावं करा व्यापारे रे ॥ ताणा। १॥ विका सुच सुच सुच । सुण कर्म क्षेत्र विका सुच हिए ॥ जृख कर्म कर्म करा वावं करा वावं करा विका । १६॥ विका सुच । सुण भने कराये रे, जोवे हुप विका सुच । । १६॥ विका सुच । सुण भने कराये रे, जोवे हुप विका सुच । । १६॥ विका । १६॥ व

हित्कमंदिक बहु करु दे, बिख नेस्ती व्यवसाय ॥ सेक्रीबट नाषावटी दे, क्ष्य व्यापार विद्यापे ।। ताण ॥१७॥ इत्यादिक उपक्रम करी दे, अर्जन करुं धन कोह ॥ ममें सामर्थ विद्यापे ।। ताण ॥१०॥ इत्यादिक उपक्रम करी दे, अर्जन करुं धन कोह ॥ ममें सामर्थ व्यापार ॥ १८॥ ।। वाष्टी हाले जिन कहे दे, पुष्पे क्ष्य जयकार दे ॥ ताण ॥१७॥ ।। वाहो ॥ घन्नाने भ्रमश्री कोवक, वाखों कव्य प्रकार ॥ वाण ॥१॥ ।। वालों अमश्री कोवक, वाखों क्ष्य क्षया मवन स्रयुक्त क्ष्या ।। वालों तालों तालों का सहक्ष, जेखववा हित खाय ॥त्या सहक्ष गण्या सद्य, लोक को ए त्याप ॥१॥ मुतमें अतर राखते, वेषे विरोघ विख्याता। सब्द्र गण्या सद्य, लोक नहें ए त्याप ॥१॥ मुतमें अतर राखते, वेषे विरोघ विख्याता। सब्द्र गण्या सह्य प्रते ॥ वाण स्था ॥ ।। ।। वाल प्रमे ।। ।। वाल प्रमे ॥ ।। (रह्म रह्मे रह्मे वालंदा ए देशे।) होठ कहें सुत साम्जले, हैं गुणने आसक साल रे ॥ जात सद्य सिर माहदे । हेट कहें सुत सामर्था ।। वालुदेव नास्यति, वालुदेव नामर्था ।। वालुदेव नामर्थाते, वालुदेव नामर्थाते ।।

प्रश्न तिष्वार वाव रे ॥ "मपरान्दे जीजन वियो, तेजी निज परिवार वाव रे ॥ ग्रेण क्ष्म तिष्वा कि विवार के ।। जीजन चयवने तैवनो, क्ष्म तिष्ण ये स्वयंत्राय बकी तिष्ठा विज्ञ वाव रे ॥ जीजन चयवने तैवनो, क्ष्म तिष्ण ये स्वयंत्राय बकी तिष्ठा ।। श्री कि व्यवस्था व्यवस्था कि विज्ञ के स्वयंत्राय का असमान के वाव रे ॥ स्वायं के व्यवस्था विष्यं के वाव रे ॥ महि आक्ष्म तिष्यं क्ष्म आपने तैव निष्यं वाव रे ॥ श्री का अस्था श्री के व्यवस्था विज्ञ वाव स्था का ।। वेदि विज्ञ विव्या त्या ।। वेदि विज्ञ विव्या विव

॥ नदी उष्ठक ऊतावलो, समरे श्री गुरु देव ॥ए॥ ॥ हाज ६ ही ॥ (भूराजी च मने गोंडे न सरक्षो ए देशी) । काज ६ ही ॥ (भूराजी च मने गोंडे हो। धुन्नम सनेष्ठी

माजन प्रविध्य पेरो ॥ ए आकृषी ॥ सेम धनीपम तेथे ततक्षण दीयो, महेम्बेरे कर

माजन अविज पेरवी ॥ ए आकशा। ॥ धर्म भगापन एता स्मान्त्र मनीत्त्र मनीत्त्र मनीत्त्र हो।।

परी द्वीरो ब्रोमिनुनगण।।। गुमएपो होणे बचनज कीयो, मनक मनोरव मीयो हो।।

गुण। होतमें दिल्लेग मिन सुमिने विचारी, स्वान्तुरची झुखकारी हो। मुण।शा विचर पेरवाणपुर पारे,
(विज्ञान मन्त्रेग सुरो, सक्त क्रमणके पूरे हो।। मुण। भावे वे ए पह्जाणपुर पारे,
व्यासायात्र तिवासे हो।। मुण।शा। तेव जागी एने तुमे सनमुख जाज्यो, नेट मुकीने

मन्त्र पार्गो हो।। मुण। इप उपाय करी हाथे करेग्यो, एवे क्रियाणक मिंव केष्मी हो।

मन्त्र पार्गो हो।। मुण। इप उपाय हाथे हो।। सुण। पार्ग कियोगाए।। (दिने अवसर मि

क पाती अपने तुमे वेण्यो, पिषा एह काज करेण्यो हो।। मुण।॥।। (दिने अवसर मि

होन नहीं माने, धणु घणु हिखे हो थाने हो।। मुण। पत्र वाचीने महेम्बर मन हरस्वो,

दिन नहीं कारे, धणु घणु हिखे हो।। मुण।। विचर्मे सिने एह कार्य ने मदीदो, छक्तपणो

दिस्ते साचो करी परस्वो हो।। मुण।। मुण सुरो हो।। मुण। का कोले, नीति बचन चिन होने हो।।

6 ासुगार गा धनपति चिंते मुज कारज सीघो, में मनमान्यो कीयो दो ।ासुगा कषा बन्नागुं हित

विचारीने इम मोदो, नदी को सित्रजी नुम तीं हो ॥ सुणा। रणा को तुमने ने स्वप ए | की पण्य करो, तो पालो सरवे जलेरो हो ॥ सुण। इम कद्दी धन सक्ष होई प्रसावे, ब्रान्यों ब्रांते पण्य करो, तो पालो सरवे जलेरो हो ॥ सुण। इम सिक्स प्रांते सरवे जलेरो हो ॥ सुण। मात पिता मन वह सुख पाने, 'ब्रान्जाया ने गुण गांवे हो ॥ सुण। रा। सिक्स व्य प्रांते 'ब्रान्जाया ने गुण गांवे हो ॥ सुण। रा। सिक्स व्य प्रांते । श्रुण। मात पिता मन वह सुख पाने, 'ब्रान्जाया ने गुण गांवे हो ॥ सुण। रा। सिक्स व्य प्रांते । श्रुण। वा जन्म मन विर राखी, 'हु सुख जिना-अप वाली हो । सुण। रा। हो कहे धन्ना तातने, ए एक तक दिनार।। न्यायांक्कित ब्राप्या पर्वे, है करी वाविण्य सफार।।।।। तह प्रयोग सिक्स तुलार।। ने कि क्याया तुरते, साति साति प्रकाना।। मे है वा मोजिंदे वसी, ववन वघारचा वान।। हा साविण सुर माति साति वसी, करी रसोई त्यार।।।।। पेपी सरवा सुरुव सिन, 'हु बी पार।। अवार जातवी ब्राति वसी, करी रसोई त्यार।।।।।। पेपी सपया सुरुव सिन, 'हु बी पार।। क्याया ना याचक जन संतीपिया, यपायोग्य देह बात।।।।।।। देवरजी अम कुस सित्रक, जीवो कोदी सरीर।।।।। देवरजी अम कुस सित्रक, जीवो कोदी सरीर।।।।।

(करेलणां घड देरे ए देव्री)

ा बाख ॥ मी ॥ (करेलखाँ घड दे रे ए देव्री)

हवे ते घनकुमारने, तेही कदे घनसार ॥ दुख मन्त्रा नु मादरे, तु मुज कुल हाथा के मारा ॥ घनुर जन सान्त्रावों रे ॥ सान्त्राने पुष्यंनी वात, चतुर जन सान्त्रावों रे ॥ शा ए आ कहा।। भ्रांग जुन जनम्या पठी, अम कुल बाच्यों वान ॥ काद्व बुद्ध बाह अम घरे, अप जा जा थयो धुममाण ॥ वाणाश। माता होधिवती तता, दूरियत वदन विख्यात ॥ धु के तान । हो के वारपा, तु मुज मुन्ता मुकात ॥ वणाश।। त्रोजाई जन्ती जातिहों, रोग मा हो मीत।। खाढ सहावे भाति घथा, वेबरने सुमतीत ॥ चणाश।। संपद्ध सर्वेश सङ्घ सिखी, को वाहव दिव्हा, देव पर मनमाशि ॥ अयात भावेखाई करे, अवयाय माहक माशि ॥ चण के वाहव दिव्हा, रोच पर मनमाशि ॥ अयात भावेखाई करे, अवयाय माहक माशि ॥ चण के वाहव दिव्हा, रोच पर मनमाशि ॥ अयात भावेखाई करे, अवयाय माहक माशि ॥ वाह के कि ।चणाणा बदु नैषव ए तुम तसो, जाग्य बने जरपूर ॥ विनय विनेक विद्या नीतो, भ म कुन मवर सर ।ाचणाणा एइनी सेवायी तुमे, सुख लहेशो श्रीकार ॥ कब्पयुक्त स म एइ ठे, वंठित पूरवाहार ।ाचणाणा देखो इषो एक याममे, अञ्चा तक्ष दीनार ॥

† सोनाइयो

जोकन विधि जानी साचनी, संतोच्यो प्ररिवार प्रचणारणा वानी जोकाईने जाना, जुप क्र जोकन विधि जानी साचनी, संतोच्यो प्ररिवार प्रचणारणा वानणारणा एडमा सु

है र मियाश। उकायनी जयवा करे रे, पांचे प्रचयन माय ।विशा मद ब्रांटे प्रवाग घरे रे, हैं टाले चार कपाय ।विशा मिस्वमयने पारधे रे, तिकरण हुद्ध ब्रदीन ।विशा मौच है टाले चार कपाय ।विशा मिस्वमयने पारधे रे, तिकरण हुद्ध ब्रदीन ।विशा मौच स्पे पर्य प्राप्त ।विशा प्रकान नगर मुक्त मिया ।विशा हुद्ध प्रवेश माया ।विशा हुद्ध मिया ।विशा हुद्ध माया ।विशा हुद्ध करो रे, वहोरो एइत्ज ब्राह्मर ।विशा हे हिस्से मिया ।विशा एइ हिस्से मिया ।विशा एइ हिस्से मिया ।विशा । होठ कहे झुत साजलो रे, मनोदर मादरी बात ॥ वन घन साधुजी रे ॥ हास्क्रय की में संप्रद्यो रे, अनोपम ए अवदात ॥ घन घन साहुजी रे ॥१॥ ए आकर्षा ॥ मुनि वर एक मदावती रे, तपसीमें शिरदार ॥षण। पंच मद्दावत जातवे रे, साचवे पंचाचा है, थ्राविका पर ठजमावा विष्णा पकानाविक बुजुक्सा रे, बावी जरी जरी वाल गायणा भी शिल्यानीजी ब्रतुमुद करो रे, बहोरो एइज ब्राह्मर गियणा देखी सदोप ने साबुजी रे, करे बन्यम विहार गायणाशा आविका चिन्न विवादी पर्डे रे, बेठी घरने बार गायणा एह में विभरतो गौन्दी रे, काल्पो ब्रवर कप्पगर गायणाणा सरत्वपणे विचरे सवा रे, गुपामा है हक गुष्प लीन गा ब्रवराण एक जोवे नहीं रे, मुविहितदी वायलीन गायणाणा घमलान है हेर्ड करी रे, किनो घरने बार गायणा विकसित बदने आविका रे, वहोरावे ते ब्राह्मर गायण ॥ डाख ए मी ॥ (माननी मोहनी रे अपवा नहानो नाहसो रे ए देहा)

ारणा वादी वे करवोहिने दे, पूटे मधुरी वात ाषणा तुमने षप्रीति न कराजे दे, तो जा क्षा के द्वा बवात ।वणा १।। वर्ष व्यवतात ।वणा १।। तुम सरिखो एक साधुजी दे, षाव्यो हतो इसे जचा ।वणा विष्य वदोर विन्यसो सही दे, ति बोळ्यो मुख वाष्ण ।षणा! रेशा तेहनो कारण साधुजी दे, व तस्तो करीय पताय ।षणा। तव घोळ्यो मुनिवर तिहा दे, मुख जहे सुखवाय ।षणा! १।। के ते तिवर पताय ।षणा। तव घोळ्यो मुनिवर तिहा दे, मुख जहे सुखवाय ।षणा। १।। के ते तिवर पताय ।पणा। १। विष्यं पत्र । विष्यं पत्र । विष्यं प्रित ।पणा। हो वेष वीचे इसे विषया ।पणा। हो वेष वीचे हसे विवर्ष तिहा अविद्यंत परित्या दे विषया ।पणा। १।। मा विष्यं कारणे विषये ।। मा प्रम्योवगरायामिनं, वहं विषये वार्ष में वार्ष विद्यंत । वार्ष मने मु

,मात्र हैं। प्यतंर परिप्रह्मी मूकाएटा तथा चारिजने रक्षण करवाना षार्थ एवा मुनियो, म मूपकरणनेज राखे हे अर्थात बीजु काई पण पासे राखता नयी ॥१॥ ते मुनि हैं। पि सारिखा रे, हैं हूं तीषु समान ॥षण। हूं वायस ते हैंस हे रे, मुनि गुण रपण हैं। न ॥षण।१३॥ हैं हुंमाख ते गज समो रे, हूं मुग मुगपति तेष ॥षण। नदरद्वि

कारक

ग्वरम्सि

मारे , ते समता गुयगेद । विणा ! । इम स्तवना करी साधुजी है, विचरे मिथिय के मारे । मारे । विज्ञान करी साधुजी है, विचरे मिथिय । मारे । विज्ञान । सान्यीने ते आविका, हरां विचय में नार ।। मारे वित्तपं आवे हे ।। वेदा ।। सान्यीने ते आविका, हरां विचय में नार ।। मारे वित्तपं आवे हे ।। वेदा ।। मारे वित्तपं आवे हे हां विच मारे ।। मारे वित्तपं हो विच मारे ।। मारे विव्यास ।। मारे विच मारे ।। विच हो मारे ।। विच मा

के वैज्ञानाणार जायतः॥मयावीया माणसा,केम पतीनाण नापामोरपोठ मधुरा बने, भूषन खाय ॥१॥नानार्थः—ने माया कपटी माणसोठे, तेनी क्षी रीते परतीन पढें के पींडानाक्षी मोर मीदुं बोखे ठे,पर्तु पूठेडा सिंहत सापने खाइ जाय ठे ॥१॥ वैज्ञ भूमे मति जता, मणा श्रेष्टाचारी साथ ॥साणा सत्य बाक्य बोलू सही, मणा | तिस्ताय ॥झाणा ११॥ ययात्त्रच बहुके सदा, मणा परिसित षत्रने पात ॥

ाजाना

भाग सिरवा गुरु साखेने, मणा बेजो सवा बहुमान ।।याणा।११। अमे पिण पूर्वे एंह्दी, है मणा विस्ती माया जाता ।।वाणा जनस्जन कीचा घणा, मणा बवे ते सवि विस्तराता ।। है वाणा ११। इम कही ते भुनि संचस्को, मण। नगरीमें तिषाताता ।।वाणा वचन मुणी ते है आविका, मण। पामी इंख अस्तराता ।।वाणा। कि एक्ट निर्मुणी, मणा पामछा। है व्याविका, मण। पामी इंख अस्तराता ।।वाणा। विते एक्ट निर्मुणी, मणा प्रथम है विक ड्रद्र ।।वाण। के ग्रुह साखु निंदा करे, मण। ते कहीं ए निर्मुद्र ।।वाण।।१।। प्रथम है आप जन तारपाहार ।।वाण। होविहित्तमा (विरादार ।।वाण। वीजो पण ग्रुप रामीयो, मण। है जग जन तारपाहार ।।वाण।।इकित होवे निवान ।।वाण।।ए ए ह्यात मुणी तुमे, मण। है मछर ग्रेहो ।वाण। मछर मुक्याबी तवा, मण। तहेशो पक् सर्वेत्र ।।वाण।। मछर मुक्याबी तवा, मण। तहेशो पक् सर्वेत्र ।।वाण।। वाण।।है विनय वहीं मुजा।।हण।।ए।। मुखी, असरे, अब क ॥ शेहा ॥ अथ घनसार तथा तनुज, त्रिएपे मूढ मर्दत ॥ पितृदन शिक्षा । मनमें देग घरत ॥१॥ अवसर पामी एकवा, कदे तातने जात ॥ मया करी मुज सुणो तातजी बात ॥१॥ घने जे कारज कियो, तेहवो न करे कोय ॥ इए। सिवि इ

हैं । पुणासणाएं॥ इम कही मात्मा सुनप्तिम है, वारेने स्वयमेन ॥ चोहाठ घोहाठ आपीया है है, न्यापराजें होन ॥पुणासणाह॥ मुख्य तनुज निप्ये तन्न है, पृष्ठोत्मा अपपागार॥ किरि है है न्यापराजें होन ॥पुणासणाह॥ कर्मवदी ते बस्तुमों है, जाप्ती जापन अपपा ॥पुणासणाणा कर्मवदी ते बस्तुमों है, जाप्ती जापन है, आपी खान अपपा ॥पुणासणाणा ॥पुणासणाणा निजन न नह्यो साम ॥ प्रमार ॥पुणासणाणा निजन है। विष नूची गया है, विराये विवसे ते हैं ॥ हाम वन्नवी ते तन्न है, वेश मानी गेह।पुणा है। ताणाणा अप चोषे विन ताहती है, बसकुमार जनर ॥ कुक्तांविक अवलोक्न है, निम्म म को लिएवार ॥पुणासणारणा वान होवे प्रजुपी नत्ने है, वारी इम मन बीर ॥ नगरमा कीतुक जीवतो रे, पहोत्यो चोहटे नवीर ।पुणासणा।११। पछु कप बाय हे जी हारे, तिहा मान्यो निरमीक ॥ बेटो सस्थानक ग्रही रे, चार्वतो मुख पीक ।।पुणासण। ॥११॥ तेहवे एक ब्रान्यो तिहा रे, हुंद बेचया नर कोप ॥ सक्ष्य पूर्ध देखी करी रे, "बी घो घमे सोप ॥पुणासण ॥१॥। एइवे नृप जित्तराष्ट्रतोरे, ब्रारिक्सनित्य जात ॥ 'मय प्रपी कीताववा रे, षाञ्यो ते सुविख्णात ॥पुणासण्॥१॥। देखी 'चरब्र घन्ना तथो रे, ह्या तम रे हैं, तो फिरी करों व्यवसाय ॥ एकेको दिन बाजबी है, जीजन जगति कराय 5 करियाणा शासानी छकाने १ मीकहां "धीष मासासुमारी महो दीयों न पोत्त हो 'बोकहो वालांव मृप जात ॥ युद्ध करावीजे ईक्षा रे, तुम म्रम गग साकात ॥ पुणासणा १ (॥) ज्ञाने ने तहनो वोक्डो रे, ते पान पन स्व का । स्वर सावीने मारको रे, पिण पन्ने पराक नि लेकिने वेहनो वोक्डो रे, ते पान पन स्व है। स्वा युद्ध कर्त ॥ क्षाक्षो म्रजा मार्का मारक प्रकेश रे, वेहना युद्ध कर्त ॥ क्षाक्षो मार्का मारका है। पराक्रम प्रजा तथारे रे, नित राजकुमा र ॥ ए क्षाक्ष्मा है मारका ॥ क्षाक्षा है मारका है मारका है मारका है मारका है मारका ।। र लाक्षा मारका है मारका ।। र लाक्षा मारका है मारका ।। र लाक्षा मारका ।। र लाक्षा मारका है मारका ।। र लाक्षा मारका है मारका ।। र लाक्षा ।। र लाक्षा मारका । र्टर्डु पुष्ययी सिद्ध ॥ पुणासणाशश्र॥ १ ॥ दोहा ॥ जोजन विधि करी जित्तपी, शेष रूच सुमकार ॥ जोजाईने मापी १ यो, बहुंचीने तिशिवार ॥१॥ जोजाई विष जामणा, दिनमें दा दा दार ॥ जीजीकार स

॥ बाव ११ मी ॥ (माबा क्यां हेरे ए देशी

ते, तुमे हवे वनमा पषारो ॥ इष्टेववनुं नाम जपीने, निज श्रवतार सुघारो रे । । मणा

क पाएं के

सुत वचन पिष

18. - i

॥१॥ जयाङ

म र ॥ म ॥ मातव वाषाये तिहां, राय करे विद्याम ॥ ।।। यत ॥ सद्धान आव्या प्राष्डु ण, मागे चार रतव ॥ वाणी पाणी साथरो, संपति सारु भ्रव ॥ श्रा भ्रबन्तिक भ्रवसर तथों, ते पण बहुदी थाय ॥ विष्ण श्रवसर जे कीजिए, ते तो नावे दाय ॥ ॥।। E ॥राणाधा। राजि कोई परगुषा मुज सन्तवावे, राजि तो मुज हिर दूवण ब्राचे ॥रा राजि गुषवर्षान सुपता टार्बू, राजि नहीं तो निज हिर भास्फार्तू ।राणाशा। राजि ।

ब्रवगुष मुजमें म्होटो, सिन परमुष न सबू षड़े जोटी ॥राण। सिन नित्य कलदो हुने मह सोचे, सीज तिषे लाज न रही छन हाथे ॥राण।१॥ यतः॥ ब्रमिणिक्वेतिष्य नासङ् नि ड्य, पित्रिक्केतिष्य नासङ् पब्ब्र ॥ कुष्टिक्केतिष्य नासङ् जब्बा, ब्राज्ञेनातिष्य नासङ् बक्का

मिखी समकाब ॥राण॥१६॥ राजि मैत्रो

तमेला, राजि भावीने

॥राण। राजि इम बारमी बाल ए जाखी, राजि

तिम कहे पुष्प सचने पाती ॥ रागा १३॥

तो मेहा ॥ चालते वनमें नृष्, दीठी कन्या एक ॥ बुक्ते बोरा वींपाती, कुबपरे १९ घड़े छेक ॥१॥ मृगनपणी चंदानती, चंपकवरणी देह ॥ देहती नृष चित चितते, गूरति के स्ता एह ॥१॥ के ग्रवा मुजने हहा, आती हे बतदेव ॥ के ईंजणी अपछरा, रमवा का भूत स्ता एह ॥१॥ के ग्रवा मुजने हहा, आती हे बतदेव ॥ के ईंजणी अपछरा, रमवा का भूत मक्ता ॥ ॥ इस चिती पूठे नृष्पति, ते बाला प्रते ताम ॥ दे भंदे मुजने कहो, नाति है नाम तिम जा ॥ ॥ (योगिणी मनमानी ए देही)

तव बोली बाजा सुकुमाला, करी लाज धुंघट मुविकालारे ॥ कामिनी मन मानी॥ के मान प्रते हो मान तव बोली बाजा सुकुमाला, करी लाज धुंघट मुविकालारे ॥ कामिनी मन मानी॥ के मान प्रते हो मान सुकुमाला हुंदे तुम बाती रे ॥ कामिनी मन सानी॥ के मान प्रति हो सुकाला ॥ धंगवेहरा चंपानो बाती, मुज तात हुत्त सुखवासी रे ॥ कामिनी मन सानी॥ के सिक विद्या मन्यासी, तस तनया हुंदे तुम बाती रे ॥ काणाशा नाम खत्का मुज ताते हैंदी हो मान प्रति सुका मुज ताते हो सुका मुज ताते हैंदी सुज यतत घणो तेल के हो सी, चाल्या जलबट है दीवो, मुज यतत घणो तेल के बालों, एक फलग बाले ते व साग्यो रे ॥ मान सुकाणा मान सुकुणा मुन वाले हैं

तियों तरती तरती उपकेंंंं, आवी हूं समुचंं कंटे रे ।काण। थ। ईय वनमें रद्दी काव किया गर्मा, वनना फल फूलने खादूं रे ।काण। ब्रांत तात सिव रद्या परदेशे, हूं एकाकी ए पे पंचारे ।काण। पाय सुपी मन प्रमुदित बावे, तव मंत्रीने समजीवे रे ।काण। ए क्यांता पतन करण्यों, लेंं बाहनी मादी बर्ज्यों रे ।काण।हा। राजा कुशले नगरे हे आव्या, प्या जीत निशान बजान्या रे ।काण। रूप प्रविक्त सक्तानों जायों, तस राये किया, प्या जीत निशान बजान्या रे ।काण। क्यांत्रों हे ।काण। द्वांत्रों स्वाप्ता काण। पूर्वा प्राप्ता से ।काण। ब्रांत्रों हे ।काण। ब्रांत्रों हो ।काण। प्राप्ता सिव जायों रे ।काण। सुधि सिव प्राप्ता हो। कियान सिव जायों सिव हो ।काण। सिव प्राप्ता हो। कियान सिव जायों सिव हो ।काण। सिव सिव गमावे, पुतरिव वदी से कुतु आवे रे ।काण। राव विवस्ता विवस गमावे, पुतरिव वदी से कुतु आवे रे ।काण। राव ताव रे ।काण। राव विवस्ता विवस गमावे, तुतरिव वदी से कुतु आवे रे ।काण। राव ताव रे ।काण। राव ताव रे ।काण। राव विवस रायों से सिव ने ।काण। ववरी बुक देखीने पूंटे, एहनो नामने गुण कहो है ।

सिन कहे पुष्प सपने नाखी ॥ गण। १७॥

॥ वेहा ॥ चालते बनमें नृपं, दीठी कन्या एक ॥ चुके बोरा वीषाती, कुम्परं के धर के के ॥॥ मृगनपणी चंद्रानती, चंफकारपी देह ॥ वेहा विस्त नेप्र कित चेहा है।

इंके के ॥॥ मृगनपणी चंद्रानती, चंफकारपी देह ॥ वेहा मिन चित के हो रित के स्ता एक ॥॥ इंका प्रमान का कि कि प्रमान का मिन हो।

प्रमान ॥॥ इन चिती पूर्व नृपति, ते बाता प्रते ताम ॥ दे नदे मुजने कहो, नाति है।

प्रमान ॥॥ इन चिती पूर्व नृपति, ते बाता प्रते ताम ॥ दे नदे मुजने कहो, नाति है।

ताम तिम जाम ॥ ॥॥

॥ इतास होम ॥॥ (योगिष्पी मनमानी ए देहाी)

तव बोषी बाना सुकुमावा, करी ताज घुंग्ट सुविकाषोरे।। कामिनी मन मानी।।

शारा प्रमानपारी, सम तनमा बेहे नुम वस्ती रे।। कामिनी मन मानी।।

शारा प्रमानपारी, तस तनमा धुं है तुम वस्ती रे।। काणा निम्मी का ताने है।

शिक विया भरपाती, तस तनमा है है तुम वस्ती रे।। काणा। नाम सरका मुज ताते है।

दीधे, मुज पतन घणों तेष कीधो रे।। काणा। तातजी मुजने खंदे संपं, चाल्या जचवट रें

वाद सीरे।। काणाश।। वैविभयोग प्रवह्ष प्रात्मों, एक फत्या क्षेत्र तव वाग्यो रे।।काण।।

हसो होरे। ।कारणारशा राष्णी कद्वे तब बुक्त ए केहना, हूँ नाम न जायुं एहना रे ।कारणा है । । एहना फत्त कहो पिप कुष खावे, मुज मनमें ब्रचरिज बावे रे ।कारणारशानिसुषी घटक । वही पक्षियमें, को ईन्म शुं कहें ने एहने रे ।कारणा मुजबरी पिषा वोक्सूं नरहेवाये, ए इंड के ह बचन ते किम सहेवाये रे ।।कारणारधा। ईम कही निज मस्तक ब्रास्फाद, ग्रही । । ह बचन ते किम सहेवाये रे ।।कारणारधा। इम कही निज मस्तक ब्रास्फाद, ग्रही ।। ह बचन तिकावे रे ।।कारणारधा। पाइन वे हे गेयक नाखे, मन हांक किही निहास है ।। ह कारणारधा। पत्ताकाव बोरा वीषाती, आज न जाये खस्का ॥ पुनरिष घटवी करीहा है । ह पर, रिष्य नरहू ए ब्रवस्क ।।रा। नूप ब्रवहात सुषी मन कोर्यो, इंखे बचन ब्रमारो दो है । ह पर, रिष्य नरहू ए ब्रवस्क ।।रा। नूप ब्रवहात सुषी मन कोर्यो, इंखे बचन ब्रमारो दो है । एमें रे ।कारणा में दीवावती नाम ब्रारियो, एपे खस्का नाम नदोप्योरे ।कारणारहा। है । ब्रास्पार ने रे ।कारणा सुखबी चुन्दारी ।कारणारधा। पूर्वरेर तुण खुढ़ करी बेटो, पिषा चिता कि

है। पर, पियान एडू भी पोरे । किया। में खीसावती ताल भी मनपी जान बखे नहीं जेहते, शु की के कहा हव तहत. मुस्मी, ते नघता सुज्यी मुक्मी रे । काणाशि पूर्वपरे तृषा ग्रह करी बठा, 100000 मूस्मी, ते नघता सुज्या मुक्मी रे । काणाशि अप सुज्यों, तव पैकप्रिय ड ज पांवे रे 11 कि मुस्मी, ते नघता पोरे । शिलाणा क्यांत्र कारी जब झब्य मुख्यी सुपरे सीवी रे । काणा संस्था स

1 गी मूर्डींगत धयो, पहोत्या जम म ॥ तब तेष्टनी स्त्री ततुजने, ह ॥ 5 ॥ खाट सिहित एहने तुरं के पैनाल १ समान ग्रीममी है। तातून ग्राम 'कसेनो होवे, परगृह जोजन रागी रे ॥कणाश्या वेवनायो विगेन में है। युद्धे एरगृह जोजन रागी रे ॥क्या ने मुक्ते ग्राम में स्वा निकार में मुक्ते हो । युद्धे ग्राम में स्व निकार मुक्ते हो । युद्धे मुक्ते ग्राम में स्व निकार मान्य के के स्ति मान्य में हैं, स्तिये तर जाने रे ॥क्या कर को के काजे, तो विषम्प्रत्य भावे रे ॥ वान वेता हो हो जो तानकाय, मस्तक पीत थावे हे ॥क्या रा ॥ वेता में वात में नाय हो । वान वेता हो हो हो । यो मान्य में स्व की हिकार हो रे ॥ क्ष्ये ।। रह । यो साम मिने की हिकार वार्य करों, मधुकरी मधु सचे जो ।। मार्डिनीक्स ॥ क्या क्या निमक्ष हो हिकार हो । सहिता हो से मान्य में स्व की हिकार, इम हि विनय जाये अन्या म से वार्य हो ।। ।। जावारी-जुन । की विरो कायो स्वा के से मार्डी हो हो हो हो करों मधने से सचे वेता हो हो हो हो हो हो हो से क्या हो हो साम्य हो हो मधने हो से चित्र वार्य हो से चित्र वार्य हो से चित्र हो ।। रा वार्य हो से मधने लेम विरो हो हो हो हो हो हा हो हा ।। ।। पारियप्रहर्षा दिक्ष कोई कामें हम मुक्त से चे

॥ हात १५ मी ॥ (गोरडी गुणांनेती ए देशी) होते पर्वक हे द्वारेन रे सुरीजन, चीटा विचे चंनाव ॥ पूरव पुष्प फियो ॥१ ॥ ए भाक इं चपाने नेवो तिहारे सुरीजन, जोवे बास गोपात ॥ पूरव पुष्प फितो ॥१ ॥ ए भाक शे पी ॥ साटवे पिष्प सेवे नाहि रे सुण, मुतक्कतणो तेह जाषा ॥पूणा दीजे बन्ने दूरधी रे सुण, सुंदर खाट सुनाय ॥पूणाशा स्वर सापीने मूतज्यो रे सुण, दीघो हेई "दाम ॥पूणा शे वनहावी घेर आयोगोरे सुण, पर्वक घत्रे जाम ॥गुणाशा क्रमज तब तियो तिहारे सुण, है। सु०, जुज़फा बया सुप्रकार ॥पूणांथा। रतन अम्मुसिक नीसंख्या रे सु०, खाटधकी तिथि है वार ॥पूणा गताठ कोडी विनारनों रे सु०, इरख्यों तव घनसार ॥पूणाइ॥ सुतने ये हे सु है को एहना रे सु०, जाग्यतथों वब चूर ॥पूणा पग पग पामे संपदा रे सु०, पुरमत्थे में । हैं हमा तिषिवार ॥ए॥ प्रेतवने जव ते गया, तव तेदनो रखवाला। कलद करी पर्यंकते, ॥ हैं केई चाटनो चंताल ॥ १०॥ हतवा लाग्या तास ॥पूणां मृतक खाटपी पामकें रे सुण, वाम प्रमुख द्वविलात ॥पूण ॥४॥ खाट मही ग्रहमे यता रे सुण, ठवकावे घनतार ॥पूणा ततक्षण ईसने कंपवा रे सात ग्राया प्रवास अग्रापी

ह कहे चचन क्रमंद ॥पूण॥ १५॥ ॥ दोहा ॥ पंचाचार बिचारघर, परियुत बहु परिवार ॥ क्रिया कुझन विया बहु । स. रुज्ञचार्य गुणवार ॥१॥ चार साबु ते गष्टमें, सुविवेकी सुविख्यात ॥ दानादिक जिन पर्ममें, होप्तनीक साक्षात ॥१॥ वधुदम मुनिवर प्रवम, क्रानतरों मेंनार ॥ पटवर्शन ना हाग्सने, जाये सकस विचार ॥३॥ वादलिष्ध्यी विविध्य परे, जीत्या ताक्षिक जो र ॥ जितकाह्यी जिनहासने, विरुद बहे कवि मोर ॥४॥ प्रत्राकराख्य बीजो नखो, त पत्तीमें शिरदार ॥ मासखमषाने पारषो, श्रविष्ठिन्न व्यवद्वार ॥॥॥ कनकावत्ती रत्नावत्ती, यज्ञावत्ती विचित्र ॥ सिंद्रनीन्नीबित तप प्रमुख, श्राराषे सुपवित्र ॥६॥ त्रीजो तोमित्त

नाम मुनि, निमिनशासनो जाषा ॥ काषवयं वेता निपुषा, श्रुतकानी सुप्रमाषा ॥ ॥॥ ॥ साक्षिक नामे मुनिवक, क्रियाषात्र श्लीव गाय ॥ चोषो चिहुं गति टाबवा, पाले प्रवचन मात ॥।।। बारे साधु क्षिरोमाषी, रतवप जंजार ॥ पैचाश्रव हरे करे, निर्मान निरदंका र ॥ ए॥ गुष देखीने जन सक्त्य, करे सेवा सतकार ॥ मान कान मुनिवर प्रते, साथे

॥ द्वात १६ मी ॥ (श्री जिसदाासन जग जगजानी म नेत्री) ्रुरा क्सान |१५| विविध प्रकार ॥ १० ॥ |१५|

॥ दोहा ॥ दंदीजनना मुख बकी, मुखि बिरुवाबदी सार ॥ वमधमीया रेपे करी, रुज्ञचार्प तिथाबार ॥ १॥ मावाकी ते सामुने, देवी तो सही वर ॥ पिथा मछर्घ्री इस्ने, कोप चस्चो नरपूर ॥ १॥ वंधुदन ऊरखो षयो, देखी गुरु अपमान ॥ सैघे पिथा ही प्रधान ॥१॥ ए श्राकथा ॥ पंचाश्यव पूरा करे हे, मिष्ण्यात्व श्रुति राग ॥ श्रन्भमेच श्रजमेथना हे, नरमेयादिक याग ॥नण॥१॥ दान दीये "वाढव प्रते हे, जायीने गुरु जोग । तिल तैलादिक प्रकन्यका हे, बबधादिक हुन योग ॥नण॥॥ जैनतयो हेपी घथो हे, ॥ हाख १७ मी ॥ (ईन्तर झावा झावसी रे, ईन्तर वाढम झाख ए देही) एड्वे साकेतनपनो रे, कपपास विस्थात ॥ नृप हिंसक डे झित घषो रे, झासत्य बचन झबबात ॥ नोरेसर, पापी माडी प्रधात ॥ नरक तशो ए निवान, नोरेसर पापी मा नाषूने दो छति डाख ॥ परदेशी राजा परें रे, पापतासो करे पोप ।ानणाधा। साकितमपुर परठयो रे, उपतरों करी साधु ॥ नीसाना मुनि मृग कद्या रे, विचरे सदा निरावाय ॥ नगाए॥ रुज्ञवार्ये ते अन्यवारे, सानक्यो ते जिषकार ॥ तव सीमिल मुनि वोलियारे ब्राचार्यनो, मग्नर लग्नो श्रसमान ॥१॥

ा के अनुमित थी एवं सार ानणाशा गुरु षाकाची बावीपा रे, साकेतनपुर मिदि ।। गुसपणे मेघी घरे रे, पंबेत्या बतिवि गुक्ता विमान ।। गुमपणे विमान परि रे, जूपे जुवन उने विमान ।। विमान में से से से पंबेत्या बतिवि गुक्ता विमान ।। तामित्र मंत्री आगावे रे, जुवापा ते किम ।। तामित्र मंत्री आगावे रे, जुवापा ते किम ।। तामित्र मंत्री आगावे रे, जुवापा ते किम ।। तामित्र मंत्री अगावे रे, जुवापा ते किम ।। तामित्र मंत्री के बतात ।। तप के मिर तजी रे, जीव्यो ते साकात ।। तप के पारि र जोप्यो ते साकात ।। तप के पार ।। तामि समय वृप्य मिर र विश्वापत ते बाप ।। वेखी वृप विस्तप के पार ।। तामि समय वृप्य मिरे रे, विश्वापत ते बाप ।। वेखी वृप विस्तप के बाप ।। विस्तप वाख वाख मान मर्वन की थो रे, वेसिन शास्त्री रे, विद्या ते ।। विश्वाप रे अग्वीप रे, की विस्त साम्य ।। विस्ताप ते के करी रे, की विस्त साम्य के साम्य रे आवीपो रे, विस्ताप ।। विस्ताप के साम्य स्ताप ।। विस्ताप के साम्य स्ताप ।। विस्ताप के साम्य स्ताप ।। विस्ताप के साम स्ताप साम ।। विस्ताप ।। विस्ताप ।। विस्ताप साम ।। विस्ताप ।। विस्ताप ।। विस्ताप साम ।। विस्ताप ।

गर्न स्पूलेपुकः प्रत्ययः ॥१॥ 'ताबार्षः–हार्षा वाषो जाहो हे, तेम हता पण ते झक् वश होप हे, महे शुं हार्षा नेटह्न अकृश हे १ दीवो घजनाने तते अघत नांग पा माटे मुं हाणी जेटहु अकूत है ? दीशे षणवाले नते अवार नारा पा 11 जेटही अंपार है ? बजब करीने हाणाएता एवा पर्नतो पड़े है, न्तरत्व हथाएला एवा पर्वतो पडे छे विहोप सामस्यी होय, तेज बलवान ॥१॥ वान कब्यडुम रासनी रे, प्र त्रीस विसास ॥ नय ॥ धाः ॥ यहिन 100 इति श्री घष्तातिज्ञञ्चरित्रेगाकृतप्रबंघेदानकद्वपुनास्थेपघमशाखाकपषत्रहााद । रच्यो रे, जिनविजये रत्रमोष्ड्रासः समातम् ॥१॥ अस्मिनोष्ड्राते डाल ॥१७॥ वज्जवहे करीने ह्याएता पूक्ते करी रे, जहेरो र माहि नन्नोमधी रे, हितविजय बुषराय ॥ सनर षणे कद्भात ॥ वन्नकुमर ाणाय हे माटे महोटाप्यानी ॥ नरसरम्भ। १६ ।

| मत, मणमु ।वन्याव। हा ॥ १ ॥ वान कद्यनुम रासमो, षण वीजो छष्हास ॥ वरावहा मुतवात्वयी, सुणी सकस सुवितास ॥१॥ ययज घन्नकुमर तणा, त्रिएये ते नितमेव ॥ करे पद्मानी सेव ॥१॥ जोजाई जगते करी, घरे सदा क्षिर आया॥ करे, जाग्यबंदे सुप्रमापा ॥४॥ स्वजनादिक पोद्धे सदा, दिये बंब स्बों र पुष्प कमाणा।, सह कोई बूरे ॥तुणाशा मिके ते पबहवाने, माययां तेयी ठछाहे ॥ तुणाशा नाम नेयांत्रिक मिछि सि नृपने, ने निवास निय ट घरीने मदीया । तुणा मृप सत्कार वहींने ते पिण, मति बत्कपें नदीया ।। तुणाशा मीकापति जवनिषिमें मामति, यमभूरे पद्दीत्यो स्वामी ॥तुण। ने माटे ए पीत सेना (बीस साम्यो रे करणी ए देज्री) पहगणपुर पासे एक दिवसे, जतसिष जवने पूरे ॥ तुमे देखो हे ने जगमाहै गवापी ॥मुमेणा मवश्य मान्या पवने प्रेखां, देखे राहु हं ए माकरा। ॥ ते प्रवहणानी पति परलोके, पहोत्यो जतानिधि माहै। सास्था य सारब्या १ ते वहायमी पणी ध पराणमा रहेतो माल वने मान ॥ मात तात तेवा करे, यत्रो बुद्धि निषान ॥ए॥ ॥ बाल १ ली ॥ सपण सक्त जी जी करे, इ तासतपा खपरोषयी,

नेत्रवारा मार्थ, वाहरु आश्व वाह्ना, प्रवस्ता तेषा वेचा ॥ तुणा सवण जन्मा ति है हो स्वारा अपनादिक स्थान महास्था, प्रवस्ता तेषा वेचा । तुणा सवण जन्म ति है हो स्वारा अपनादिक स्थान । तुणा सवण कुन वेसी नुप चिते, परवेशे ह हो सोची ॥ तुणा ते माटे ए प्रवस्य मार्थी, पूत्रों टे धिई सीची ॥ तुणा ता तव च्य वहारी सथता, तेहीने ईम आये ॥ तुणा तहे । तुणा सहे । तुणा स्था । तुणा ए ॥ ते ब्यवहारी समग्र मिस्या जिहा, मन्ने पिण सिंहा मार्च ॥ तुणा स्था । तुणा स्था । तुणा ए ॥ ते ब्यवहारी तमग्र मिस्या जिहा, मन्ने पिण सिंहा मार्च ॥ तुणा स्था । तुणा वायक जाणी सवण क्ष्यक्र ते, मन्ने सिंह वे ॥ विणा तायो ने । तुणा स्था मिर्गित मन्ने। तिज्ञा । तुणा स्था सिंह मार्गित मन्ने । तिज्ञा । तुणा स्था मिर्गित मन्ने। तिज्ञा । तुणा स्था मिर्गित मार्गित । तुणा स्था मिर्गित सार्व । तुणा । वाया में मिर्गित मन्नो, तेजमन्दी मन्दे । । तुणा प्राप मिर्गित सहित । । तुणा । वाया में मिर्गित सार्व । तुणा । वाया ती, लीजे कहूं शिर नामी ॥तु॰॥४॥ बात सुषीने नरपति ततकाप, प्रमुवित मनमें प्रने॥तु॰॥ नयाधिक पतमान बद्दीने, निज निज थानक जावे ॥तु॰॥ ५॥ योनपात्र गोवावरी माहे, बाहरू थाणे वारू ॥तु॰॥ नागर नांखीने जबकी, ठेवे केईक तारू॥

प नहाय. रे गोटाबरी नहींबों क बासखी ? करिनायां १ कस्तरी १ ताँग ध पण्न

हैं। ये यखायी ॥तुमेण।१॥॥ ॥ योदा ॥ सूपे जाग्याविक सिच सिंव आपे सिंत सन्मान ॥ नगर लोक जी हैं। यो युद्धि विकाल ॥१॥ सामताविक सिच सिंव आपे सिंत सन्मान ॥ नगर लोक जी हैं। जी करे, सूप विषे बहुमान ॥१॥ एक विवस वर्गात्मा, क्ष्म कार असवार ॥ परिद्वत यह परिवारयु, स्रोव निज प्राणार ॥१॥ नाटक विविस प्रकारना, मागल ह्य गय पाटा। यह परिवारयु, स्रोव निज प्राणार ॥१॥ नाटक विविस प्रकारना, मागल ह्य गय पाटा। यह परिवारयु, स्रोव निज प्राणार ॥१॥ भातुल क्ष्मि वेख्ल प्रवास मा तन तात ॥ विष्य त्रिष्ये फाखा ख्या, व्याना अप्रजात ॥५॥ ॥ वाल ३ जी ॥ (सनेही वहावा, लाग्यो नेह निवाहो ए देही) हवे धनवतावि विवारे, घषसुमरथी रोश ववारे ॥ सनेही त्यारे, ए ड ख केम खमीजे ॥ कहो केहने हवंती वीजे रे, सण। ए भनुज खयो अविकारी, एसे अपमनी संगति वारी रे ।सणाश। एतो कूड कपट बहु राखे, तियो सहु को रुडो जाखे रे ।।सण। एपे कूड करी घन मेट्यो, जिहा तिहापी कीवो जेलो रे ।।सणाश। जोयो सार्थपने उस कीयो, तिहामी एपे घन बहु लीवो रे ।।सण। बसी होडे घेटो तहाज्यो, तिहापी पिए

ार, यादा, य ्रात्ता संयात्रिक सन्मान सद्दिन, निज निज धानक जावे ॥तुणा ॥॥ योनपात्र माहे, माहे, याद्रक प्राप्ये बारु ॥तुणा नाप्तीने जसकेंंदे, ठेले फेईक तारु ॥ े सीजे कई किर नामी ॥तुरु॥ ४॥ वात झुषीने नरपति नतकृषा, प्रमुषित मनमें

4 agtor i marael artut en urumb of aftermet a zeaft a nie

॥ छपजातिचुनम् ॥ न्यम् दि हाग्सा न विज्ञंतिया, न्योपु विनेषु कुतः प्रपंचः ॥ गैत व्यमन्यम् विज्ञायोन्, पूर्णां मही सुंदर्ग सुंदर्गि ॥१॥ नावार्षः-ने वृष्टनी कृगस्त ना | हवे वभी विचारे, कहे कजह ते कीण वधारे रे ।सिण। जिहा वधव चिन डा:ख पावे, तेह हो कीने वहदावे रे ।सिण।ए॥ चिन नात्या साजा नवि षाये, सह ग्रास्ते पिया कहे गी गई क्षेप थने जेनी मांतियो जागेजी होष,त्या आध्यप हो करतो ? मन जुदा पया, त्या परंच होो करवो ? खषांत काइ पण न कर्जु एवे समये तो माबा पुरुषे बीजे ठेकाषी जु कारण के, एच्ची विहात्त पडी ठे भने मनोहर स्वी जेवी ठे ॥१॥ वेहााटने पैसित मिरता च, वारागना राजसना प्रवेदाः॥ भनेक हात्सानि विलोक्पतानि, चातूर्यं सूक्षा नि प्रवति पच ॥१॥ प्रावार्यः-वेहााटन करबुं, पैक्तितनी मित्राई करबी, गणिकानी घन मणा।१॥ रखे इ ख एक्ने कोई याये, मुजयी अप्रीति जयाये रे ।सणा ईम जिंती ष माये हैं । सरा। छनम नर तेईज जाये, तव विचरे समय प्रमाये है ॥ सरा।। १०॥ यत हरण करवानी चतुराई जाएावी, राज्यतत्तामा प्रवेश करवो धने षनेक शास्त्रोतुं भव ताग्य परीक्षा करिये रे ।ासणा घुजबल परतक करीजे, तिम नव नय देश देखीजे रे।। त्रोकन करवु, त पाच कारण चतुराईना मूल है ॥ १॥ तेबन्नणी परवेशे

नित ज्रथे, ममकुमर गुज्र जात ॥था। जो घन घमे तुम गते, दीघो ए षतमान ॥ तो में पिया यखशो तुने, जीगवो जीम प्रघान ॥७॥ तन हासिक हार्पित पर्ड, निधि मगव्यो जि

यो सावधान, मप्प रात्रे क्षीष प्रयाषा रे ॥सणा १ ॥ शुक्त सबस तब धाते, मालव ज E तव पैचनी सेव ॥ १३॥ मध्यान समय अव

IRTणार्था तर गीतव त्ती, एक वींज नप्पा

मान्य सुवात वैव न मासक

E

. म कर माजन विमा. का अवसम क्तियी, झाझ दाल पृत गोल ॥१॥ THE STATE OF गयति परे निज अपक्रमे

त्क व इम कह। हत स्पर्धा E,

व तम पूष्प ममाण सुप्रकाका ॥ भ 🛚

> प् निवान ।

STATE OF

तुम भाग्यध नपकति कर् 9 माबीपी ७ एजा

ं अयव्या HINEU

पप्रकृमर

H. K चात ॥ पि

गमन क

व म

तित त्रणे, वमकुमर शुन्न जात ॥शा जो धन घमे गुम प्रते, दी बो ए सरमान ॥ तो में हैं जिए ज वस्तो होने, त्रोगको जोग प्रधान ॥१॥ तक बाखिक बार्पित घर्ड, सिंध प्रगद्यो जि हैं ज जम ॥ बार्गु तिण थानके ज्ञवे, धमपुर नामे गाम ॥१॥ छपम नर बाच्या पकी, पा है में कहि बिह्मान ॥ बार्गु तिण थानके ज्ञवे, धमपुर नामे गामा हाथा। अपना मर बाच्या पकी, पा है जनम जण संतमान, सिवादिष्टि कुष्यह सीजह ॥ जह मेठिगिरिव बार्ग, तिण्यमिष क वानम जनतो संतम् पण कृषित सीलह ॥ जह मेठिगिरिव बार्ग, तिण्यमिष क वानम जनतो संतम् पण कृषित पड्णेन बाल्या त्यां पण सुवाद्या पासे है, है तेम छन्म जनतो संतम् पण कृषित पड्णेन बाल्यो जाय हे ॥ सुगुष नर ॥ जोवे देश हो हो वह वहकुमर तिहा धकी हे बाल्ये, भी बाल्यो जाय हे ॥ सुगुष नर ॥ जोवे देश विदेशान हे बाल, कैतुक भति सुख्या है ॥ सुगुष नर, पुष्पे मनवंदित मिसे हे बाल है ॥ ।।। ए भाक्यी ॥ पुष्पे संयस संयोग हे ॥ सुगुष मर, साविष्य करे हे बाल, पुष्पे अवंदित ज्ञान है ॥ सुगा पुष्पे सुर साविष्य करे हे बाल है ॥ सुगा प्राच मा के हिन्द नाल है हातुण। अपन जाबू करमवा है हात्व, वेब मुख्ये सुर हात्व है। ।। साव म है ।। ।। साव राजादनी हे साव, वेद साव, वेद हात्व, वेद हात्व, वेद हात्व, वेद हात्व, वेद हात्व, वेद साव है। ।। साव न है

मार कदवरे ॥सुणापुण॥धा। सोपारी भ्रीफत षणारे बाध, ताड अशोक अखोह है। मुणा जार भवार तथा तिकारे साख, 'सोढ़े वृक्ष सजीव रे ॥सुणापुणापा। जारे के केवढारे साख, महेक केतवि फूस रे!।सुणा बोलासिरी वास्वेवधीर साख, सेवंत्री के जास्वरे ।सुणापुणाशा। ममरो मक्ज मोगरी रे बाल, क्ष्यंपर करेथा। खास रे ।शुण। कुषाण नाम अकोतना रे बाल, मावती मसुख ।धुवास रे ।सुण।पुण।शा। सिर्ध महोटा के तिला भाते होला, मुक्तामिनी क्च जेम रे ।शुण। शिखर सोढ़े तस ऊपरे रे ला के सक्चें से अनुषेरे आते, महिण।पुण।शा। शिखर सोढ़े तस ऊपरे रे ला के विकास के रे ।शुण।पुण।ण। स्वायार परे नीसरी रे साल, तटपी तोय के व्यार रे ।।सुण। जाणे सुगताफल तथा रे बाल, मूनामिनी चर हार रे ।।सुण। एग। एवं विवास हो रे आल, मोर चकोर मराख रे ।।सुण।पण। विकास विकास करे रे बाल, मोर चकोर मराख रे ।।सुण।पण विकास विकास करे रे बाल, मोर चकोर मराख रे ।।सुण।पण विकास विकास करे रे बाल, मोर चकोर मराख रे ।।सुण।पण। लास, वक्ती पीकिः(विद्याद्य रे ।ातुण।ापुण।१ण। जपकर्त्रे मुनि षात्रयया रे साद्य, उंडवर्षे एकत्र रे ।ासुण। तपसी तप विषि साचवे रे जात्त्र, श्रासन करे फल पत्र रे।।ासुण।।पुण।११।। तवर तयां स्यानक घयां रे बाल, युखिंद प्रमुख केई पक्ष रे ॥सुण। नर रुपे पद्यु सारि

क्ष तकर तथा स्थानक घथा र बाल, गुलब ममुख कर पके र ।।सुण। नर रुप पठ्ठ सार १ हा रे बाल, शाखा मृग प्रत्यक्ष रे ।।सुण|पुण।१ श। गज टोला वनमें जतारे बाल, छ १ न्यूबे केई वुक्त रे ।सुण। वानर यूप 'बिक्षेपधी रे बाल, मिंद्द्य तथा तिद्य तक्त रे ।।सुक

१ समिये १ जियाजाती १ कीयता ध मध्य दीगे एक मावतो, नीर पूरेची बाम ॥ षत्रे ग्रष्ट्यी श्रंब निरखते, रक्षराहि। छाड़ी तामााहै। रद्ध भग्ना हाथ काविने, दीयो बंबूक प्राक्ष ॥ देखो नैमिन हारखना, पान्यो फद्ध पर तक्ष ॥॥॥ जनुक्रमे ग्रद्धेच्यो तिहाँ, वैध्याचव नैगराज ॥ ग्रख्यपनी आज्यो तुरत, साह्यिस स्वर्गपुरी समी रे रे, तव जखमें प नृपने पाय । रे, छत्तम गुम । ताजा १ ॥ दास ध थी ॥ (चित्रोदा राजारे ए देहा) ब्रह्मपनी निरसेरे, मनमाद्गी परसेरे ॥ शुंदीसे बेरे, नासित्री ॥ नोहा रे ॥ नहि तेवने सीतासम जाषी रे॥ सिरे, मन केरी सिते रे॥ घोडा रे, पायक दस , मुन्नटे करी 무단 वकी रे ॥६॥ एक दिन नृप ।।१।। संका पिषा साजी रे, ही रे ।।१।। कहे करी पूरी ने ती रे ।।३॥ चंकप्रयोत राजा हनारे ॥ था। गन रषते ६ केरे ॥ ए॥ शिवादेवी राष तक ॥ ।।।। मनुकमे छ। कमां शिरताञ्ज ॥ ।।।।

हैं। मंत्रवी रे ॥णा परहो वजहावे रे, नृष निज मन जावे रे ॥ करे अति वण्डावे रे, ए छद् है। पोषणा रे ॥ए॥ सरोवर "बाखेट रे, जे 5 भति ठेटे रे ॥ ते भंजने वीटे रे, नेवो पासपी है। ॥१॥ मुण तत बन आपे रे, मंत्री पद याणे रे॥ पक्ष तेहनो ज्यापे रे, बिस्त्रेस नखोरे ॥११॥ सुष्पो णमकुमारे रे, मनमें तव थारे रे ॥ एव बात विचारे रे, विफव न मोजीए रे ॥११॥ एक वेरी है सर के सोबावे रे ॥ आति हर्ष न मावे रे, नुपने निरख है ता रे ॥१॥ एक वेरी है सिंबी रे, तर मुखमें सीबी रे ॥ यतने करी बाबी रे, सैर पा वे ज्य फिलोरे ॥१४॥ रख्नुत्री वीटाणो रे, वेखी तव राशो रे ॥ बुस्त्रिंत वखाएयो रे, पाप्पो मंत्रवी रे ॥११॥ पुरजन सह हरस्ता रे, हुपी बुद्ध परिहार है। तस पुष्प आ । पषमा रहेता पंत्रते वामे ह हा हो लिखने हतानती एक कोरेदी भी हेबरती आदी देशने पत्त्व पास्त्यो । र एसावनी पाछे वेसीने राह्मावनी । में डेको बांच्यों ३ पढी बीमों डेको सिवेधा वीरकाना डेका साथे , इस डेक सने दौरदानो अहो क सरीवरनी वर्ष्ट्र राखे एक दुसना मूझे दी री आनी, मयम दुसना मू

त्यारे राजाये भाग्यु

. नरन जबा सच्या पृष्टो नेगा शायमाँ छोष्ट पष्रकुमर बेटो .

ा जात ए मी। (चरणाती बामुक्त रण चढे ए देशी)

।। जात ए मी। (चरणाती बामुक्त रण चढे ए देशी)

क्रिक्त प्राप्त मन नित्रे, ए पिजन ईवा केम आवे रे।। पन संपद वर्षमें घणी, ए हैं

क्रिरे।। गुण्यने प्रमें ।। जुड़े जुड़े पुण्य पटंतरों।।।।। क्षांकांकाी।। पुष्पे वंशित सी हैं

क्रिरे।। गुण्यने प्रमी मिले, पुष्पे राजा रीजे रे।जुणाणा जर्ड जोड़े ह्वे एदने,इम हैं

क्रिरे।। गुण्यने प्रमी मिले, पुष्पे राजा रीजे रे।जुणाणा जर्ड जोड़े ह्वे एदने,इम हैं

क्रिरे।। गुण्यने प्रमी मिले हिन्दाी, विनये ही हा नमावे रे।जुणा शा शा छो है

क्रिरे।। जात कहे नात नहुज हुणो, तुमें नात्या अप मुकी रे।। बदमी तुम सोषे है

क्रिरे।। तुणाणा तर कहे नात नहुज हुणो, तुमें नात्या अप मुकी रे।। बदमी तुम सोषे है

क्रिरे।। तुण किश्मी देगाडी, तुमें नात्या के तुम ताया, व्यंत रिखे अमें आवृत्या, है

प्रमें रोहन की रे। जोर न चाते के त्यंत्री, सेव से केंद्रेने दीजे रे।।जुणाणा जोजारे मुरिनीम ॥ ने रिम संजनिये ब्दा, एश्ती बीसे बीन ॥धा बीसे के तह सारिता, ते पिण क्त क्श्वण ॥ माहरी माने गाऊषी, ब्राव्यो इहा ए न्याय ॥ए॥ क्रिक क्श्वण ॥ माहरी माने गाऊषी, ब्राव्यो हहा ए न्याय ॥ए॥

तुम मक्तियी, गुणतीयी डारा पावेरे ॥ परिजन पिए मिली सामटा, तुम गुर्दि पूर्वण भत्तो र गर्मातम १ सारी ७ मारी भारतम मनी

बर नूचा नारा होते हैं। सेवक संवेधी बता, ते पिया थर गया नारा होते. जखबटे मयो, जूमीथी छेई गया यक्त है।। जागयदीनातों ततक्षेत्रों, फुछ हीटी परतक्ष रै जनगा? आ गैक्यातत अनले कत्वा, तव रहेवानों नहीं सागों है।। कुक्तिसिंबल घई नी ॥बुणारशा श्रेष्टपतन अनवे कत्या, तव रहेवानो नहीं सागो रे ॥ कुर्क्तातिवय यह नी तत्या, जिम रुपि छपने वैरागो रे ॥बुणारशा पतरा॥ दिवस पद्मयो ही बुरो, जागि छ के तो जाग ॥ पायी छपर प्रष्टर तो, सोने संबगी षाण ॥१॥ फिरता वेश विवेशमें, छ इस्नो अरया बहुता रे॥ झीत तापादिक मति पया, ते पिया तक्य तहता रे ॥ बुणारथा। र्वेश भाष्या तुमने मिट्या, इवे श्रम सह डाख जाग्यां रे ॥ कुसदीपक तुम पेखता, सु छत तया दिन जाग्या रे ॥जुणा?शा जार्हे पिषा भावी मिट्या, कपटपी देत छपाई रे॥ ानुणारहा। संयक्ष संयय हुमा साम काईक बाकी रह्यो हतो, मावे रे ।।जुण।णा एक्षे नृप राणी तर्षो, हार वृग्तीये झीबो रे ।। पक्षत्रपषे घन वेचवा कार्वे दीघो रे ।।जुण। ए।। वात ब्रानी ते नवि रही, राजाये जव जाषी रे ।। मिषक मार्नेद यकी तिहा, जावी मिली ज्योजाई रे

॥ वोहा ॥ यजावाहे नेहज परी, तात प्रमुख तिथिवार ॥ गुप्तप्षेथी वेश्ने, मा

हुवे रे, मुझ हुती निरधार ॥ प्रकृत्मर मन बीर बरी तिहार ॥ शार काक्सी ॥ फई निर्मा हु के रे, मुझ हुती निरधार ॥ प्रकृत्मर मन बीर बरी तिहार ॥ शार काक्सी ॥ फई निर्मा हु हो का निर्मा रे, मुक्त क्या है हो जा वाणार है हो जुर पोले मार्वा रे, आक्रियों कार्यों दे हो निर्मा कार्या है हो जुर पाले मार्वायों रे, जोवे नार तिवेहा ॥ वाणार ॥ पृष्टे हे हा मुप्त है हो जुर पाले मार्वायों रे, जन्म बरी हु पाले हियान जन्मों है, ए उनम पाले हा ॥ पृष्टे हा हो हो हो । पंच विषय षनकुमर मन घीर घरी तिहारे, चिंतवे विच मफार ॥ इहा रहेता जारुने डःख

मुज मानाघणाणायरशामाया बाका करेय, तास निराक्ष न मूकीणानिपटजनाकारेया, । सु रीसे नागरा।१॥ तुज गुण रूप जावाय बीवाष्यक्षी रे, ई मोधी सप्रकासा।विनती

| ह| लादि शमनं स्वर्णपश्चीम्द ॥ शा जावार्यं — प्रापियोते कृति, दुलनो छद्य करतार्तं, कृ | शीरेने ज्यय कर पविज्ञता करनारं, विष्टिं भागे भयने हरनारं, ज्ञीति भने ज्ञावने | शीरेने ज्यय कर पविज्ञता करनारं, प्राप्ता करनारं, प्राप्ता करेल चितामणिग्रत सरादुं, वा | शीरा करित भागे मिक्स मिना छप्तांने कृपन करनारं तेमज स्वर्ग पने मेक श्राप्तारं के | शीरा। इरिंग श्राप्त मिन्स मिनारमं, रोग क्षोप नंभरता। मस मूत्रादिकश्ची नरी, प्रश्चित वहे | शिरा। इरिंग श्राप्त मम होय । शा प्रता । श्राप्त सम जोय। घन मद संच्या त्री | सिन्दे क्षाम्ततः। निर्मे समीहतो सन्तु, कर्ने ज्यो चर्मराह ॥ श्राप्त मिन करिताणि, वैच्नो | शिराप करिया माना दुमे, महिमात महता। पुत्र विज्ञति सान्ती, परे वर्मो स्था होता। | श्राप्त करिया साता दुमे, महिमात महता। पुत्र विज्ञति सान्ती, परे इसी) | सोहत्मणा। ते सान्ती देवे हो के, धनकुमार तथा। । होवि रत्त परनना हो के, अति (हे क्षेत्र मिलाणा । तुम हत्यत्वा हो के, क्षेत्र कुम हि

शिनम गए। केम थाती

तमे मने उपकार करची, वे गुणत्रधी

टक घ्रतमा करी,न्याय मार्ग करें शुद्धा भनय घ्यात टांबे तुरत, मुनय तेज भविरुद्ध ॥॥॥ े श्रीयक राजा थ समूर क माझने माने क पकसा र राजानु बहुमान रत

पत ॥ उनम भाप गुणे जखा, मध्यम तात गुणेण ॥ अवम सुष्या मातुम गुथे, अव ॥

मामम मुसरेण ॥१॥ नावार्थ —गेताता गुण्यी ग्रंबर्शाय ने सत्ताना गुण्यो अर्थात ।

सिर्माय में मध्यम, माताना गुण्यी ग्रंबर्शाय ने अवम भने सत्ताना गुण्यो अर्थात ।

सत्माय नामयी ग्रंबर्शाय ने भवममा पण अवम जाण्यो ॥१॥ इम चिती होधात ।

सर्मण महोदां धाम जो, काम चलायो सप्तोम पावे इम सप्ते वकी रे हो ॥ विद्या ।

सर्मण पहोदां धाम जो, काम चलायो सप्तोम पावे इम सप्ते वकी रे हो ॥ विद्या ।

स्वे मुरमणि, पूरी जे जे चिते काज जो, ते रे ततकाले था भावे प्रदेशे हो ॥ १॥ ॥

स्वे मुरमणि, पूरी जे जे चिते काज जो, ते रे ततकाले था भावे प्रदेशे हो ॥ १॥ ॥

स्वे मुरमणि, पूरी होण्ड, आयारे बुक जो, शाये रे तिम आवे सिनी सिंच सप्ता रे हो ॥ १॥ ॥

शा महात्मा तुर्द्ये, सुक्त, करता साती खोढ जो, तेहने रे मनवित कहो हिन्दासी ।

सिने रे हो ॥ एह वीजे ग्रह्मा सातमी बाल स्ताल जो, कहे जिन रंगे पुणे वित्त सिने कहो हो ॥ शोषा पुने सिने रे हो ॥ शोषा ।

सिने रे हो ॥ एह वीजे ग्रह्मार अर्थि होरस, तेहाल्या चूरेव ॥ आदर मेर्ड आति घर्षो, पुने ।

॥ शोषा ॥ होहा ॥ कुसुमपास क्रेंचे होरस, तेहाल्या चूरेव ॥ आदर मेर्ड आति घर्षो, पुने ।

सिने रे हो ॥ होहम ॥ कुसुमपास क्रेंचे होरस, तेहाल्या चूरेव ॥ आदर मेर्ड आति घर्षो, पुने ।

॥ ग्रेदा ॥ कुतुमपात क्रेंटे तुरत, तेहान्या सूदेव ॥ आदर पेर्ड मति घसो, पूटे

॥ रोदा ॥ एइने माखवनेरा पति, चेम्पयोतन जूप ॥ कोइक नयरा (निरोष्यी, तुष क्र त पड़ चूप ॥१॥ वजहाबी रायनेर तव, सीया निकाणे घाव ॥ सामत सिव में न्या ता पया, तेडाव्या ग्रमराव ॥१॥ होप ग्रम रवाजवी, महा वीर मांते घीर ॥ सस्स वाद्य ग्रम प्रापकताया, कीय नहींसे पार ॥ यद ग्राप प्रापा, वडवानीया वजीर ॥ शा ह्य ग्रम रव्य पायकतायो, कीय नहींसे पार ॥ व्याचेते मूंड घणहती, 'शेप करे सजकार ॥शा शा शिव शा शिह्म प्राप स्थाप ॥ व्यंतर पिया चिन चमकिया, भा हो। वही विराव ॥ ॥ भा भा मांच मांचर मांचर ॥ स्थाप ॥ व्यंतर पिया वड़ से विराव ॥ शा मांचर वहींसे । स्थाप ॥ व्यंतर पिया तव, वेटो फूफ्प काज ॥ राजगुर्द भाव्यो तुरस, मचोतान न राजा।॥ का हात १० मी ॥ (काया प्राप प्राप

ंचय करता नहीं डब्जेन, ए बब बुद्ध खीयों ॥वेणाशा एयं समामे वाज गमावी, जिप मूप ताये (युद्ध) करिने ॥ सुगट ज्ञापी तीवा मन कीयों, मान मधिक मन वरिने ॥ देण हैं। ।।।।। कोशंबी पण काज न तीच्यों, सुगावतीयी एहनो ॥ उन्धायनी गढ पाढी एता, देगे कराव्यों तेहनो ॥ वेणाशा। वर्ग्सी काजे उद्ध्यन भगवाद, युद्ध करता जायों ॥ मम वात्ती मि पति नाम एहवों, नित्वट माही वालायों ॥ वेणाशा धुष्टुमगरशु घय मचायों, मगारव तीने हेते ॥ तिहा पण इरम गमावी पापी, परपयों जाग्य सेकेते ॥वेणाशा युद्ध करता हैं। जाने क्षेत्र पाप, तक्स प्रचा तीवाये ॥ युद्ध कत्या विष्ण ज्ञ्य पाप तो, युद्ध न कीजे मा विष्णाता। वातः॥ भवतुतुत्रवृत्तम् ॥ युद्धित्य न योद्ध्य, कि युन्तिहितिः होरे ॥ युद्धर विजयतंत्रवह्न प्रचा प्रका करा ।। १ ॥ ज्ञावायं — रुत्धवंद पपा युद्ध न करा जोहर, तो । ती कारण क, पूरी पामे ताकर ने पण कृष्टि नयी † जयराजा | श्रेष्ट करण, त्यों पण पूर्ण पोनाता लाम भागते होते । भं भं श्रुष्टी एसी भूगति साथ, विषय सुख नोत्तवानी ताजन | अति कोट पासी नासी, ते हत्योंथी कोशणी नगरीनो कोट करा | श्रेष्ट कारणी नासी, वे हत्योंथी कोशणी नगरीनो कोट करा | श्रेष्ट कारणी नासी, वे हत्योंथी कोशणी नगरीनो कोट करा है के जात्ये पने जीतमा ते कार करण नवी कार छमर नामे हम्मुर राजा माथे मुगट खंबा माटे यु-गानिक राजानी राणी छने चंबाराजानी युवो पर पे प घमप्योतने पीतानी छक्कियमी नगरीनों के

क्षय, ब्राप्ति ब्राधिक मन यावे ॥ वेणा १६॥ यामिनीये निज प्राण यदीने, चेनप्रयोतन नाठो ॥ मरसा तणा उत्तयवी मनि ब्रीजो. कीघो तिहा मन कागे।॥ वेणार णा पतः-पारवाता वाएवढे युक् करवानी तो वातज शी १ कारए के, युक्तढे जीतनो संदेह ठे

॥ वपजातिकृषम्,॥ विषक्षवर्गेषा यसाधिकेन, स्चर्य विवायो विद्यपा न कार्यः ॥ नद्यापि |

<u>उ</u>ध्यो बनाबी बिगतशु, राजग्रुद्दी नगरीमें आविरे ॥ छपवनमें रेरा धापीया, श्रति छन्नति श्र पिश्री फावेरे ॥ हुणाशा प्रत्युपे पुष्पादिक मही, सर्के सेली नगरीमा जावे रे ॥ फिरती फिरे ने देगलरे, सह श्रावक्रने मन जावेरे ॥ तुणाए॥ एक दिन नप सैत्यात्तके **धा**ने 售 मन जावेरे ॥तुणाए॥ एक दिन न्य चैत्यात्त्रे

लाको मननी होंग्ने रे ॥तुणारणा पिष्टते पैथनो पूरी नवि पढे, तव सापंप बस्री इम जाखे रे ॥ एक बाट सुगम वीजी भन्ने, शिवपुर जावा जे मन राखे रे ॥तुणारहा। भ्र णुत्रतने जार भन्य प्रदी, बानादिक रक्षक संगे रे ॥ तप बिनपादि भन्ने चढी, पहींचे तिष्पुर मन सेने रे ॥तुणा १८॥ तब ते मारण मनमें वशो, ते पैथे भने हवे चांतु रे ॥ पंपवाहक सादुने पूजरा, शिव नगरने नजरे जाखे रे ॥तुणारणा तिहां जह वसवातुं म न भने, सुख्ताम नेपी थिर जाणी रे ॥ इन्पारमी बीजा तम्बहातनी, गस जिनविच ये बहाणी रे ॥तुमेणारणा ॥ दोहा ॥ षत्रय कहे साहमिणी सुष्णे, तुमे कही ज वात ॥ जाव षकी सवि मनुनवी, ए तुमची भवियात ॥१॥ इप यक्की इव वाखवो, नाम ठामने काम ॥ तव वोढ़े ते पद्मभी, अन्त्रयने करी प्रणाम ॥१॥ चैपाये प्राह्मिं रहुं, वहुं सदा जिन झाप्ति।। सत्य वचन सुख्य कहुं, सहुं अप्यात्म प्रमाण ॥१॥ सैसारिकना कार्यपी, धर्मकार्यधी, संस्कार्यधी, प्रमेकार्यधी, रंग।। राखेत्ते कुर्म कार्यमी, प्रावदान सुप् रंग।। राखेत्ते कुर्म कार्याः।। सिज्यच्च यात्राः। सामार्याः सम राखेत्रे प्राह्म।। सिज्यच्च यात्राः। मापार्

मचन सुखी तेपीबार, इरहतो चजयकुमार ॥ मोजागी खाझ ॥ घन्य पृष्ठु इ आदिका जी ॥ जीवाजीवादिक जाप्य, शिर वद्दे झी जिन झापा ।सोण। जिनमतनी ए होन्तादिका जी ॥१॥ एइ तो छचस पाज. ॥इन्हे किने ए क्रीजाविका जी ॥१॥ एइ तो डचम पात्र, एइनो निर्मेख गात्र।।त्तोण। पात्रा घड़ सुज ने जड़ी जी ॥ एइनी जीक डवार, कीजे विविष प्रकार ।त्तोण। सारपणापी वसी वली जी ॥३॥ इम् ब्राजीची चित्र, बोक्यो बज्जय पवित्र ।त्तोण। ब्रम घर तुमे पावन क धरा भी ॥१॥ ब्राज हे ती प्रॉपवास, सबि साहमिषीने सास ॥सीण॥ नोजन हुठ किम कीजीए जी ॥ सुवि समन्यो विक्तमांति, वक्त धनोषम त्याहि ॥सोण॥ वाज पृत्यूपे वीजिषे जी ॥॥। बीजे विन सुप्रकार, जिल करे मनुदार ॥सी०॥ षानपकुमर जोजन तथीजी शिष्टाम् ॥ मनत जल थार याचक, नृप खल ंगपाद मंद्रतयाति ॥ घन्यो सो यस्स (अनमपाति शुने वर्षे ॥ १ ॥ जावार्षं –धनने षाप्रि, पाष्पी, चीर, याचक, राजा, र शे होको झने गोष्ठीयो हरख करी जाय हे माटे तेज पुरुषने घन्य डेके, जेनुं घन जि प्रामाशिक शुन्न कार्यने विरे वपराय हे ॥ १ ॥ रो झी ॥ तव बोखी ततखेव, धर्मबाषव तुम हेव ॥सोण॥ वचन म्रामार्फ चिन

गः मन्युड्यः भारत्या अपन्य स्तिति करेवा कपटमा पारमे, ब्रह्मा पण जा है।

पा, राजकन्या निपेवते ॥१॥ जावार्ष सार्गि रिते करेवा कपटमा पारमे, ब्रह्मा पण जा है।

पा क्रकता नवी जेम केलीए विच्युत्रै कर करी राजकन्या जीगवी तेम ॥१॥ ध्रामंत्रे के व्यक्ता नवीं के क्षांत्र ।। स्तिया प्रतिया प्रतिया प्रतिया ।। पिरक्रा जीगवा निपंत्र सार्ग क्षांत्र विचार करार ।। सोग्।। मिराने मन मोवर्श्च जी ॥१ पत्ती विचार प्रतिवार, प्रतिकाम ।। प्रतिया ।। मिराने मन मोवर्श्च जी ॥१ पत्ती ताम, चार्चीने क सिने काम ।। सोगि।। मिराने सार्वेश्च पकी जी ॥ पोद्दिती बक्कियती तेद, नुपने कहे सि सने ह ।। सोगि।। अपने प्रतिया ।। अपने क्षांत्री सार्वेश्च सि ॥ अपन्यवृक्षमरने ताम, ने वादी तिषा वाम सि व पत्ता ।।।।। सोगि स्तारी सिक्सि सार्वेश सि व वाम ॥ तव ते कपटी वेहा, अन्तर्य धरकी सुविक्षेष ।स्तोण॥ प्रीति करे बचने घर्षी जी ॥ ए॥ यत ॥ झतुषुत्रवृत्म् ॥ सुप्रयुक्तस्य वृत्तस्य, बह्याप्यंतंन गष्ठति ॥ कोलिको विभु रूपे ।स्तेण। गणिका गृहची ब्रावरे जी।।शा तवं प्रयोत नरेवा, अजय यकी सुविदोप ।स्तेण। इतस्पादिक विधि वहु करे जी ॥ बुक्तियों जनार, देखी अजयकुमार ।स्तेण। चेनप्रयों त पिक्ष हित वरे जी ॥१ण। षज्यय कहें सुख राय, करी ब्रावर जपाय ।स्तेण। घरम् त ा थो ग्व मुज कको जी ॥ एक षषटतो काज, तुजने न सागी साज ॥सोण॥ नीति बचन है। पिण, नीव पक्षों जी ॥ एक षषटतों काज, तुजने न सागी साज ॥सोण॥ जिन में तिमें में के क्ये जी ॥ गुज मातीने में हुं, बहुं वर्ष के क्येट कोगर ।सोण॥ जिन में सी।। शा का महोते सुविचार, मातीन आगार ॥तोण॥ अन्यय रहे आगदनें जी ॥ राज महो।। एक राजगृह नगर, नृष् अधिक दरवार ॥ सेचन गज मक्षी थयो, है। विक्रा सिक्र तिगर ॥१॥ बालानव्यन उपाउने, पढ़े नोप्त ॥ में जी ॥ १३॥ है। है। हो साथा नायावटी फिडिया ममुख, देखि दिशे लिंग ॥ मं निहेशी ते हैं। हो आगल उज्जाय ॥ शा नार सहस अपमय निवद, मोही साक्ष्य तामा। है। है। से अगल उज्जाय ॥ ॥ नाय निवद, मोही साक्ष्य तामा। है। नगर-सोक पाइल थयो, गजपी अतिह अनेव ॥॥। ॥ (कोई शुर सुनटने नाखों रे ए देही) है। ताब १३ मी ॥ (कोई शुर सुनटने नाखों रे ए देही) में सावों रे ॥ तो सुन पाते रे ॥ तो हो यावार । है। निम्मा पम तिमाते रे ॥ डोव्यन बच्ची पिया गूरो, प्र के भूप नप्त मुमार रे ॥ डोव्यन चच्ची पिया गूरो, प्र के भूप नप्त मुमा स्मार रावते सावों रे ॥ नोइ वाय उपाय कि

सतायोरे ॥१॥ ए ब्राक्षणी ॥ तेह ब्रयति मोहे विराजे, प्रणेतन गृह गाजे रे ॥ अवर न के इच्च नगरे कोठ एहते, जे ए कोठ संकट जाजे रे ॥ तुणाशा मुनट सकत सेना थह वि इच्च किए प्राच के ए कोठ संकट जाजे रे ॥ तुणाशा मुनट सकत सेना थह वि इच्च किए प्राच में अप में अप में अप गण काने रे ॥ विष्युता पहने विर हुता ते, नासीने घर जाने रे ॥ दे मुज्या।॥ एवं सुचीने धक्तुमर तद, मुत्मिष्टिने पर दे तुमेणा।॥ एवं सुचीने धक्तुमर तद, मुत्मिष्टिने पर दे नामें रे ॥ गण काममी विचान बच्ची, गज सकत्मी बाह्म माने रे ॥ तुणाणा फर्नी गज कामुच करी तड़पर, ज्ञवनी वेटो दु मेरे ॥ मस्तक्मों बाह्म के गजने, आपमो माना व भने रे ॥ तुणाशा बाप्यों माने स्वस्य प्राप्ते । महिला व प्राप्ते हिला हो। ति हो ॥ प्राप्ते । मर को ए हेव वे कोइक, इम मनमें सबू परवे रे ॥ तुणाशा वाम ने भने रे ॥ तुणाशा साम विचान वेवराने रे ॥ त्राच माने सामे सुम्पर विचान स्वस्य कामों हो वाम समस्य दीवा सन्तमता, वीचा गज कर्य वाजी रे ॥ प्रतिक्र हे । स्वाचे मानमें दे सीवा जना ह राजी रे ॥ त्राच काम विचान राजी रे ॥ त्राच काम वाजी रे ॥ स्वसिक हो जाप वाज्यने र । स्वाचे मानोदे, सीवा जनार राजी रे ॥ त्राच याचक्यने हो को भे भार हो हो से ने माने र ने से लें काम सामें से सामे स्वर सीव संतोष्य, वाच वाज्यने र । से सामे हो से से हो स्वाचे मानोदे, सीवा जनार हाजी रे ॥ त्राचक्यने हो को भे भार हाजी र ॥ स्वाच महार सामें स्वर स्वाच सामें स्वर्ध स्वीच सामें सामें

तव घन्ना सुतमे प्रही, राजगृहीमें वास हो ।सुंदरा। वसीमें इत्याविक धरे, करें सि हा कार्य क्रेम्पास हो ।सुवर ॥ पुष्यतया भले साजली ॥१॥ ए क्रांकणी ॥ युष्य विना

हा कार्य अरुवास हो ।सुवर ॥ पुण्यतथा फल सानामा ॥१॥ ९ कान्यरा ॥ ५८०० । १८ निव सिद्धि हो।सुव। पुण्य अधिक जगमें कह्यों, पुण्ययकी नव नीवि हो। ।सुंगाशा संगम वारे सामटा, वावरुआ वन माहि हो ॥सुंग। एक विवस पायस तथों, नीजन ६ पुणासिक नये गोषास १ वक्षा गमे झीने व्यो भएण पास्पो १ पन्नी करें हे

न ताम हो मिनुण। श्राखे त कूक्तका, नोजन वेसा गर्तुणापुणाएण रुवन मीत्री, पूठे ते सुप्रवी गिक्षेतो, तो पायतत्त्री द्यी तात हो ॥हैण दीन हो ॥सुण। देखी पादोक्षयो मीदी सिवि बाखनी, मागे ए पैरमात्र हो ॥है देखे त्याहि हो ।ासुंगा पुणांशा माताछी हठ माढने, मागे पायता । ज्यापु नाखती, माता थोदे आम हो ।ासुंगा पुणाशा न मिले पूता हो ।ासुंगा तैलादिक पिया बोहियो, तो पायतती झी तात हो । कर यालक हठे, माता तव डाज दीन हो ।ासुंगा देखी पाढोशयो

कहीए ॥ ईड्तमें नी परे चाले ॥ उम जाम, ताम बत्रीश विविष प्रकार, पच षयेरी ॥॥ पूजा परिषय क्षिम, जिनमंदिर विरचेरी ॥ कुछदेव्याने ताम, चंदनपी च रचेरी ॥॥। क्ष्म डघमण एम, कुच मर्याद कियेरी ॥ पोखी नात पवित्र, नाम विचा री दियोरी ॥६॥ सुपनमें शाखिनो केत्र, दीवो श्रात सुखकारी॥तिये करी शाखिनइ कु मार, नाम दियो निरघारी ॥३॥ क्षेप फमर कुमार, के रति पति सम कहीए ॥ ईन्द्रत्ये 乍 विविघ प्रकार विद्याञ्यास करावे। ्रीते पक, जन्म चुन्ने मी ॥ (रामचङ्के वागमें, वाणे मार। रक्षारत र सुर्गा, जज्ञ इपे वेरेरी ॥ ग्रेव सुषी तव वात, त्रष्ठव श्रविक क् जन्मके बानेरा ॥ जेरी ज्याब घन घोर, श्रवर जागि ॥३॥ याचकने दिये दान, देलित तेद तयोरी ॥ तु कुलमभन पुत्र, मुखयी री ॥धा पूजा परिष्ठ वित्त जिल्लामेट िल्ले तिम तस सथवी आवे ॥१ण। योवन षाञ्चो : गुन सम, परणावे सुविचारी ॥११॥ तेष्ट्रो भतुहार, धवर न इस युग बहीए ॥छ। मुदर वार्षी सार, गज गति क ममक उदे पाय, मात पिता मन महावे ॥ए।।शब्स प्रयासे ताम, पठित संत्रारे लेम, तिम तस सवबी आवे ॥१ण। योवन भावयो मसन्न ॥ पूर्ण मास पद्दोते पके, जनम्यो पुत्र त्र रहमी। चे पुत्र में ॥१॥ पैच शब्द वाजित्र, घर | री ॥१॥ सोहव गावे मीत, हे मार, नाम 🖟

मकार, पंच

विष्ण मुस्स विसमें ॥ जाणे न रात ने दीह्न, सराग्र सरिग्रा नहीं फरने ॥११॥ भहामें विष्ण में प्रवस्मी गुण्यमी ॥१३॥ के अवित्रा के साजियक कार, अन्य मंत्रि विष्य ताम ॥ न्यायाविक ज्यवद्गर ॥ वे वे साजियक नाम, अन्य मंत्रि विष्य ताम ॥ न्यायाविक ज्यवद्गर ॥ वे वे साजियक नाम, अन्य मंत्रि विष्य ताम ॥ न्यायाविक ज्यवद्गर ॥ विष्ण, प्यु अने निप्ताम ॥१॥ विकार चं विष्ण, प्यु अने निप्ताम ॥१॥ विकार चं विष्ण, प्यु अने निप्ताम ॥१॥ विकार चं विकार ॥॥ विकार विक

एक दीष्ठ म्रते जी, देखोते मुज गात्र । स्तिण। धा ते वन जक खेई घएोजी, कीयों में कियों में कियों ते मुज गात्र । सिंग पूरव पूपप पराजाासिण। ए। ज्याज पुक धन के से तेयते जी, यो मुज लीजन तेह ।। हीस इव करवी नहीं जी, परवों पूरव नह । स्तिण। हा। इव कहें गीजन कहें गीजन कि जी मोजन कि मोजन मोजन कि म क जूपात ॥ पुरमें पढ़ब वजावियो जी, सानखजी चत्रसाख ॥सोण॥१३॥ काछो ने ज गहो रज्यो जी, तेहतो जे करे न्याय ॥ गौजञ्जीठ पुत्री तयो जी, पाषिप्रहृषा तस षाय

🌣 एक ट्यांसक्षात्मा काणो

इति त्रीषत्रशादिचरिनेप्राकृतप्रवदेशनकब्यङ्मास्ये दितीयहाासारूपषत्रमादबुद्धिरा कमवर्षनोनाम हितीयोद्धास समासम् ॥ षास्मिन्नोष्ड्ासे ॥ बाख १७॥

ा मेहा ॥ श्री जिनमुफ प्रवासु मुद्दा, वमध्यान धार (धार ॥ भूग, कब्ब दुन ११ कि में मूच त्रीजो छव्दास ॥१॥ वर्षत्रेयु मन मोदयी, श्रुतदेवी मुपसाय ॥ श्रोताजन है । कि मित्रामें आति छन्म सुखव्यय ॥१॥ व्हांने एक सिन्धान ॥ श्रोताजन । है । कि मित्रामें आति छन्म सुखव्यय ॥१॥ व्हांने एक दिन ब्यावता, ही छा जित्रामें । विश्व पित्रामें । विश्व विश्व प्रकार ॥ श्राय कि वर्षित हो । विश्व विश्व प्रकार ॥ श्राय विश्व प्रकार ॥ श्राय विश्व प्रकार ॥ श्राय विश्व वर्षित हो । विश्व वर्षित हो । व्हांने हो । वहां । वहांने हो । वहांने । वहांने हो । वहा ॥ मोहा ॥ श्री जिनमुरु प्रयम् भुवा, धमध्यान भार लाल ॥ भाग कट्याडुम रा

प्रपान, घन ड़ीयो तिषे सकब निवान ॥ घरतीनो घन घरती गड्यो, शेप रखो ते भ्र नवे घड्यो ॥शा शेपाक्षेप ग्रही ग्रह सार, बद्धयनीथी करिय जुहार ॥ चाङ्या पंपे पञ्च धाक्ता, मारामाही तरकर मख्या ॥॥। बूटी शीघ खमने तिहा, फिरता फिरता था व्या इदा ॥ करिये पेट पूर्पा ग्रांति ड़ाखे, तुन विरहे नवि वेठा सुखे ॥५॥ तुन मिलने देवे थयो संतोप, पान्या हवे भ्रमे पूर्या पेप ॥ तु अम कुल मंन्या कुल बीव, कुल पा घर पायो तुं नीव ॥६॥ तब घन्नो मन चिने इतो, जारयोव्य एहतो नहि तहों ॥ प्रष्ठ त पर्या एखो तुं नीव ॥६॥ तब घन्नो मन चिने इतो, जारयोव्य एहतो नहि तियो ॥ प्रष्ठ त पर्या पातो ति वाय, क्खान्य-या थकी सुखवाय ॥॥। करि शोन्ता सहुनी तिया।॥। धुष्ठुमपाल गीन्य सुन्य, देवपाल महियाल वेर्चे ॥ भामततेन महितेन व्याल, पु

मासपात गुषणात पवित्र, सेमकरण नयकरण सुचिन ॥१०॥ देवकरण कुत्रकरण स् वास, विजयकरण गजकरण गोवास ॥ जिनरक्षित जिनदम जयंत, देवदन फ्रांपदन महत ॥११॥ सागरचव सिवचद सुदुंद, गोविंद माघव घवल काणद ॥ शंख सुनंद सु जग जयकोन, वीरसेन मद्दसेन देवसेन ॥११॥ इत्यादिक माल्या छुत्र रीत, घन्नाइगाइ

वदन महिनिहा रहे, जाग्यदीनमा दीह ।शि। ते देखी घनवाहजी, चिंते चिन विद्युप ।। एहने हितकारण जयी, हुं जास्त्रा परदेश ।।थ।। यत ।। आयोषुकम् ।। दिसप्त्रिविहचरि य, जाणिकारतस्त्रपञ्ज्यपिसेसी ।। अप्पार्णे च किराक्क, हिंतक्क तेण पुहविए ।।ए।।

्र भ, आाणक्रमक्रपाडक्रमावसमा ॥ अप्पाणं च किरक्क, हिंगक्कर तेण पुद्दविए ॥१॥ भ प्रावार्भ-परदेश जवायी विविध प्रकारना चरित्र देखवामा आवे हे, सक्कन अने डक्के नमा शु फर हे ? ते जाणवामा चाने हे अने आत्माती कत्वना पाय हे, ते मोटे एज्बीमा ध वायतुं जोहए ॥१॥ ए यदमी ए यह प्रमुख, विवसी एइ निर्मेत ॥ सुख संयोग लाह श प्रमे, जो देशे जगवत ॥१॥ इम निषयं कि विचपी, यहि चितामणी पास ॥ एका है की हत मन करी, वाल्या कियो प्रयास ॥६॥ राजाने पूर्वपो नहीं, विरापे स्त्रीने तेम ॥ श न्युर प्रमुख सिव सरवण्ने, नाग कचुकी जेम ॥३॥ गढ़ीने चाल्यो चतुर, यामिनिये है तिण ताल ॥ वहा विदेश विलोकतो, नवन्व कौतुक ख्यात ॥६॥

। पुष्ये सयत पदारच सीऊे, पुष्य हो कोहाँची नगरी, घतुक्रमे तिहा ॥ बाव १ जी ॥ (मगषदेशको राज राजेसर ए देशी) पत्रोगाद् ते पुष्प प्रयोगे, चिंतामणी संयोगे ॥ चिंतित कार्ष सक्स सार्वतो, जा म्पवते सुख नोगेरे ॥ निषया, युष्पतया फल पेखो

प्रबंत जग देखोरे ।ानणा युणारा। ए भाकपा ॥ वश्रदेशे

हैं। कपे बावे ॥ स्थानक सुबर खेडे धनषी, सुखमय काल गमावे रे ॥जणा पुण।शा राय सं हैं। तानिक् तिदानो राजा, सहस्रानिकनो वृदो ॥ उत्रीक्ष राज्यमुषे करी पूरा, त्यागी मास आखेटो रे ॥जणापुणाशा यतः ॥आयोद्यम् ॥ शतदमनाश्वतपालय-माश्रितनरएां च

रे, महद्राक्तिण मणि सोदे ॥ वेदी परंपर सबु को पूजे, स्कृत की ।। मान वेद्रने मणि ग्रु पुणाणा पिण तेदनो ग्रुण कोच न जाणे, तव नृपे परिक्षक तेव्या ।। मान वेद्रने मणि ग्रु प्र पूठे, पिण कोद न कहें ठेव्यारे ।जाणापुणाश्या तव नृपे नगरमां परह वजायो, सुण जो सक्स लोकाइ ॥ जे ए मणिनो ग्रुण देखादे, मस्यय मण्ट बनाइ रे ।जाणापुणाश्या को सक्स लोकाइ ॥ जे ए मणिनो ग्रुण देखादे, मस्यय मण्ट बनाइ रे ।जाणापुणाश्या तेहहने नृप जूठ्यो (से हर्षके, पांचदो ग्रुणनी जे डे पेटी, सीनाग्यमजदी सारी ॥ पर भवर प्रकार रे ।जाणापुणाश्या । वेदी ग्रुणनी जे डे पेटी, सीनाग्यमजदी सारी ॥ पर भवर प्रकार हे ।जाणापुणाश्या वेद्या ने ।जाणापुणाश्या सार्था वेद्या स्था सम्प्र याचे नृप तेहने रंगे, सणि परिक्षक जे विचारी रे ।जन्म शुणाश्या साम्स्यी पह्य बच्यो ते जाणी, धमावाहे ताम ॥ राजसानामा आव्यो वेदो, नृपंने करी मधाम रे ।जाणापुण ॥ ३॥ देखी नृप सचु वय्यी बोधे, रे वच' तेहनी नदाने। ॥ रख परिका करवा समर गुण दाखो ॥ वाच प बीजी प्रीजे जब्दाने, जिन केहे मन दृढ राह्योरे ।ज्ञापुण ॥ वोदा ॥ को धनकाष्ट नृपति सुणे, रव परिका वात ॥ हास्स सक्टन जोयां म डे, गुरु समीप सुविक्यात ॥ शा होरो मोती निवस्पणी, माणिक्य सरकत संच ॥ सूव रक्षना नेव ए, द्रास्ते बोध्या पंच ॥ । पुक्रराज वैद्रुधे तिम, विज्यने नोमेद ॥ प वार

भी घयरतमा, वाख्या हे शुन जेव ॥३॥ ए नव रक्षेने आश्रया, नव ग्रह हे निरचार ॥ फव | शिया वेखां हे तुरत, श्रेष्ट नेघ तिथा वार ॥था प्याराम रवि १ मौकिक कार्या, १ विज्ञम | शिया वेखां हे | जीम १ विख्यात ॥ युष्ट नेघ तिथा या । श्राप्त कार ॥था प्याराम प्रवि १ मौकिक कार्या, १ विज्ञम | श्रीप्त कार्यान । युष्ट मरफत ४ मुगु वर्ज ॥ विष्ट | विष्ट | निर्मा कार्या है । विश्व विष्ट | विष्ट निर्मा कार्य हो । विश्व विष्ट | विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विश्व विष्ट | विष्ट | विष्ट | विष्ट | विश्व विष्ट | विष्ट

जाविक पाट संपन्न ॥६॥ तेह रत्न सकत फक्ष भापे, खेरित डाख स्थानके पापे ॥ इवे मीक्तिक माठ प्रकारे, उत्पत्ति कदी षत्रुसारे ॥७॥ ठीपोदर १ गवने होशि १, मज्ञ ६ श नहु यद्य ॥ रद्राकरनो निष्पन्न, क्या नवि दीवो ॥ मणि दीवो षाजयो जाम, कछ खावा पखीए ताम ॥१ए॥ : स्वामी रतनते एह, प्रत्यक्त प्रताप **पवेद** ॥ याल पासे प्रमण खगे कीवो, कछ मुख सिंहये ॥ए॥रति छपरनो जेब् रद्ध, तेब्हना कीजे ज्ञातिक पाट संपन्न ॥६॥ तेब्ह रत्न सकल फड आपे,

ताम ॥१५॥ मुखो । कीवो, कख मात्र

हैं। कियो नवि बीधो ॥१६॥ तिम ए मिय जहनी पासे, वैरी गब इति ते नाते ॥ जूताबिक हैं। तहने नवि कोपे, एव मियाने कोप न सोपे ॥१७॥ सुष्धी राजा प्रत्यप पान्यो, मन हर स्वो जे हुने कामो ॥ घक्षाने ये सनमान, परस्यो ए बुद्धि निषान ॥१८॥ जोता भि हें स्वो जुर्गे जमार, पुत्रीनी पूर्ष्य पुन्यार ॥ त्रीजे कब्द्रांते सवार, अब जाते ॥ जोता विल हम हम गार ॥ १०॥ जाता विल हम से गार ॥ १०॥ ॥ १०॥ मार मार ॥ विल मार मार ॥ १०॥ मार मार ॥ विल मार मार मार विल मार ॥ विल मार ॥ विल मार ॥ विल मार मार मार मार विल मार ॥ विल मार मार विल मार ॥ विल मार विल मार ॥ विल मार ॥

ा बात थ थी ॥ (कष्ण सासीणी रेजाय ए देशी)
सकेताह जब नीसत्से जी, उंकी नारी प्रसंग ॥नारी जिएये ततक्ष्णे जी, नीव दे के स्वेति पुष्टे संगरे॥ प्रतिम, किहां गया भमने रे शोह ॥ इस्तीनी येसा नहीं जी, भावो है अवस्त संदेश रे ॥ प्रीतम, किहां गया भमने रे शोह ॥ इस्तीनी येसा नहीं जी, भावो है अस्ता में है से अभ्या प्र के स्वात में है से अभ्या प्र के तिया । तुम आधार बातेहरू जी, बीव जीवन निरधार रे ॥ग्रीणाश। मात पिताये तुम के प्रते जी, सौच्यां पंचनी साख ॥ केड न बोहूं जीवता जी, तिस्त्रय मन राख रे ॥प्री किहा के सो हो पित्रय प्रति के सावास ॥ में हो पित्रय प्रति हो सो जी। अपये सत्य आवास ॥ में हो पित्रय प्रति व सावास ॥ में हो दि होों व सी जी साब पास रे ॥ प्र हो दि होों व सी में महि हो सावार । आप पासे हो हो भावार हो हो है सम मंदिर हिवार हो सावार । आप पासे जी, भवार हो हो भवार हो । अपये सावार हो । इस सम मंदिर हिवार हो । सावार हो । सावार हो । इस सम मंदिर हो । सावार हो । इस सम मंदिर हो । सावार हो । सहावार । सावार हो । सावार हो । सावार हो । सहावार । सहावार । सहावार । सहावार । सहावार । सहावार । सावार हो । साव रस, खारंन्यो खायास ॥ण। शुन्न वेला झवसोकने, माब्यो कार्य महंत ॥ महेनतिया म हेनत करे, ग्रष्ठक पये झत्यत ॥ए॥ एक कर्प झवला मते, पुरुपने रोप हिनार ॥ नोजन चोला तेलयी, टेफ रोप व्यवदार ॥१ण। घन्ने सजगुद्दी पकी, नीसरियो तिषिवार ॥ चे चे कारण् नीपन्यो, ते निमुषो षाधिकार ॥१॥

इम क्वेती रहती षक्की जी, ते त्रिपणे तिषिवार ॥ विरद् विद्याप करे घषा जी, कहेता नावे पार रे ॥प्रीशाशा क्षीजवती पिषा सांजदी जी, घरणी ढज्री ततस्वेव ॥ वारवार ए युननो जी, विरक्ष दिये का दैव रे ।ामीणाणा तु मुज भाषा लाकढी जी, कुत्रमंत्रसा कुत नाया ॥ पर ठपगारी परणदो जी, पैतृक छ खनो जाया रे ।ामीणाष्टा। वय पाकी हवे झ म तयी जी, रे किम मूकी रे जाया। बढपयामें तेवा तयो जी, फत्र झिषको कहिवाय रे

तुसन वेत्तों, वेतो ब्रह्माण जुककमाएं।। रचलायरिम पने, सालूरो हफ्ठ में लग्गो ।। शी जावां — वे त्तृम्हां आमा तारो कार पण वेप नथी, वेप तो अमारा पूर्व कर्मतील वे कमके, रतनी लाज एवं तुं मच्यों वर्तों, मारा ब्राथमा तो पश्रत्व बाल्यों।।।।। वीप कमके, रतनी लाज एवं तुं मच्यों वर्तों, मारा ब्राथमा ते पश्रत्व बाल्यों।।।।।। वीप नथीं हक्षा जुम त्यों जो वेस्तां जो, तो अम कोय न वार्या। तिक्कन कच्युं प्राप्त हे।।वेशाः(॥ अम अवराज जो वेस्तां जो, तो अम कोय ताया। तिक्कन कच्युं म कक्षा जो, जुक्या फल वेर जाय हे।।विशाः(॥ जता। सीच सक्कन क्ष्यं तम, अवराज ले आवाना कुक लेवा होप वे कमके, कोर मायास जो तेने, पचरी मारे हे, तो ते भावा ने कर्यों ते का कर्यों वेस्ता । अप्यें ते पे प्राप्ता जो तेने, एवरी मारे हे, तो ते भावा ने क्षां विश्वाय।। अप्यें तेप प्रमुखने जी, सिव विरतांत जायायो। पूताणा। शा। वाम वाम तुरि हो वेदका जो, मूक्या प्रेच्य अनेक ॥ पिण घत्राहाता तिहा जो, खनर न लावायों एक है।। कुमा वास प्रिक्य सिव पामी रह्या जी, वेसी पन्न विराप ॥ ब्री चे च्या प्रिक्य हो । क्षा जाम जमाइ उपर अधिक, ॥ वोप वास प्रिक्र ।। एक वास हो हो कर्या अपिक,

राम। हु वन पेरा कर कारण के, बाखें बगद वनना ग्रपर आधार राखनार उ कमक निर्वत प्रते निर्जीय एवं मच्छे, तेने विषे हुं कांड कर देखतो नयी अर्थात ने पाने धन होए, तेख रह मान आपेटे, परंतु कोड़ मडवानी पेटे निर्धनना सामु नोतुं नयी ॥३॥ होए, तेख रह मान आपेटे, परंतु कोड़ मडवानी पेटे निर्धनना सामु नोतुं नयी ॥३॥ हाप, ताथ तक भाग नाग भें, भें ।। (विषय्ति विद्यों)

का ब्रह्मिस वनसार दे, विषये वित्ते ।। इन्हा रहेवो जुगतो नहीं ए।। महोटाडो

का ब्रह्मिस वनसार दे, विषये वित्ते ।। इन्हा रहेवो जुगतो नहीं ए।। महोटाडो

का ब्रह्मिस का तक्ष्मिस मान्दी ए।। तिये करी ह्वे परदेश दे, पिन्ने पानदों।।

क्षित्री गयो। झान गह सिने मान्दी ए।। तिये करी ह्वे परदेश दे, पिन्ने पानदों।।

क्षित्री गयो। झान गह सिने मान्दी ए।। तिये करी हेवे पिन्ने पुत्रे ने हिन्दे हे

परदेश दे, समाशाह नयी।। गीति करीते खानदों ए।। नो मिनदो प्रमुपे, तो तहो इ

परदेश दे, समाशाह नयी।। गीति करीते खानदों ए।। नो मिनदो प्रमुपे, तो तहो इ

ह्या। तेही बहेसा मानदों पाधा सोमस्री कुतुमस्त्री दे, सुसराजा पन्नी। प्राप्ती में पी

पर गह ए।। छहे सुन्नज ताम दे, मान्द्र बोचन करती। विनय करती पन्नो ए।। सीने रहेवो सास

वनकोठरे, कार खानन नणी ॥ भाषे प्रवत आजां।वकाए ॥ स्वांन एक दिनार र, युग्म हि पुरुष प्रते ॥ तेय चोलारि बितवको ए ॥१ धा सुधी इरस्क्ये बनसार रे, सार उपाय ए।। क्षे तरुर माण करवा नणी ए ॥ दाल पांचमी एंढे रे, प्रीजा उच्हातनी ॥ कही जिनाि है बचे सोबानपारी ए ॥१ए॥

वर्ग रोप देवाच्या कर तथा ॥॥॥ सुरसुंदरिने कत कने मेही गयो, डीपहीने वनवासमें डाख बहुदो घयो ॥ प्रयावतीने कंत वियोग बयो वही, स्गावतीनों कह ते जायों के वनी ॥॥। मुपावतीनों कह ते जायों के वनी ॥॥। मुपावतीनों कह ते जायों के वनी ॥॥। मुपावतीनों कह वादी ॥॥। मुपावतीनों कह वादी है इ. ख कजना, नमेवासुंदरी तेम करी पति रजना ॥ मुप्यों सत्त कह वादी है स्वक्रियों तेम अनुव पीता सह ॥॥। बदनवाल विवाय गुषेषी वत्वायों पत्तक भी करवी सोचना ॥१०॥ देखों कर्मनी बात भावी वनी तारा वोचना, वेचायां पत्तक भी करवी सोचना ॥१०॥ देखों कर्मनी बात भावी वनी तारा वोचना, वेचायां पत्तक भी करवी सोचना ॥१०॥ देखों बुच नात मेता नवा सती, मुज वर्ग मता नवा सती, मुज वर्ग मता नवा सती, मुज वर्ग मता वात चात कर्म सहितों कर अनुभाव कर प्रकुती कर अक्ष्म अवायों में विवायों पता। सुवेयों तेवीभा ॥ मुख कृषीन करें पहुती कर प्रकुती ने अनुभाव विवेश विपतिमें दीन इन्हों मत्तकीन कहावे, मुख समो नहीं इन्हों मात मात इन पत्ति मात करवे। मुख कर्मा के प्रकृती मात करवे। मुख कर्मा के प्रकृती मात अवायों हो सात कर्मों सु

हैं। भुज नरेक मागी हुक्को लीगों ॥१३॥ भाषाक्रत्नी आहार निमिने विद्या करी, नव अत्य नगर वनाय मोदक विया फिरी फिरी ॥ सम्बोधर मास जाक्यों नयनावती, अत्य जनर वस्ते काल अकाज करे वली ॥१३॥ कर्मतेषों वहां प्राप्त एड क बहुवा सदे, में इसी गृह सुवनात निदार एड क बहें॥ नलेड विन्य विवेक विचार आचार के, मान मगन में से मक्त न धर्म विचार ए॥१था एड ना संग्री मान अवात मुखे , तिम बकी मान मिन मिन है विक्यात विट्यनता लेहे ॥ नोजाई पिछ भाषुमें भाषुमें पढ़ों, मुज रामा इछ साम हु सिक्या ॥ एकशान प्रसाम माजने काष्ट्रचंदा ॥३॥ नावार्थः—वस्त्र माथनि निक्य माथनी साम स्ति (सारी गायने) कि स्ति सारा माथने पछ विज्ञा पामें के कारण के, इराइ गायनी साम्ने (सारी गायने) कि स्वात पन्ने पीठ पर पत्त प्रीचे क्रकास बात को जिन ज्यवरी ॥१३॥

॥ विहा ॥ तात प्रते पूठे तुरत, घनणतिशाह सुजाल ॥ क्वण तुमे कोण प्रामयी, अधिवार ता तात पन्ने भि भुज नरंग मागी दूकडो वीयो ॥१३॥ षाषाढनूती ष्राहार निमिने विद्या करी, नव नर रूप वनाय मोदक विष्या फिरी फिरी ॥ राय यक्षीयर मास जरूयो नयनावदी,

करी झावेता ॥ तब बनतार खुवी पर्यो, नूरणी मुज इन्येका ॥॥॥॥॥॥॥॥॥ ॥ बताव १ मी। (सीता तो क्षे कही ए वेदी) ॥ बताव १ मी। (सीता तो क्षे कही ए वेदी) ॥ हव बीजे दिन बिते, आवे निदा बिते ग्रुमामी हो।। मुक्त फल एववा।। ए भा किया।। तेतावे दिन आपी, थनतार जपी शुन वापी हो।। मुका।। भा वेदानी कि तत्त क्यों। तेत जपों हो।। मुणा श्रीजे दिन तिम हैंव, धनपति सावे वरिटेन हैं हो।। हुण।शा वस मनेक प्रकाम हो।। मुणाशा। परे बुद्ध प्रते तेहावे, "अवतर उनमा प में सिरा हो।। माता प्रते तक्केब, दिने वर्ष वर्ष वह मुक्य हो।। मुणाशा। आतुने ही सिरा हो।। मुणाशा। आतुने ही सम्परियोमे, दिने सुंदर वस मुकामे हो।। मुणा। आतुनापा (पण आवे, साथ) तत्त मुजन पहिनाप हो।। मुणाशा। एक वीर अमूविक सार, आपे काताने तिथिवार हो।। मुण।।। एक वीर अमूविक सार, आपे काताने तिथिवार हो।। मुण।। भग कियो, एह सदी निरमार ॥१॥ पमोकाष जित जितवे, घन विषा लाजे एह ॥ तिये करी निज्ञ कुन गोपवे, तिषामें नहीं सिह ॥१॥ जगरवाइने कहे, नेतों नोसी इ. ॥ एषने घृत गुढ माम शुन, वेजो तुमे मिनिस् ॥धा। सर्वे 'नृत्यमां हृस् ए, थापे करी मावेश ॥ तब घनसार खुशी पयो, तृत्यों मुज इन्येश ॥॥॥

भि ॥ सिव परिकरने सतोषी, धनसार प्रते कहे पोषी हो ॥ सुणाहा। सुणो तुमे टो इन्ह स्र में जात, तुम गुण चम विच सुदात हो। । सुणा किदी वाते डंग्ही मत बाजो, ठी जोघर है। ते मगाजो हो।। सुणाशा ए श्रम घर हे सिव तुमचा, तुमे तात स्थानक टो चमचा हो। । सुणा तुम तेतु गरमी दीसे, जमे जाणीए विस्तावति हो।। सुणाशा तिषो 'तक प्र में हो । सुणाशा तिषो 'तक प्र में हो । सुणाशा तिषो 'तक प्र में हो । सुणाशा हियो कहें जो, 'ते हो जे कहें हो।। सुणा ए तुमे में विदे हें हो।। सुणा हम प्रति दिन खवर ने लवे, जे जोइए तेतसु हें वे हो।। सुणाश शा वर चावी हो।। सुणा हो । सुणा हो।। सुणा तिमच हो।। सुणा हो।। सुणा तिमच हो।। सुणा सिमच हो।। सुणा सिमच हो।। सुणा सिमच हो।। सुणा मान हो।। सुणा सिमच हो।। सुणा को।। सुणा के।। सुणा के।। सुणा के।। सुणा को।। सुणा को।। सुणा को।। सुणा का।। सुणा के।। सुणा का।। सुणा के।। सुणा सुणा के।। सुणा क

ण रहे सुखतंगे हो ॥ सुणा "दारपाव ममुखने जाख्यो, सह नेवकने पिपा बख्यों हो ॥ प्रणार पा हे वेट तिदां बनसार, कह वहु प्रते सक्वा विचार हो ॥ सुणा तुमें जान पनपति गेह, तक्षांकिक सावों से जेद दो ॥ सुणार वा तय ते वह निष्ठुणी वाणी, वाक कदे मनमा जायी हो ॥ सुण। भी ले मखाते गवायी, हाल सातमी जिन गुपाला पी हो ॥ सुण। शो भी ले मखाते ना साम विचार ता तमी जिन गुपाला । वेहा ॥ हवे ने जियपे वधु तिहा, सेवा आवे तक्षां साम वह विचार पा सिखी, नयन वहन करी वक्षा ॥ १॥ वोष्ट विचार का ता ता सिलाप्यमंत्र तिया, केता हो जे ना ॥ १॥ चावर देह भात वयो, भार गोरस सार ॥ कहे वाह ते भावने, नित्त भते मुज बागार ॥ शा ता ता सुकि पिप अति अवस, दिने ततलेव ॥ मावो ते निज्ञ स्पानके, साम्ये वेह वा ॥ ॥ ता सुसरो साम कदे वेदा प्राप प्रकार ॥ भावी ते निज्ञ स्पानके, नाम्ये वेह वा ॥ ॥ ति मुपाल मनोहार ॥ ॥ निमुणी सीजों ते जियों, वह सुणी साम वात ॥ निम प्रने पुष्ट बढ़ायी गयों विख्यात ॥ हा। वही तेह नी वहने तुमें, परसती परशह ॥ ते पिण वहाती परे, जाहो कोहक घट्ट ॥ ॥ विदमें तह वह ॥ वहा। विदमें विदमें वहने तुम्प सीण हो हो कोहक घट्ट ॥ ॥ विस्ते तह वह ॥ वहने तह वह ॥ वहने तहने तह वहने हो । वहने तहने तहने तहने हो । वहने हो । वह

की माटी हिंर बहे, रात्रे पढे चूपीज ॥ देखों देशाणी जाग्यथत, कंत विरह आति है पीठ ॥ ए ॥ सुणी सुनदा ते वचन, दाजी दिवमें दीन ॥ नयणेथी आच्च ऊरे, विर है ह व्याग स्वयतीन ॥ ए ॥ ह व्यथा सयसीन ॥ए॥

कमंबद बहा। कुमारमा चाक्नी पेठ बहााफ क्ष घढाना पेटमा कवजे रखायो, विस्तु द्वा प्रवतारयी नयंकर एवा महोटा संकटमा नखायो, ज़िव कायमां काचली लेघ्ने तिका मारो ३ थने सूर्य क्मेशा गगनेने विषे जेनावडे उमें छे; ते कर्मने नमस्कार पाठ ॥१॥ गीनकोठनी भंगवा रे, जहा वर खवतार ॥ षावव काजिकुमार छे रे, इंक्सो भ तुहार ॥वजाणा तातजी पूत्रना संक्षी रे, पूर बठित सोग ॥ वत्रीश वर्ष ध्वेने पुत्रने रे, ब्रापे बठित योग ।वजाए॥ तुज पति नामे माहरे रे, वे जनीर सुरंग ॥ वानी मानी ग्यानी नखारे, धरतो प्रीति घन्नंग ।वजाशाः श्री श्रीयुक्त मुत्र पुर्माम्त्री वि क्यात ॥ कुसुमणत तनया तिसी रे, कुसुमन्नी शुचि गात ।वगाः१॥ रे परपयो तिहा प्रेमपी रे, जनम गुपाने पात्र ॥ काता शिलोयो की हतारे रे, सुगुष सुरूप सुगात्र ॥ च ॥१शा कंयव वयण विशेष्यो रे, उंभी सवि परिवार ॥ एकाकी कोठ देशहे रे, पहोत्यो वे निरधार ॥ यणा १॥ ते जाते छक्षमी गई रे, सतीय परे ते साथ ॥ सुमराविक सवि डाख माहरे रे ॥३॥ ए माकषी ॥ यतः ॥ मार्वत्विकिटीतवृत्तम् ॥ अद्वापेनकुसात्विष्ठि यमितो ब्रह्मार्प्तानोदे, विसुर्पेनवद्गावतारगहनेहिमोमहासकटे ॥ रुचेपेनकपाष्रपाणि पुटकेनिक्ताटनकारितः, सूर्योद्यास्यतिनित्यमेवगाने तस्मैनमाकर्मेषे ॥१॥ जावाषः-जे

हैं नीतस्तारे, परदेगे विक्य भाष बावणार धा नीर बिना जिम कमितानी रे, सरोवरमें स्र काथ ॥ तिम बन हीन मतुष्यने रे, मान नहीं किय गया ॥ बणा १ ए॥ करवा ग्रद्भ खा काथ ॥ तिम बन हीन मतुष्यने रे, मान नहीं किय गया ॥ बणा १ ए॥ करवा ग्रद्भ खारा ॥ काश काण १ हा प्रत्या हिक्स किय कि कि न काय है। कुछ म कहा ने हो हु म तहा जाय के स्तार अपने कोने कोने कोने काथ ॥ १॥ जावार्षः – हु हु न कहा, हु हु न हि करवा को पोप ने भाने कोने कोने कोने काथ ॥ १॥ जावार्षः – हु हु न कहा, हु हु न हि करवा को पोप ने भाने कोने कोने कोने काथ ॥ १॥ जावार्षः – हु हु न करवा योग्य एवो पेटने को माट हु। न कहा भने होने करवा योग्य ने अपीतु आ इन्हें न स्व बन्य काश बनपतिहाद पटतिर रे, नोजन करते बात ॥ साजतीने चित्त चित्त हे, बन्य बन्य है। ॥ धा बनपतिहाद पटतिर रे, नोजन करते बात ॥ साजतीने चित्त चित्त हे, बन्य बन्य से आठमीर, कही जिनविज्य काल ॥ वाशाशः॥ ॥ वेहर ॥ कहे जिनविज्य काल ॥ वाशाशः॥ ॥ वेहर ।। कहे विने देनामिनी, है पति होणी दीन ॥ माग्य परे प्रायोहा विष्य, है। कियारीने इन्हें होता वहें ।। हे विका हो हो। इन्हें स्वारा पासे वाहीया, जीव करे हे वेह ॥ ३॥ यतः ॥ अनुष्टुच्हन्म ॥ ईप्रमाहा। म

दाराज्ञम, विपरीता दि शृबना ॥ पेनवद्मः प्रषावति, मुका स्तिष्टति पंपुवर् ॥ १ ॥ जावायः- व महाराजा। भा भावायः व महाराजा। भा भावायारपी साक्ष्य बहु तो द्वार छे केमके, ते साक्ष्यवंदे मने तेनाया घट्टा पराजा पागवानी पेठे वेसी रहे जे भावायं साक्ष्याया पुरुपे वेहे थे भने तेनाया घट्टा पराजा पागवानी पेठे वेसी रहे जे भावायं साक्ष्याया भावाया माया काके छे पत्र भा भावायारपी साक्ष्य तो एवी तरिहवार हे के, एना पासमा पहेला माया को ते वेहा है भावे ते ही किहा विहेश ॥ जोगव नोग त्रावा हहा, वपण प्रमाय को ता वज्ञों कहे सुरिरी, ते ही किहा विहेश ॥ जोगव नोग त्रावा हहा, वपण प्रमाय को ता थे ।। ।। हाज्ञ ए भी ॥ (हो को हे भावा सिखार हो। हर मन करी विश्व परी, हो वेह ने साम हो। अपप्री विषय सारिखार हो। हर मन करी विश्व परी, हो वेहे सुरमा वाले हो। वपण विसम हो।। ए आकरा।। विसम रहे जगमा से माम हो।। अपकीरति भावाये हो।। मेठ माहिषर जो वोदे हुत्रचा वाल हो।। वसम हो।। पश्चिम सरज

१ मुस १ प्यटामी मुच घाली प्रवाह महोप । तोगाश। स्नान शुतुषा हारीरती, में गढ़ी पिषु एह ॥ तुमे तो फमने ने मत्राप्तां, जापयो पिषु तुम स्लेह । तोगाश। एटना दिन तमे अमत्तर्था, केत न कीर्ष प्रवाप्तां, जापयो पिषु तुम स्लेह । तोगाश। एटना दिन तमे अमत्तर्था, केत न कीर्ष प्रवाह । तो सार । नुस्पर्यो अमने गयथा, नायी हारम दिनार । तोगाश। पुरुष तम्मे ते हे सदीव फासक । तोगाश। तोगाश। तोगाश।। तेश्व वाता। तागायी। तागायी। तोगाश।। तेश्व वाता। तोगाश।। तोगाश।। तेश्व वाता। तागायी। तोगाश।। तेश्व वाता। तोगाश।। तोगाश।। तेश्व वाता। तोगाश।। तेश्व वाता। तोगाश।। तागायी। तेश्व वाता। तेश्व वाता।

|ऽ|| नक ताम ॥ वात कच्ची सुतरा प्रते, जे गक्र भाषणी माम ॥ तेणारथ। सुणी घततार भ |ऽ|| पार ते, दवन करे ततकाल ॥ हा हा कुजने कलक्षियो, खोषो होजि विद्याल ॥ तेणारण। || वेशाटन घन हत्य प्रयो, ए ने ड ख इता मूल ॥ ए भपवाद ते ठारोर, ए महोटो मुज || शूल ॥ नेणा १६ ॥ किहां जाठे केहने कड्डी, जो कर्ड बांद्र प्रतिकार ॥ घन विष्ण कोय न ||ऽ|| वंदाखे, कोय न माने जीकार ॥ तेणा १७॥ एतः ॥ सत्तैयो त्रेतीहो। ॥ चाह करे जिनकी जामें तब बायके पाय नमें अवनेया, मातकु तातकुं लागत बद्धांत्र नामिनी ब्हेंन र हो । अस्ति । अस्त

शकार, पुणा र पाराप्ता । विराम के सहसा तुमें डंपता हो बाल, हुण। निरुपम प्रमाद्देश तम बाल हो। विराम करा निर्मात हो। विराम करा निर्मात हो। विराम करा निर्मात हो।। विराम विराम करा निर्मात हो।। विराम विराम करा निर्मात हो।। विराम विराम हो।। विराम विराम हो।। विराम हो।।। विराम हो।। विराम हो।।। विराम हो।।। विराम हो।।। विराम हो।।। विराम हो।।। । दाल ११ मी ॥ (करजोठी वेच्या कहे हो लाख, जोवे रे प्रवास्त्रा माज ए वेद्रो । करजोदी सवि इम कहे हो खाख, सुखो रे सोजागी ॥ वीनतही महाराज हो घ माहात, सुखो रे सोजागी ॥ ए माकपी ॥ वनपुर नगर ए घने जरको हो लाख, सुण। माज ॥ यह तुमारी तुरतमें, सावेशु महाराज ॥धा इम कहे। सवि नेसा यड़, सेर्घ नज राथो सार ॥ धनपतिसाहने म्रागक्षे, षादी करे जुहार ॥ पा सत्माने सवि होठने, देई प्राय, सुणा अस्पित जन विश्राम हो ॥वणा सुणाए॥ पिछ निसुषो एक षमतापा क्रोफ्त पान ॥ पूरे हो कारण तुमे, मान्या पुरुष प्रधान ॥६॥

सनार भने परना फार्य करवामां तत्पर, एवा पुरुषो विरक्षा बोथ हे, परतु ने करता पण पारका छासे ह सीमा तो, तेथी पण विरता बीय हे ॥१॥ तब धनसार तेहाविने हो

पारका इस्स इ साभा ता, तन्य नय नय मानवाय समस्यो तातजी हो माल, स्था। हिं
सन्त्री करी सुपलाय हो। ।वणा स्था। १३।। देवी पुत्रने हामस्यो है। लाउ स्था। हर सन्त्री सन्त्री मायणा स्था। १३।। देवी पुत्रने हो सास, स्था। जिम कर्नो है।
सन्त्री तत मन ताम हो। ।वणा स्था। एनम चंद्रपी हवितों हो लाउ, स्था। त्रूपण बच्चे हिंदी तत मन ताम हो। ।वणा स्था। एनम चंद्रपी हो सास, स्था। पायणा ग्रप्तागर हो। ।वणा ह्या। हो। ।वणा ह्या। ।वणा स्था। त्रापण हो। ।वणा ह्या। ।वणा स्था। व्यापण हो। ।वणा ह्या। ।वणा ह्या। ।वणा ह्या। ।वणा ह्या। ।वणा हो। ।वणा ह्या। ।वणा ह्या। ।वणा ह्या। ।वणा ह्या। ।वणा ह्या। ।वणा हो। ।वणा ह्या। ।वणा हो। ।वणा ह्या। वणा हो। ।वणा ह्या। वणा हो। ।वणा हो। ।वणा हो। ।वणा ह्या। वणा ह्या। वणा हो। ।वणा ह्या। वणा ह्य

हैं। सा वसाजरण विशेषमी, ब्रापे वरि डाब्हारी ॥१॥ मात पिता बांचव वधु, मिलिपा में विर मांद ॥ वनपतिनी गुण वर्णना, को ने भाते छखाह ॥६॥ इने राठान विराप वधु, विर मांद ॥ वनपतिनी गुण वर्णना, को ने भाते छखाह ॥६॥ इने राठान विश्वप वधु, विर मिले चिन माजर ॥ उस करी वनपति स्थि अप परिवार ॥ ३॥ एक वधुने कारण, ये हे महुने छन्छ। ॥ वेतो ए सामे इही, भानपाणी सुख ॥ ।। ॥ वक्ष्य वनपति सामे मिले, कहिए गोव विराप ॥ पति साम पर्कामा हा जप्पी, मूक्ष हो किरि सुपताय ॥ए॥ मिले, कहिए गोव विराप ॥ विराप ॥ विराप ॥ विराप माजराती ॥ विराप माजराती ॥ विराप माजराती ॥ वारणने विराप ॥ वारणने विराप ॥ वारणने विराप ॥ वारणने विराप ॥ वारणने वारणने विराप ॥ वारणने ॥ वारणने वारणने ॥ वारणने वारणने ॥ वारणने वारणने ॥ वारणने वारणने ॥ वारण मलिया मं पाणी बाब न जावे ॥ देणाधा। सुसरा गते तेम रोवे झबसा, विरद्ध विरोप जा केणाशा इम विद्यवती ते निज स्थानक, रात्रि स पाणी बास न जावे ॥ देणाधा वित्वर्ष। स्पान्ध्रन पावे, कोश्ती एइते देज्युप्त जिस ^{भ्}षाणिके। मप तिहाशवे ॥ बिरङ् विसुषी ब्या बुजा

में में निर्णा ए।। हु मने वनमां कृषि सताच्या, मारका मृगने मरवी ।। के ईका पखीना कि मोत्यां, के ईकान्तने नरदी ॥ केरावाम करवाने कारण, कामण्डा में कीथा।। कि कोक्सां, के ईकान्तने नरदी ॥ वेणावाम करवाने कारण, कामण्डा में कीथा।। मरावाम करवाने वातने मारका, मन्ति वात ने जसमा।। वेणान मार्गको मक्षा करवाने मारका, मन्ति वात ने जसमा।। वेणान मार्गको मक्ष्य करातन, मार्गका मार्गको विका करिने वाद पदावी, वर्ष स्था विका मार्गका करवाने विद्या । के अप करीने वाद पदावी, वर्ष स्था । वर्ष मार्गका करवाने।। ए।। मरावाम करवाने।। ए।। मरावाम वर्षणी पीषा मह निर्मि, पूरा ममुख न राख्या।। इस्सा । वर्षा मार्गका वर्षा । वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा । वर्षा वर्षा । वर्षा वर्षा वर्षा । वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा । वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा । वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा । वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा । वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा । वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा । वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा । वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा । वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा । वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा । वर्षा । वर्षा । वर्षा । वर्षा वर्षा

ए पासर एट्ट्रेसे आकाचपी परेसु पापी अने शकत एट्ट्रेस पूमिशी नीकटीलु पाणी, आ बने जात
 मा पाणीना पूराने एक पीनामी 'जेतारेस को धार्षाद पासरना पाणीना बूराने पाकसना पाणीमी नांसे
 प्रने पाकताना पाणीना पूराने पाखरना पाणीमा नांसे। आ रीते करवायी पञ्चन पाप घागे हे

में शहर ॥ अप प्राते कि कामिनो, जिएके मिखी तंबार ॥ कोदांबीय तत्तक्षणे, प्राते कोता नुप बरवार ॥ र ॥ पोकारी परगट पणे, जाखे नुपने जाम ॥ वैवयोग डाखीमं हैं। पर में कीरें परवार ॥ र ॥ पोकारी परगट पणे, जाखे जुपने जाम ॥ वैवयोग डाखीमं हैं। विच पकी, वेली वेराणी हुर ॥ श आल्व वीशी वंपटे, सुसराने वरी स्व ॥ मुकजी जा ॥ यारत पिण पफ्का वही, अम विवासाओं काज ॥ शा सिरा सामूने वह, जिएवं ॥ जारत पिण पफ्का वही, अम विवासाओं काज ॥ शा सिरा सामूने वह, जिएवं जो निवास यो ॥ वहार करो वेग हुने करी हिए धि ॥ हि ॥ हो म्यापी नरपाल शिका शा पि हो ॥ ॥ इसरा सामूने वह, जिएवं वेत एक्वीन पि हो ॥ ॥ वहार करो वेग हो है करा सी हो ॥ ॥ ॥ ॥ एक देराणी हो बार काम तुम राज्यमें, ते किम करे निसंस्व ॥ ए ॥ ते म हो बार का शा पि हो ॥ मण्यपातीनिजरापूर्विता, पंचारिवासी हो केसरी तत शिर, अहा दुर्गित अम शिका शिका ॥ ॥ जावाहों चेह मार्य हो ॥ मण्यपातीनिजरापूर्विता, पंचारिवासी वृष्णुवाना ॥ १॥ जावाहों—उद्य माया हो भा परामतो देन करवो, सजनने सत्कार करवो, नायवह घन (तिजोरी) मी द्रिक कि इस्ते, वरान परान वर्म छन्म सि

निसुणी प्रवक्ता वयण विचार, राय चिते विक्तमें तिण्वितर ॥ राजा कोपपी ॥ मम जामात ए निपुण मुजाण, किम एह्वो करे कार्य कजाण ॥ राजा कोपपी ॥ रा॥ मम जामात ए विज्ञास कर पञ्जीव निवान, एह ती निर्मेश गेम समान ॥राण। न्याप नोंगे ए वर्ने वीर, सह एह्नी जेर करी जीर ॥ । प्रकारा था पर्तरिषी पहने त्याप, एता नेत हुने होते समान ॥राण। किम कीर्य होते एह अकाज, हो खोशे ए मूचनी बाज तरा॥ चित्ती समान तिवार, मुके तृप वाम आगार ॥राण। ते मानमें । मनमें । पर्यामी बेटन भागि तिवार, मुके तृप वाम आगार ॥राण। ते मानमें । मनमें विव्यक्त एते । ॥ माश्रित जन मागार मनूप, तुमे हुई रंज्या तृषे जुप । । मानमें विव्यक्त तुमे जे चतुर । विवय पर्यासी स । तुमे जे परनारीम वीर । । । प्रको एहने स्वामी स । विरे काम । । । । । । । । मान वाराण। ।। । विष्य पहने ने वोदे वासे मान । । । । । । । । मान वाराण। ।। । विषय परने विषय पर्दी विषय । ॥ डास ११ मी॥ (सम बंगासो सजा निर्धन मे ए देशी) म्मानुना ने ॥१॥

पक प्यान ॥१ ॥ सप्य सत्तानिक सैन्यमें, सामीत सिव सैंकिर ॥ घन्नावाबना कटकमें, पक एक एक बद्दीर ॥ १ ॥ वनपुर कोसंवी विचे, स्थानो करे मेम्जय ॥ सपदा सोक जोवा ॥ १ ॥ ॥ वासा १४ मी ॥ (वेदी कदलानी) ॥ सब्ब व्हा प्रवास स्था भी चक्यो, नृप सत्तानिक तथो मान घरतो ॥ गुहिर सब्ब वह प्रवास स्था से पे चक्यो, नृप सत्तानिक तथो मान घरतो ॥ गुहिर निकाय सुप्रमाय स्थान हटा चखे, हीश सिंद्र्यी करीय होगेना ॥ अमर गुंजारचे पूर्व गान घर्या मन उत्तम हटा चखे, हीश सिंद्र्यी करीय होगेना ॥ अमर गुंजारचे पूर्व रोहो निकाय सुप्रमाय स्थान कर्या मन व्हा चिच्या हिर्मातन, ते सोव जातिना होते निकाय सुरातायि कर्या । नृप स्तानिक तथा सैन्यमें हीसता, ते सोव जातिना गुलिर पर्याय एवं स्थान । जुप सत्तानिक तथा सिंद्रमें हीस वातिना हार स्थान हिर्म कार्य । नुप्रमाय क्षा साम से मित उनाहे ॥ वीर स्सपी चन्ना हो। होर वोगा सक्या, सुन्दर एकवा सख सैन्यमा । सिंग जुप सत्तानिक तथो सहिय आवेद्य निमा सक्या, सुन्दर एकवा सख सैन्यमा । सुन्ध करवा नथी घावीरा जनह । जापीए जन स्था हाराय हाराया वात्र जन हारा । उद्देश करवा नथी घावीरा जनह । जापीए जन

कि कहोता पूरा । सरणा ह ।। ताम धनकेठनो सैन्म पिया सनमुखे, चाद्यीयो वेड निकाया किया । अभ्य रच दीर गज घनघटा पणपये, जारापि राम बद्धो दोण संका ।। साम रच दा होत तथा, सांजवी कृष पिया कोन्य पादे ।। तीर तरवार मा वात्ता तेजधी, खबरे 'तरिय ने समय यो ।। सिना होत्त के के ए युड करने यके, हे रखे इहा मादरे। मान गादा ॥ सैन्य वख मब्प हे ए सतानिक तथो, ताम मुरमिय में ते निव्हात ॥ सन्।। ए।। निरखतां बेंत सेन्या वधी केठनी, जायीए ज्वावितों पूर आयो हो निव्हात ॥ सन।। ए।। निरखतां में सेन्या वधी केठनी, आयोए ज्वावितों पूर आयो हो मिन्य राजातणे स्थल नाति में में सेन्य प्यो केठनी आति सवायों।। सन् ।। १०।।नृपत्तवाा कि मुपटने नासता वेखिने, क्रामिनी तव कहे का बजावो ॥ धूर तजी तर इषियारेन नाविते, विवह आयो तुमे केम भावो ॥ सण् ।। ११ ॥ मरवाता प्रय वक्ती नाविते, विवह अपते मान वाता बजावी ॥ पंचते वेसि किम मूठ वल नाविते, एवियो सुव क्षित ।। ११ ॥ विद्या नुम केविते सिन्य केति ।। इन लिखों, एवियो सुव विद्या निस्त मान सेविते मुच वित्र मुच वल मुच लिखों, विपयो वाव ए भाष केरे।॥ युद कीवा विना मान सेविहे मुचा, ए सेन्या केति मुच प्रति अपते।। ।। वाव सेवा विना मान सेविहे मुचा हो ।

मुगट मति जेज करते। । मही करवात विकास निज मुजवबेद, पुनरि मैन्यमी हैर्स परतो । । पाणीम मराय एक कारण मिर्वितो, फूफ्जा काज सिंह केठ जोवे ।। सराय । । पाणीम मराय एक कारण मिर्वितो, फूफ्जा काज सिंह केठ जोवे ।। सर ।। १ ।। विवास मान मराय एक कारण मिर्वितों, फूफ्जा काज सिंह केठ जोवे ।। सर ।। १ ।। विवास मान मान ।। १ ।। विवास ।। विवास ।। वाच ए चौदमी जारिय तो जब आप मुख कज्जु, जाज रे बूप्तपी भिति विवास ।। वाच ए चौदमी जारि कडले कही, विज्ञुच जिन्हिजय प्रीजे कटलों। ।। विवास ।। वाच ए चौदमी जारि कडले कही, विज्ञुच जिन्हिजय प्रीजे कटलों। ।। विवास ।।

पा मन उच्हात ॥१०॥ आकर्षी आवासमें, राखी स्ती सुकुखीन ॥ मात तात झाता म ते, कीया निज आवीन ॥११॥ कहो बाड ने घन प्रते, किम डांतवकों। ठीक ॥ हो कार क्षेत्र (तस्त हुने नजीक ॥१३॥ ॥ तात १५ मी ॥ (गर्कामें एवे सिह्या हाषणी ए देही) ॥ तात १५ मी ॥ (गर्कामें एवे सिह्या हाषणी ए देही) सिंच कहा ते सामजी बोटाडा, काडक हैर्य मनीने मनमाह ॥ अपने वेविये स ही तो कीतुक केवल्यु ॥ ए प्राकणी ॥ कहे ईम मनीने मनमाह ॥ अपने श्रावित समनी यात उज्जाह ॥ अपने हाजली ॥ कहे ईम मनीने मनमाह ॥ अपने श्रावित मनी प्राप्त नाहिने, तेहीने पहारणा वनपीत पास ॥ अपने जहारने वेदा पत्रव्यो, म मित्रपे नाहिने, तेहीने पहारणा घनपति पास ॥ अपने जहारने वेदा पत्रव्यो, म

कणा प्रमे तो हुं आवक प्रत्यारी सख, कीयख पार्खुं मन बच काय शक्रणाशा तव तेह कि स्विची घयो, हो तुमे ग्रुप्त करें निज जाति ॥खणा जापयों में कुज बंकाबिक कि तुम तथा, ए तुम नोजार्क साक्ष्या ॥अणाणा तव इसी कहे बन्नो जानी तुमे, खमण्यों कि सिंह प्रमानों भूपराथ ॥अणा है तुम वेवर तुम परसावधी, सुख ए पामुद्धे निरावाच ॥ खणाए॥ स्नान सुकुण करवा कारणे, मूक्या मरसावधी, सुक ए पामुद्धे निरावाच ॥ खणाए॥ स्नान सुकुण करवा कारणे, मूक्या मरसावधी, प्रते ताम ॥अणा शक्षी मसी कुटुंव सवि नेता पर्यो, सह कोन छन्यों तव शाराम ॥अणारण। वात जवावी सची कुटुंव सवि नेता पर्यो, सह कोन छन्यों तव शाराम ॥अणारण। वात नको हुने, एहमो तो उनम्पे आवार ॥ मण्ण। ११॥ राजा मन राजी पयो ते सानस्धी, घन्नो पिण खाने तेषी वार ॥अणा भर्य सिहासन नेसण आपियों, क्रजीने कीयों राय जुहार ॥पणा। गणा। भयपी माकार ॥म॰॥ कहे धन देवर का बोलो नहीं, भमचा तुमे जीवन प्राणाघार ॥ पणाधा तव वज्ञी योले कहां तुमे कोषा ठो, जाफ्ने सापी सरोवर काम ॥षण। घन्नाने नामे ठे जगमें पथा, सथताने गथकों देवर ठाम ॥ष्मण।।।।। तव हसी नीजाइ कहें डेज शुं, तुमे खम देवर ठो निरधार ॥प्रणा पथा वती तुमचा चरण पखासधुं, प्रत्यय घर्शु पदम दिवार ॥प्रणा ६॥ घन्नो कहें परस्तीने करधुं नहीं, तो किम धोवरावीजे पाय ॥

ते पत्री सुत्याप्त करे इक वीनती, क्दा तुम मात पिताबिक सर्व ।ामण। द्ववं ब हावं के कि तिन मेरित होंगे काइक मन क्रहेंकर ।। क्षण । स्वीपी क्षण कि सर्व बहु नीपजे, कि कत्व मेरित प्रति ।। मुद्रें के प्राप्त कर्तान, ।। सुद्रें के प्राप्त कर्तान, ।। कुकेरे प्रोप्त स्था ।। सुद्रें प्रोप्त कर्तान, ।। सुद्रें प्रोप्त कर्तान, मिरित क्षण ।। सुद्रें प्राप्त कर्तान, ।। सुद्रें प्राप्त कर्तान कर्तान कर्तान कर्तान सुव्य मेरित कर्तान करान कर्तान करान कर्तान कुरुते प्रीरत क्षिया ॥ स्तेहत्तं विषे मक्नाति, पश्य मंथानको न कि ॥१॥ जानाफी—ज् ने के, सारा नांतमा रहेतो एवो ने मंगानक (रवेयो) ते पण स्त्रीनो परणाप करीने स्तेहवाला द्विने धुनधी बलोवी नासतो १ पण्ति बलोवी नाले छे। तेम सारा बदा मा जनक घएतो एवो ने पुरुष, ते पण स्त्रीनी प्रेरणासी शु श्रुकत्यो न करे १ पणितु करेज।॥१॥ तेष्ट नाणी एटतो जेव देखाहियो, ने जणी न घरे मनमे मान ॥अण॥ साले देवाणी तो पिण मोनही, स्त्रीने छे तेष्ट तथाो जपमान ॥पण।। तो पहिरीजे मानसितो मानज करे, जीप्पो कत सुद्दाय ॥ जङ याखीषी वाहिनी, तो पिहरीजे गय ॥१॥ वंघव स्नेह तिह्य क्रेंग जाषीए, जिह्वा सर्गे कामिनी वात न कान ॥ घण

सुणी राजा

नक्षा वयण मुद्दामणा, मनमाही हरले मतिही विशाल ॥भाग॥ त्रीजे छटहासे प्रेम प्र

तिषिक राये हुझ विहुत्तृशु, कीषो सम्राम ते जी बच मान ॥ षण ॥१६॥

पचममोपनेर ॥ १ ॥ जावार्षः सुखी पुरुषने सुखनो निषान, इ ख। पुरुषोते

।। वास १७ मी ।। (राजूस बेती मासीए ए देव्ही) मीतकता गुण सामसी, मन दूरसी दूष्मिही बार्षंद के।। पूर्ष मित्रहामाद्दी, एए कीवी देए पूरण चंद के।। पुष्प संयोगे साजन मीसे।।रा। प्र बांकणी। ब्राजमां

साये है षत्रमं, निज मननो हे ते पामी धर्ष के ॥ पिए। धन्नोक सुध्योकना ब्बर्ध के ॥ पुरा ॥ ११ ॥ तब गह के । लाज नहें है जबम ॥ ४॥ कन्या वाची

३॥ यतः ॥ श्रष्टी स्थानानि

चतालुच॥ १॥

गरस्तया

S 11 WE

ए, काञ्च क्रास्त्र

॥१॥ मीज . ताखबु ए आठ प्यमा ग्रमार् सुबर आत मञ् मिज तातम्

定

ा डाख १७ मी ॥ (वीर बखाखी राणी चेजपा जी ए वेही)

एहवे ते बद्दमीपुर जी, पत्रामत नामे छवार ॥कोदि बत्रीहा सीवनततों जी, श्र के प्रवित्ते छे हाडुकार ॥ वेखो हेखा बुद्धिबंद मोटकों जी ॥१॥ ए आकशी ॥ जेटकों नहीं विवर्तते ॥ सुख दिये जेह आपष पढे जी, यहा करे देहा परदेहा ॥ देखों । ॥ शि सुरी नामें के तस गहिनी जी, पुत्र शुज लक्ष्या चारा। राम ने काम गुष्याम छे जी, द्याम चोचो सुख के कार । वेखों । ॥१॥ सुंदरी नामा तस कार । वेखों । अप हात स्वर्तता जो । इसे मा तस कार । वेखों । पुत्र धाने ने देखा । वेखों । अप देखां । वेखों । ॥ इसे वंदर्व । चार जाय देखपूर्वा सहा जी, आप ते हे अपचे । वेखां वा मारण जाये। तह कार वंदर्व ।।।।। अंत वंदर्व । मारण जाये। तह वंदर्व मारण जो ने हेका प्रोजे डण्ड्समे झोजती, बाब सचरमी हे कही जिन मन रंग के ॥ पुण। १७॥ ॥ ॥ मेहा ॥ राजा माने भातवाधु, वेखी बुद्धि प्रकार ॥ मंत्री पिए कार्याविके, पूठे वात विचार ॥ शा बुद्धित देखी बहुत, पूठे नव नव जेव ॥ धन्नोहाह डजर तुरत, भाषे परी डमें ॥ शा चारे बुद्धित बहुत, चेतन सहे सुख सार॥ तिम चारे नारी बकी, सुख विद्यत्ते प्रकार ॥ ॥ ॥

ताडी गढ़ ॥ बंधव होए फवोजाणा, ताढ़ि पीताती बाह् ॥१॥ घनतायो घ्यान नवि घारि के वे जी, घन तदा अनरध्य मूखा। फीनो मेल ए जाण्यों जी, घनयाकी स्पण्ण प्रतिकृता के ।। होता पात कारधा होता ।। होता होता घन पाप कारधा हो। होता। होता बेच मफार ॥ वेत्रोण ॥११॥ पिष्ण एह समय घनवेताने जी, मात के माने सह सोक ॥ धनपकी लाज जगमें खें जी धन विष्ण माणात फोक ॥ वेत्रोण॥१॥ इंच माप्त हो तोक ॥ धनपकी होज जगमें खें जी धन विष्ण माणात फोक ॥ वेत्रोण॥१॥ इंच पात हो हो जी, धनपकी व्यत्त हुं जी, वन के घर्ष हो जाता ॥ वेत्रोण॥१३॥ विष्ण माप्त पात हो जी, सिर्च माप्त हो जी, स्पर्ण हो जी, सिर्च माप्त हो जी, सिर्च माप्त हो जी, सिर्च माप्त हो ।। हो हो जी, प्रत्य माप्त हो ता होष्ण ॥३॥ वेद्रोण ॥१३॥ विष्ण काप्त होरे नहीं जी, प्रत्य न घरे तस कोप ॥ वेद्रोण ॥१॥ तेह नप्ती धन हो ने हो सावजों जी, पिछ मत करवों क्रिश ॥ क्रेशबी डास सहहंशों घरों। जी, इह परनव । तिहां पुत्र ते चार ॥ देखोण॥६॥ सौनको पुत्र सुपुत्र को ची, माहरा जीवनप्राष् ॥ मानजो , होता एक पमतथी जी, तुमे को मति चतर मजाण " के क्षील एक प्रमत्तथी जी, तुमें में मित चतुर मुकाण ॥ देखोणाधा वाघव की ह कारण एकी जी, हेर मत शरजों बीर ॥ बांधव सम कोह ने नहीं जी, प्रेमनो राज सचीर ॥ देखो॰ ॥णा कंजन कामिनी सुलन ने जी, मुखन ने मंदिर बात ॥ सुलन पुत्रादि सवि पामवा जी, इसन ने मातनों जात ॥ देखोण ॥ था कहुन होए जिंबडो, पिण तत्त

मिति। तात ते एहनो हो हुने भविकारी माण ॥११॥ तव कहे वन्ना हा चिन विचारी माण,

स्नामी एहने हो इहा कणे तेढो माण, तुम बेखंता हो करीश निवेदो माणा(शा सुष्) न हो वन सुविशेष मार, अब खड माने हो कोडि ते बेखे मार ॥ जोहों। जेखों हो क ति जेहमें, उंगे अधिको हो काइन एहमें माणा? धातव ते चेटा हो करवा लेखो मार, माण, षाठ कोर्हा 朝日野 धान्यना | हो सपतो पेरुपी माण। ब्याजने मेले हो धन सरवातो २ हवासी माण।१ ए।। यर आपयाने हो क्षेत्रने वाही माण, । वफतर काढी नो हो घयो ।

बहेदाने गाडी माण ॥ खेखो तेहता हो की वो जाणी माण, षाउ को ही वाननी हो बहिये हैं। जिस्ताणी माण ॥१०॥ एक इात हाणी हो बहुत हे वो दा माण, एक इात गोकुन हो से इंचल स्तारा माण, एक इात गोकुन हो से इंचल स्तारा माण, घड़ को ही धन हो ते पयो हिंसी माण। हाण है इंचल माण है इ ॥ दोहा ॥ चारे वाषव चितवे, एदनो गुण असमान ॥ अस्पा पड्र कियि विसे, एहं ने नाग्य नियान ॥१॥ घदमी सम जहमी झठे, वहिन आप्ये एक ॥ दी ले एहं ने विस्त पर अपप्यो विवेह ॥१॥ विसीने धनशाहने, गुन वेसा शुन योग ॥ परणाहे निसे मीने आपी सहस स्पीग ॥ ३॥ तेहशे विविद्य संसार सुख, जोगेव विदे वहु प्रे मा। पोचेषी वीनो रहे, पंच सुमिते सुने लेम ॥ ॥॥॥॥॥॥॥॥॥ । इसमे १० मी ॥ (प्रायम्भी सिरानंबना ए देह्री) एविने ने सहस्पीपुरे, छपिक तयो ठे हेठ ॥ घनपालाजिष नामप्ये, घननी करे मित वेट ॥१॥ खाव नपीव निव वेदे, प्रेवयानी करे वात ॥ द्वेवमाही शिरदार ते, अद शि तिहा करे पर तात ॥ १॥ एढं एक कोइ याचक, याचवा आच्यो तास ॥ मीं वचने श्री वोद्धाविने, वेत्ताखो क्षेत्र पास ॥ ३॥ कहे याचक सुणो देवजी, कींजे न दान विद्य ॥ भी पायुनयी गति खांधर हे, तेह नयी अविद्यंत ॥॥। तव बोद्ध्यो याचक प्रते, वेद्ये प्रनाते श्री दान ॥ जीजन व्यंजन नावता, तावूलांद प्रधान ॥॥॥ कडी गयो तव याचक, भाव्यो श्री प्रनात गेह ॥ क्षतिम गुवार्य गांह तस, गुया वर्णन करे तेह ॥६॥ कहे तव सुंच हिरोम प्रजाते गेह ॥ क्षतित गूढापै गाहा तस्त, गुण वर्णन करे तेह ॥६॥ कहे तव सुंच शिरोम ली, तू ब्रावे परजात ॥ वेधू जोजन जावता, त्रावृध्य युत विख्याता॥॥ तिम घीचे दिन भाविते, बोले यावक एम ॥ गूरे रे रूपण नधी खापतो, जोजन व्यजन तेम ॥०॥ ज गर्मे यदा रहेशे पिण, निह रहे तेन घन मात ॥ रावण सरिता राजवी, ते पिण चांच्या निदात ॥ए॥ नेदराय घन मेलिने, जेख्यो समुद्द मऊरार ॥ मन्मपाहोठने सागर, पद्दे स्या नरकागार ॥१०॥ वीधु रहे मविचल षड, खाषु खूटी जाय ॥ सापुरिसाचुं मीजित, वानधी सफल गणाय ॥११॥ वेता वेता पात्रने, धननी थाये द्विल् ॥ मूलदेव परे ततक छे, पामे सक्छ सम्प्रेल् ॥११॥ यतः॥ शाबृल्लविक्तिबितशुनस् ॥ श्री मानेयजिनेष्वरो घ नन्त्रवे श्रेप शियामाश्रमः, श्रेपासश्र स मूस्वेववृपतिः सा ब्वनातवना ॥ घन्योसीकृत

पुष्पकोगतजव श्री शाबिजस्तियः, सर्वेय्युसमय्गनमानविषिना जाताजगिद्युताः॥१॥ श्रावार्षः—प्रयम तीर्षकर श्री श्रयन्तेवस्वामी, ते धनसार्पवाद्ना जवमा (धृत्तुं वान सेवार्ष) क्रस्याय कर षदमीना घर हता, ते, श्रेयासकुमर, यूतेव राजा, चंदनवासा, तथा पूर्वनवने विरे कखु वे युष्य जेमयो एवा आ घषकुमर अने शाबिनञ्जुमर, ते सर्वे पण्य जेम वान थने सन्याने करी जगत्ने विशे विख्यात पया हे ॥ १॥ तव वोख्यो पण्य करते तसु, मास पयो इक जाम ॥ ताम ते याचक चित्तो, सुवनी पाई माम करते करते तसु, मास पयो इक जाम ॥ ताम ते याचक चित्तो, सुवनी पाई माम शाशा इम चित्तीन चैरवी, क्षेरे वेदो तेद ॥ यूर्णे वियानो सावन, साचे घुवि करी वेद्द ॥१था। कुरू करी पट कोयानो, हवन करे तिहां खासा।अय जपता इक्वीता ते, तास पया इपवास ॥१६॥ चैन्छित ताम प्राट यह काहे वियाने तयाचक, पय प्रयामी सुविचार ॥ क्ष्य पानपी, तक्के मुख, ये विया सुखकार ॥१०॥ द्वीये दीधी तत्तकों, विया तेद प्रवास ॥ ते दोई ने याचक, बच्चो घड़े सावयान ॥१०॥ एवं से वानकामिक, आमातर गयो वीक ॥ जा पुषकोगतजव श्री शाबिजञ्जिषः, सर्वेज्युत्तमषानमानविषिना जातावगदिश्वताः॥१॥

सन्धु नेम ॥१॥। ते जात्वी षात्रवी कोयने, मत क्षेजो नाकार ॥ जे मागे ते ते

कोहे जिन सुनिसास ॥ वास

मा गरहात ॥ ३४॥

॥ शहरात ॥ ३४॥

॥ शहरा ॥ इम विन चाठ वर्णे तिखे, बीचे ऋद्द निहा वान ॥ नाति जाति पोखी है।

मन्दी, तीचो परा असमान ॥१॥ ते वार्फी वधती थर्ड, नगर बेरा पुर गाम ॥ सुंचे ते पि है।

पा साजनी, पपो विग्रम तिखे गम ॥१॥ चारणे ग्रांत करावतो, निज ग्रहागय जाम है।

॥ बीगे प्रतिरुपी तिहा, बेगे दे बहु बाम ॥१॥ बोस्पो सुंच रोगे करो, तुं कुष छे संमा है।

हो माट ॥ कठ कठ जा ईवा पकी, पकवी कोइक बाट ॥१॥

॥ शत शर मी ॥ (घन घन जनती वे लाव ए बेरा)

तव ते बोले वे लाज, धूर्म कवा करी ॥ मादरे सुवने वे लाव, हैं रह दित वरी है।

॥ तोगतु सुख नेहरी ॥ दूं कवप कपटी इहा आपो, वायो स्वानपरे धर्ड ॥ कुप्त सी जेता है थी ने नोगतु सुख नेहरी ॥ इक्या करि ।।।।। वाल सुवने वे लाल, बिह्न सिलकत माह है।

शो नोगतु सुख नेहरी ॥ दूं कवप कपटी इहा आपो, वायो स्वानपरे धर्ट ॥ कुप्त सी जेता है थी जे नोगतु हुख नेहरी ॥ इक्या करि ।।।।।। वाल सुवने वे लाल, बुद्धि सि गई ॥।। तुर ने लाल, बुद्धि न सो तुर ने ने लोही ॥ तुर हो।। वाल सुवा लेहा।।। विद्या सि लोहा है।। तुर ने तिहिने वालिशा।। विद्या ।। विद्या है। विद्या से ने ने तिहिने वालिशा।। विद्या है।

तावीपोते कहे सुवो सजतो, घन्ने उपकृति मुज करी।।माहरी ए सयव जीला, प्रह्मी में क्युत्ति।। ते ज्रवी एक्ने किने पुत्री, रागे विका कहे।। निव वीजीये तो बस कि सिन, राग वेदाने तरा। वीधी कर्या वे सिन, राग वेदाने तरा। हथा मानिका।। वाल, वी माने मुद्रा। १७ ॥ तु॰ वरी मनमा हथे काविका। हथा मानिका।। विका करी ने सिनोदा, हथा मानिका॥। विका करी ने सिनोदा, हथा मानिका॥। हेव्यो।। वाल-पूरव पुर्णे वे लाल, हेव्यो।। वाल सुर्व वरी।। राजा मंत्री वे ला॰, वित क्राविको वरि,। हुए।। तु॰ हिन वर्ष भाविको सिन्धि।। विम बुद्धि पात्र बनी जमाहे, गुणे गौरवता लेहे।। श्रवे विद्याने विद्याने विद्याने सिन्धि।। विम बुद्धि पात्र बनी जमाहे, गुणे गौरवता लेहे।। श्रवे विद्याने वि



॥ दोहा ॥ श्री संखेश्वर समरते, लाइचे सखमी त्रीग ॥ कामित सिष भाव। मिद्दे, सपदा सिक्ष्ति संपोग ॥१॥ बाग्त श्री गुरु संघने, प्रेमे कर्ठ प्रयाम ॥ बचनासृतनी बानम्, पूरो मुज हित काम ॥१॥ बोजो चतुरपणे करो, रचुं डम्हास रसाज ॥ एक चिन घड सन्पतो, श्रोता सिंव डनसाल ॥३॥ घन्नेहाह राजगृहे, रहे ते भाषीव पूर ॥ हवे ते अन्यकुमारनो, कहु सर्वंय सनूर ॥था वेदया कपट प्रयोगपी, चैनप्रयोतन पास ॥ रहे अन्य निन्तंय घन्ने, मासीने आवास ॥॥।

॥ तस्त १ सी ॥ (वेह्री रसियानी) चंक्प्रयोतन मात्तव माहिपती, इदि समुद्धे १ पूर्ध ॥ विराजे ॥ खागे त्यागे जोगे हैं मगतो, वेसि बूजो १ कर्ष ॥ विवाजे ॥ झुणजो साजन, कौतुकनी कपा ॥१ ॥ ए आफ हैं पी ॥ सान्तवता सुख बाय ॥ सवाई॥ सम्मोकत विषा निर्मेद बचतो हुने, डिरित तिमिर हैं पिट जाय ॥ जन्नाई॥ हुण। शा चार तत्त्व तेहिने स्वायीन हैं, पूष्यवि परवान। सिवान। सिवाहो। सि यो शिवावेती चेटक पुत्रिका, शियज्ञनी परम निवान। सिखाई॥ शा लोहजंद्या नामे हैं तस इक प्रेय्य है, गमन करे कृत कोषामही तेण। अधिजिक रूच बशिये निव बचे, वाखे ने नित्रोप। सह हो एमत हो हो।। शा श्वनत्निरित। मां जन होपती, ए घरितस रह्न। सन्तुराण। राज्य

मिराण ए चारे जाणीने, करे तस सुपरें रे यक्ष गते पूराणासुणाएगा एक विन बोब्रजमी द्रा सम्प्राण, प्रकारण प्रकारण निक्त ता समाने हैं समाने के निक्त मार्गण, प्रकारण मिराजे हैं कि समाने हैं के समाने हैं जो हैं के समाने हिन्दों मिराजे में गियमने अस्मिर्गण हैं कि समाने हिन्दों समाने हैं के समाने हैं हैं के समाने हैं समाने समाने समाने हैं समाने समाने समाने हैं समाने समाने हैं समाने समाने हैं समाने समाने समाने समाने समाने समाने समाने हैं समाने समान

हारों रेतेह । सिवेडी। सुण। रेशा जिम कह्या तिम 'करते सिह तिम ययो, हरख्यों चेर्मप्र येता । तिवारे ।। कहे तु मोचन विषा 'बर जे रुचे, माग तू मनमें उयोत ।। स्वारे ।। सुण शारण।। धन्मय कहे वर ए ज्ञारमें, राखो संप्रति काला । राजेसर।। उत्तल ए पहिली चो पा उच्छासती, कही जिनविज्ञपे रसादा ।वालेसरा। हुण। रेशा ।। बोहा ।। इवे ते चंक्ययोतनी, कुमरी क्य निषान ।। बासववना नामधी, मु पति तछो बहु मान ।। शा क्लाज्यास कीथों घष्णे, ध्यापकने पास ।। मीत मृत्य हो सर कहे रापने, जो हुम विषा काम ।।।। उद्यन कुमर कता तिओ, राय सतानिक मर कहे रापने, जो हुम विषा काम ।।।।। उद्यन कुमर कता तिओ, राय सतानिक नद ।। मीत नृत्य वालित्रमें, कोविद जिम नज यह ।।।।। पोषवतीना 'घोषपी, वहा की राव वन नाग ।। ते खांचे जो इस् कुणे, तो सही पाठक लाग ।।।।। साजनी चम्प्रयोत ते , योहजंधने हैव ।। तेख तिस्तीने पाठण प्रणी, तेदावे मुज तंत ।।।।। सचिव कहे स्वा

त्व ॥ गांत नृत्य वालेत्रम, कोविह जिम नज पव पा वन नाग ॥ ते खाने जो इदां कपे, तो सही ० तद, योद्जीयने हैव ॥ जेख निसीने पाउपे, केविं। है (देपो, वांची प्रद्यो उत्तर ॥ पुत्रीने पाउप ज्यपी, ते कत्म मई सेदक उत्तर पाणी सेसु एटने केवि वा

' बनमों भई मोदक छपर पाएंगि रेडखें पटले बोबी बारमा समूष्टिम नाम मगट बयो

व्ययन कहूं ते दूरन बासी, यम्त्रभातिना बात ने नाया । रामद्रा दुख राम हमारा, सीहता सुखतेगी ॥ ए झांकथी ॥ वासवदत्ता पुत्री तुमारी, नणवा मूकजो झ म घर सारी ।सांणाशानीझाले नणवा सह झांने पिषा णवक पर घर निव जांचे ।।साणा चाक्यो ते हुत ततकाल, पद्गायो ट्रस बद्धायिनी विचाया।साणाशा वंकप्रयोत्तन मागन मासे, वृष्यन कुमरती वात प्रकासे ।।सांगा निमुणी खोष्यो मालव राय, धन्ययुमरने ॥ बास १ जी ॥ (देहा मोती हानी) छद्यन कहे त दूतने वाषी, चन्न्रधीतनी वात में बाषी ॥ साचडो गुषा रागी

अवती षापती, वनप्रयोते अन्य वत्वाष्यो ॥सा०॥ए॥ तेही उदयनने कहे राय, में तु अने प्रद्धो करिय उपाय ॥साँणा माहरेवैर विरोष न तुज्जु, ह्य म घरे मनपी मुज्युं ॥सा०॥१७॥ माहरे तो तूँ पुत्रने तोषे, मृगावतीए साँजो हे खोखे ॥सरणा पिषा तूँ तेदा में मी नवि षाज्यो, तव में यहवो वाय उपायो ॥सरणाश्॥ वासवदता हे मुजबेटी, सक णूने उपाय ।सा॰।।श। छक्यन किंग्रि हक्षा झादे,अनगकुमार छपाय बताये ।सा॰।। बस्ततयो इक क्षांची कीचे, पद्यक्षिक तस वादी लीजे ॥पा॰ ॥ थ।। भर-तर तस पुरुष रखायो, वात सक्तयतेक्ते समजायो ॥सा॰।। वनमाछ गज रूपे फिरहे, तर ते गज यि ।सारा।। मान्नसी चनप्रयोतन हरस्यो, शन्तयकुमरने कोविव परस्यो ।।सा। विषव पुरुपने काज नदायो, जिम कक्षो तिम गज रूप बनायो ।।सारा।। वनमाई। फिरे क्रीहा करतो, देखी वनचर मन मुख बरतो *।।साध।।।।।* वहपनने गज चात जपावे, ते पपा म हिंदा धनमा घोवे ।(सीध)। वाई बीख बिदोय करीने, तेव गज चाते कपट घरीने ।।साध।। ।।उ॥ एकदो तदयन वासे बावे, गनकपपी "सट नीसरी घोवे ।। साध ।। मही त्रव्यने वा वित्त परहा ॥साः।।।।। वीष वचाहतो कावे निवारे, षाणजो प्रकृति तेषु निवारे ॥

त कता मुष्यनी में पेटी ॥तागण तेढ़ने गीत कता वेखावो, मुपरे घोपवती क्रीक्षावों ॥ के का मुष्यनी में पेटी ॥तागण तेढ़ने गीत कता वेखावों भूपरे घोपवती क्षाणी ॥ ताण ॥ के का मानी तुमारी विवादेत राष्ट्री, व्वयन्त्री विवादे ॥ स्वया काषी हे ते माटे, व्वत्न विकाद क्षाणी कर्म माटे, व्यव्म विवाद विकाद करता न खाटे ॥माण।१॥ परियच भंतर राष्ट्री निकाद करता न खाटे ॥माण।१॥ परियच भंतर राष्ट्री निकाद को विवाद माटे, वेदन विकाद मुष्टे बेह्न मुख वेखोग बारे, तो तुजने रोग विस्ताव मुखे अंवर कोती ॥ताण।१॥ जो क्षाणे ॥माण। विवाद मुख वेखोग बारे, तो तुजने रोग विस्ताव मां ।॥ क्षाण क्षाण्या हो विवाद विवाद विवाद माण। विवाद माण विस्ताव कर्म विवाद ॥ क्षाण मुख्य क्षाण विद्याच विद्याच विद्याच हा स्वाद स्वाद ।। विद्याच कर्म विद्याच हा ।। विद्याच कर्म विवाद ।। विवाद विवाद ।। विवाद माण विद्याच ।। विवाद स्वाद स्वाद ।। विवाद ।।

ते पाखन बरी माण, कको कोड़ आबल जयाय ज्यु वहा बावे करी माण ॥ धन्नय कहे विद्यान वीयाता नावयी माण, वासववना सग बरी कुन सावधी माण ॥ धन्नय कहे विद्यान वीयाता नावयी माण, वासववना सग बरी कुन सावधी माण ॥ ।।।। पद्म तियोप काया है। यायाहो नाम ते जायाये प्रक्षी माण, नीवी विद्य प्रायोद कियोपता माण।।।। वाह वीया विद्येप कहार कहार करी माण, गावनी तीरे साव पाखारे कियोपता माण।।।। तेह धन्नय हुर्ग सुरंग हों। वाच्य कराया माण, माण, मुग्यर आव्यो ता असूर्य व्यं किर माण।।। तेह धन्तय माल सुरंग वाव्यो मुग्नी पर माण, केंगवतीन केंहे किरावे त्यू किर माण।।। नाच्ये मीत सुरंग वजावतो वीयोन माण, केंगवतीन केंहे किरावे त्यू किर माण।।। वाच्ये माण सुरंग वजावतो वीयोन माण, केंगवतीन केंहे किरावे त्यू किर माण।।। वाच्ये मुस्य विद्या वर माग मालवयति केंहे हिंसी माण, वेह्म बुद्धि बन्द्रप पयो हु आति खुद्दी माण।। काच्ये सुरंग विद्या वर माग मालवयति केंहे हिंसी माण, वेह्म बुद्धि बन्द्रप पयो हु आति खुद्दी माण। काच्ये राधी धारायो हम्म सुरंग विद्या स्वायो हम्म सुरंग सुरंग सुरंग सुरंग हम्म सुरंग विद्या सुरंग सुरंग हम्म सुरंग विद्या हम्म सुरंग विद्या हम्म सुरंग विद्या हम्म सुरंग विद्या हम्म सुरंग सुरंग हम्म सुरंग हम

र परमाकनी अपि कती, ने गुरु तनना थोगर्थ घपत्ती त्योप गांवि पापी

ए तहे जावे ॥ ग्रेट सामंत सिव सक्क थरूने, मूकावो बढवावे ॥ भग एवा मुक्को सांन स्री चिते मनमें, एव तो गिव्यो वोखे ॥ कप्ट तथा तो कोप न जाणे, कपटे सप्या पूले ।क्षणाग्रश माम मामध्ये प्रव्या पावटी, ब्राच्या तुरत निज ग्रेश ॥ श्रीयाकने वधा मधी पदोती, साट्या चनव सुवे ।क्षणाग्रश चन्यपकुमर प्रयोतनते तव, ततिते पा पतागाहे ॥ वचन कहा माहे में तुजने, पायों हथे आ खावे ॥पणा १३॥ पाज पठी को ह राजा साये, वैर म करको माई ॥ इन कही मासवपतिने देगे, पहोंचायो चित सा है ।क्षणाग्रधा वैर विरोव सबूधी भाज्या, ब्रान्ये बुद्धि प्रकारे ॥ बोपी बाव चोचे उच्छा है ।क्षणाग्रधा वैर विरोव सबूधी भाज्या, ब्रान्ये बुद्धियकी सुप्रमाथ ॥ श्रीयाकनी विता ह नी, विन विन कोवि कर्याया ॥१॥ को तुप सामज धन्य पुं, तुन विया सबू मूकाप ॥ स्याय नीति करवी पढे, पिया ते किरावि न पाय ॥ १॥ सेचन गत्र मूको हमें, पाक्रा परने हाट ॥ वाट विगावी नगरनी, अमने खगे तचाट ॥ ।॥ ॥ ॥ कालायी फदवो च पक्षे, गीनस्होठने देव ॥ न्याय कियो नरपति परे. उग दाख्यो तसखेव ॥ ।॥ बी जां प

तकत कुटुननो, षमे तो 'डुमक सक्प ॥तब॰ ॥ ए ॥ घणुं घणुं घो कदिये द्वा निरविषये षमने षाजयो, जाली वावन मेमा॥ ए यन जे तुमे दीषो हो नर्वि दीघो जाए श्रम ष की, जिम काषाची नेम ॥तवण ॥६॥ एइना जे षाधिष्ठाता हो मद माता ते ताहरे वहो, त्रम यहा कहा किम बाय ॥ जिम निज हापे परणी हो वर तहणी बांदी ममने षाजवा, जाली वावव प्रेम॥ ए धन जो तुमे १ नहाना १ जाखारी

तान तित्त, बहुमर सचली साथ ॥ बानबर्धी बाने हो जले जावे गुरु चरपालुचे, वहं में लीन तित्त, बहुमर सचली साथ ॥ बानबर्धी बान विद्या । वहं वेहाना, कहे | जोड़ी हाय ।।एइवेणारशा थिर चित सहने नायों हिसा तेहनी, उंने जीज सवाव ॥ तेहां जाव प्रमान ॥ उन्हायने चित घारों हो जम दीने जीजन्ममें, पानो प्रचन माता॥ में प्रचाशव भुमें वारों हा वाल घारों हा नाय हमाने हिसा तेहां जम दीने जम सात। हो प्रचाशव भुमें वारों हा वाल घारों व्हावसिर ज्ञची, पंच महावत लेप ॥ तथ जप में त्राय करातों हो ब्रावक हो तो थान विवसिर ज्ञचों, पंच महावत लेप ॥ तथ जप में पर्म सनातों हो ब्रावक नेवित्ते, आप्यों मन जजमाल ॥ चोपे जब्हासे मावे हो मन जावे छही हालमें, जिन इम वचन स्ताल ॥ एइवेणा १३॥ वहा ॥ देशना समजी वित्व उच्छों, घन घन कहें धनसार ॥ चोपे जब्हासे मावे करों मान में सान सहने हो ।। देशना समजी वित्व उच्छों, घन घन कहें धनसार ॥ चोपे जब्हासे मावे करों मान में सान सहने हो ।। करा हि ॥ इस माव में हो मान मावे करों। विद्य में सान सहने ।। इस मावसिर जेह ॥ पामों पामों हारवे, हो करमें डे उत्ते हैं ॥ ॥ शांतिच इस सावसी। असे पास साव में साव साव हो ।। इस साव साव हो ।। इस साव साव हो ।

ता हाल 3 मी ॥ (शाति जिणेसर केमर क्रांतित जंगपपी रे ए देहो।)
से इस में में में एवं प्रत्य ज्ञाय वारता रे प्रवण, पुरपञ्जाण द्वारा वा स्व वारता रे प्रवण, पुरपञ्जाण द्वारा वा से हहा है हिंगा तियों नगरे एक मारि काम्यापन इसंसी रे काण, करे पर घरनों काम दी साम होता विमा विमा सिक्त पर घरना काम रे ज्ञाण पट ने जात होना हान्ती महा आपीयों रे हुण। शा सिक्त पर विशेष प्रवापनी वेसीयों रे मण, पर पर वीरने खाद हुनाशिक प्रवीपों रे हुण। अब ति तर विशेष प्रवापनी वेसीयों रे मण, पर पर वीरने खाद हुनाशिक प्रवीपों रे हुण। आवि तिक्रण। क्रांती तिक्रण के मारपूर न कृक्स पर पर वीरने खाद हुनाशिक प्रवीपों रे हुण। आवि तिक्रण के मारपूर न कृक्स है । मान है दे का से के मारपूर न कृक्स के संपत्ते रे नण, में ते सारपुर न कृक्स के साम है है हण। साम के के मारपूर न कृक्स के मान है रे रे मान है है पर साम के साम हिंग है मान है है वा साम के साम हिंग है साम बात है है मान है साम है है मान है है मान है है मान है साम है है मान है साम है है मान है साम है है साम है है मान है साम है है साम है है मान है साम है साम है साम है है स जती, सती सुजच सार ॥ हो करमे माटी वहां, डाख सक्षा विवय प्रकार ॥ए॥ पर्ष संदेह तयो हहा, ज्ञानतये माधार ॥ विवरोने कही वेगदी, संचल सबंघ विचार ॥६॥

भ बेह्या १०, म विञ्जासहर्शावकृता ॥१॥ आवार्ष -बालक, इड्केंन, चीर, वैद्य, माझप्त, पुत्री, क्रिय, माला, म्रातिष्ठ (प्रकृषा) मने वेह्या, ए सर्वे सार्वी हासतेन समजता नपी । । माना पुत्रने सार्वा वृद्यने सार्वा वृद्यने सार्वा हे हम बकी हे आणा तुर्यने सार्वा हे हम बकी हे आणा तुर्यने हे हाता मोहे हो कि माना पुत्रने हो हम बीक हे हे , चार पाठकेश्या ताम मावी कहे हम बकी हे आणा तुर्ये हे हाता माहे हों हि कि विका वीकरों हे हे , घार पाठकेश्या ताम मानावी कहे हम बकी हे आणा तुर्ये हो ।।।।। मन तिये दुन्नने वात सपी मावी कही हे सणा सार्वा कहे परमान्न माव कू वे सिही हमाणा वार पाठकेश्या तत्र खीर नी मानावी हमाणा हमाणे वार्या वार्या वार्या विका प्रमान सिहास हो हमाणे हमाणे वार्या हमाणे हमाणे हमाणे वार्या हमाणे ह

, ।। ढाल o मी ।। (नमो नमो मनक महामुनि ए देशी)
मुनिपति कदे तुमे साजलो, पूरव जब विरततो रे ।। माम सुमाम नामे जखो, कृ वि तम्मुल्यी कंतो रे ।। मुनिपतिशाशा ए खाकपी।। तिहा कविपारा जिएव रदे, धन ही या भित बीठा रे ।। सेवने मासन हे तेहता, नियाश गुथे ते मीठा रे ।।मु० ।। १ ॥ एक विन काष्ट तेव। मते, प्रहीने तबता साथे रे ॥ पोहत्या वनमें पढवडा, खोई कुठार ते हापे रे ।।मुण।१॥ मध्याने नोजन समे, बेठा नोजन कामे रे ॥ मासत्वमण परपा पति, क्ष मनम् ॥ दोहा ॥ हवे घनदचाविक तथाे, पूरव नव षाधिकार ॥ सब्गुरु कहे हाुन चिन मासोगर इसे नामे रे ।ामुणाशा बीजा हूरथी आवता, सन्सुख अझने वदे रे ॥ संबद्ध स एतो घुन मने, भापे मन भाषांदे रे ।ामुण ॥५॥ मुखनवोषी आवक कुने, कपजवो ति हा बाष्यो रे ॥ काष्ट ग्रद्धी संब्या समे, भाज्या भसन न खाष्यो रे ।ामुणाहा। एटसे रोपे | प्राणा चोचे उददासे बाच कही ए सातमी रेकण, जिनविजये मन रग श्रोता गमी रे श्रोणा रए॥ ्रवी, साजल रे धनसार ॥ १ ॥ ---- न मे

कम करे, सतताया फल दीजो रे। जूखे ड ल पाम्या इदा, भागत हा हुने मीज रे।।
। मुणाशा एम निवा ने बतनी, चार वेला तिखेकी हो ।। प्रमानाप सपोगयी, स्वस्प पणे यह सीवी रे । मुणाशा से बिंग्य अनुक्रमें ताहप, पुत्र क्या जिएए एहे रे।। चार वेला ड ल यनुम्बन, पुरवकत गुण तेहों रे । मुणाशा साम्जी वनस्प अमुखन, पुरव ने क्या कापकारों रे।। वैरागे मन वालीयों, बुम्यों तव वनस्तारे रे । मुणाशा ।। सिंते एह सितारमा, परमने कोच न तो ने रे।। संसारिक ह्या कारमा, विर सम केवली बोते रे।। । मुणाशा सपम होवों माहरे, कम मनमा आते हो । आयु अपिर ए आपपों, जाणी । बुणाशा सपम होवों गाहरे, कम मनमा आते हो । आयु अपिर ए आपपों, जाणी हो वेले ने तथ, पूत्रमें सिंव पश्चिर रे ।। मुणाशा शा होडिकती विष्य सक्कार पक्ष नवा, सं तेम रे।। जिएथे एक संपमज्ञणी, बरता बमेशुंग्रेम रे।मुणाश गानुक्रव करी यक्ष तवा, सं पम सुरो देवाओ रे ।। सह कहे बन्य यनसारने, मुणे पातम तत्कों रे ।। मुण शा शा प्रमान पम आजक जत परवां, आउ मिणा युत प्रीते रे ।। विरम्यां विषय विरोपची, कड़ी आतम रीते रे ।। सुध ।। इशा एकोहताह पेर आवीथा, परिकृत सवि परिवारों रे ।। मुख विससे सं सामनां, भिननव मुर भवनारों रे ।। मुणाहणा, शा होका कहे तहते, हा विदर्भ सामित्र हा

साल प॰, पाठ्या तुम परसाद मगवमें माजता हो जात म॰। वेहंते स्वामी वस्तु सु पस्तु मुनावपी हो आव मु०, अगिनेमें नाले मेख तवे एक् बावधी हो जात त।। १।। मूप सवायत वाम एकेका वस्ता हो खाव ए०, नूप कहे अमे आसक अमूलिक शंक्ता ना हो लाख भए।। मन अभ्वायिक काज अभे पन वावक हो जात प॰, वाख ना हो लाख भए।। मन अभ्वायिक काज अभे पन वावक हो जात प॰, वाख नाम यन वेप क्षत्रने हो कठे हो बास कि।। १।। तव ते मुकी निसास किनीने अन्योत्मे एम आपया ति पातका हो बाल आप। १।। तव के लाह कवा पाने वस्ता हो जात कण। ॥। राजगुहीं में एक खप्पो नही कंबलो हो बाल वर्ण, कहो कुपा नगरने गाम होहे। एहपी नदी हो जात होण। नहाये ते वात गवाहे। सामजी हो खाल मण। मच देखिने हो जात पो०, तुमे पिण विफल प्रपास करावशो पेखिने हो लाज कण। मच हो खाल आप। ६। माहरे वह कमीहा सचे गुण होल्ती हो खाल स॰, बापु केहने वस्त राहे केहने नती हो खाल टाण। लावो को वत्रीहा तो सचली राखिए हो साल स॰, वान

भी सिक्षत तस मुख्य विचारी जालीए हो आता विशाशा तव बोह्या कहे मात कबत प्रविक्ष को नयी हो जात कंग, जिम जाणी तिम कार्य करो एक माहपी हो साज करा। वीरा के वात पर पूर्ण देवारो प्रम माते हो बाज दे, तीवम जाणी तिम कार्य करो एक माहपी हो साज करा। वीरा कि कारा। कि कारा करा। की बाज दे, तीवम करा। की बाज ते, तीवम करा ताय ते के वात कारा को ताय के तहने हो जाज गण हो साल वीरा हो जात है। मोतीना के मार जाय विद्या करा करा। जाणी पर होत व वातिया हो जात है। मोतीना के मार जाय हो पिया हुए जी हो हो जात ते, पानोंगे नहीं पार हीरा न मुखे होते हो जात है। मोतीना के जात हो। मोतीना के मार जाय है। हो। मारा। मिल मायकनो मेज कर्जो न हुवे करा हो जाव करा, पिड्रम विदिष्य मकार प्रमार होते। पर देखे तवा हो जात हो। मोतीना के जात हो। है। पर देखे तवा हो जाव प्रणा थानागे नहीं पार हीरा न मुखे होते हो जात है। है। पर देखे तवा हो जाव प्रणा थानागे नहीं वाचार कि पर होता है। पर पर देखे तवा हो जाव कारा। थाना तव ते हैं। विचार विचार विदेषों करिसे मुद्रा हो। है। साल हो। विचार विचार हो जात हो। जात कारा हो। जात कारा हो जात हो। जात कारा हो जात हो। जात कारा हो। हो। शिका देखों उतार हो जात हो। जात कारा हो। हो। शिका से अत्यारी जहते हो हो। हो। अतार शा पानके हत्यमें कि हो वाज करा। हो। है। व बोडमा कहे मात कबत श्रवि हि माहपी है। सात कण। वीरा मिश करी यो वधु प्रते हैं। लाल तैए, त पिषा बनइ सरूप नदापे न पहने हो सात ही०, तव ते

सिन्न वाह प्रकादी, तय कहें जां एम ॥ कंबतिनो व्यापार करेता, क्षमने तो हे नेम रे कि ।। प्रणाक्षा ।। प्रकाद ।। प्रणाक्षा ।। प्राक्षा ।। प्रणाक्षा ।। ।। प्रणाक्षा ।। प्राक्षा ।। प्रणाक्षा ।। प्रणाक्षा ।। प्रणाक्षा ।। प्रणाक्षा ।। प्राक्षा ।। प्रणाक्षा ।। प्रणाक्षा ।। प्राक्षा ।। प्राक हैं। मानव, सुखीया हे सह कोई रे ॥ जिविका, पुष्यताया पद्ध पेरतो ॥ पुष्ये बहित सफत पद्में महो सिंग, इक्य विमासी वेखों रे ॥ जाशाश ए आकण । ॥ सामतेने मृक्यों ज्ञा चर, रक्कवत इक बापो ॥सवाताख धन तेहनी पूर्वे होई वामें बापो रे ॥ जाशशा सामते

॥ दोदा ॥ भागम जाणी नृपत्तणो, गौन्तव् होठनो जीव॥ देव पुत्र नेहें करी, र चना को खतीव ॥ १॥ हा।बिन्यद्दना पर थकी, नृप मंबिर खने खास ॥ मिल माथिक गल ए क्समी, जिन मने रंगे गांवे रे ।न्नणा १ए॥ " ने--

हुव अशिक राजा निहां रे, जेरी मुवंहांना नाम ॥ वजहावे मन रंगशु, जेस ना कि म यकी बारामरे ॥ श्रीशिक महाराजा ॥ म्रांत क्यबों रे, करे प्राधिक दिवाजा ॥ न्याय के परमी रे, जूपि छति घरमी ॥१॥ ए बाकणी ॥ क्यबेला तव क्राविया रे, क्रोशिक प्र म मुस कुमार ॥ तिज्ञ तिज्ञ परिवारे करी, परिवृत एक रात न्वरार रे ॥ श्रेणाशा पंच कृत मित्र वसी घर रे ता देक रे ॥ श्रेणाशा चतुरंगी तेमा सजी रे, सुपरे करीने सार ॥ तेचनक गयवर जुप कर ते नुप शेशिक योग जुरंगी तेमा सजी रे, सुपरे करीने सार ॥ तेचनक गयवर जुप कर ते नुप शेशिक योग जुरंगी तेमा सजी रे, सुपरे करीने सार ॥ तेचनक गयवर जुप कर ते नुप शेशिक योग जुरंगी तेमा सजी रे, सुपरे करीने सार ॥ तेवनक गयवर जुप कर ते नुप शेशिक योग व्याप सामलों, वारे बुद्धियों निषानरे ॥ श्रेणाशा एवंचे मामजर यकी रे, आ योग शानि मामजर यकी रे, मुंग सार सकत कराये बागार ॥ मेमप तोर बुद्धियों अवरिज्ञ बादि सद्ध परिवार रे ॥ श्रेणा ह ॥ कि ष ॥ फमरञुवन फवनी तसे, वेग क्षित्तपी सिन्ध ॥ शा घरषी तत्त भाष्यो घवल, स्फ टिक रत्न सुविवित्र ॥ क्षीरसमुंड परे सुनग, विच विच कमल पवित्र ॥ध॥ ब्रावासे ब्राप्ता ब्रविक, सूर्पेपरे सुप्रकास ॥ पैचवर्ण मिणि तेजपी, सुंतर होपेने खास ॥धा | मंत्रप रच्या, चिंहु दिक्षि तोरथा तास ॥श्॥ मधिमय माला जाविया, मुक्ताफलना की ए केंगी) (संकानो राजा ा दाल ११ म् । ।

मार्गाही रिक्ष्यामयी रे, किम श्वागारी एवा ॥ एता विन समें यहदी, नवि दीठी हुती हैं।

मार्गाही रिक्ष्यामयी रे, किम श्वागारी एवा ॥ एता विन समें यहदी, नवि होठी हुत्ता है।

मार्गाहोगाशा नव त्रवाति मरम जूमि जोते लाके रे, विस्मय मनमें होय ॥ मुष्ट के प्रति सम्मान समें होय ॥ मुष्ट के प्रति होत्सा कारों ने ने ने जुन मार्गाह के लावे खें के प्रति ने मिर्मा के प्रति होता होता ॥ स्वामी गवा है।

मार्गि ते सिर्माराशा तव नक्ष कहे रुपर तुमे, पाठ वारोने मदाराजरे ॥ श्रेणा १०॥ हो विस्ति वारों होई वेव खंकी है।

मार्गि ते सिर्माराशा तव नक्ष कहे रुपर रुपे, अमना ससी वात ॥ स्वामी पवा रे रिक्तर, जिल्हा मार्गि जोरिक मार्ग सावान रे ॥ श्रेणा १३॥ अमर्प ततक्ष्य मुक्ति रुपे वारों ताम रे ॥ श्रेणा १३॥ अमर्प ततक्ष्य मुक्ति रुपे का मार्गि मुक्ति रुपे वारों रुपे स्वाम ॥ स्वाम । सार्मिक मार्ग सार्मि मिर्मा वोक्षारा । सार्मिक स्वाम सम्मे स्वाम हो हो मार्ग मार्ग स्वाम । स्वाम हो स्वाम । स्वाम हो स्वाम । स्वाम हो हो सार्ग मार्ग स्वाम हो हो सार्ग हो स्वाम हो स्वम हो स

ह १०॥शानावार्यः-म्यासोम्बास, पासा, श्रीश, पाषी, उम, राजा, सोनी, माक्कड, बहुन मने बिदादी, ए सर्वे भाषणान होष ॥१॥ श्रावी श्रणमो एहने, मनपी मूकी माना। इने

[।] रात्रा कानना मूना होय है, मारे तेमनो बिनय छाषहण करनो जोइए

वयण सुणी विप सिरेंका मातनों, चिंते काषिकुमार ॥ मुज क्रपर विष स्वामी पणे घठे, विग विग ए भवतार ॥ झाजिकुमर षाद्योचे चिनमें ॥१॥ ए भाकपी॥ में नवि छोधो रे धर्म ॥ धर्म विमा परवंश वधन हुवे, करे तव माठा रे कर्म ।।इगण॥१॥ जे प्रवृत्त ते रे सुख हो नोगवे, परवंश श्वःखनी रे मूख ॥ स्ववंशपणाना रे सुख जोते ख ॥ बाल १२ मी॥ (सरसित मातारे, दियो मति निरमखो ए देशी) स कन्ना राजवी, एहची विनय निवान ॥॥॥

के, परवंग सुख पक तूत्व ॥ग्राणाश॥ यत ॥ खनुषुत्रधुत्तम् ॥ सर्वं परवंगं डाःवं, सर्व

मास्मवद्यं सुर्वं ॥ एतडक समासेन, तक्ष्यं सुर्वं डे. बयो ॥ १ ॥ जावापी: –परवर्वपणे वर्धुं डःखं ठे छने पोताने वरा पणे वर्धुं सुर्वं डे ट्रंकामा जे कह्यूं, ते सुर्व्ध ड खंदु तक्ष्या छे ॥१॥ एटवा दिन दार्ग स्वामी सेवक तप्पी, में नीव जायी रेवात ॥ आज सुणाज्यों रे माताये हंबा, एद कट्टक अववृत्ता ॥३॥ तो देवे मातारे देवपण नदीपतुं, नवमों वसुरा रे नाप ॥ तेष्ट् पदी कर्स्युं सिवं जोयने, सावशुं अविज्ञत साथा । हाणा। ॥ १ माताये द्राप्ता तत्त्र पदी कर्स्युं सिवं जोयने, सावशुं अविज्ञत साथा । हाणा। ॥ १ माताये वस्त्री कर्माये त्राप्ता । इमारा निष्यं करी श्राप्ता । इमारा निष्यं करी श्राप्ता । इमारा निष्यं कर्मा निष्यं माताये जावी जनकों तिल्या वस्त्री निष्यं मात्रा । इस्यों श्राप्ता । इसाथे सिव्यं समीव । सावाया । साथे मात्राच ना अपक्रम जीवकत्त्र मात्रा नावाया । अ

ा सी शिणिक रूप कहा नीवो, ममर सहस्र अनुकार ।काणावा। वर्ष वर्री तकां मापणे, के नेसास्त्रो ततकातः ॥ भातपपी जिम मातवा परचेत, तिम मथेव विह्यादा ।।काणा छ ॥ के नेसास्त्रो ततकातः ॥ भातपपी जिम मातवा परचेत, तिम मथेव विह्यादा ।।काणा छ ॥ के नेसास्त्रो ततकातः ॥ भातपपी जिम मातवादा ।। परकर फरस न ए साहसी शके हो के जाणे एड सेव ।।काण पड़ सेव ।।काण पड़ सेव ।।काण हो विह्यादा ।।काण पड़ सेव ।।काण हो विह्यादा ।।काण पड़ सेव ।।काण हो विह्यादा ।।काण हो विह्यादा ।।काण हो विह्यादा ।।काण हो ।।काण हो विह्यादा हो विह्यादा ।।काण हो विह्यादा ।।काण हो ।।काण हो विह्यादा ।।काण हो ।।वाण हो ।।वाण हो ने हे ।।वाण हो ।।व

E । एक्टने न्याच्या र ॥ए॥ (दव।। मध्ये त्य मुद्दी मरी धनसार ॥ स्नान पडी मुझ्डी तत्र ॥ टावे चंग ॥२॥ महीनया मर्बन ऋ , स्तानतेषे आगार ॥ १ ॥ जनजोबा नहीं अणिक छहें ने दित्र ॥॥॥ सुर वेख ॥ त च अध्य नज्ञ सुद्धे सबरधी , ब्रहब महा Ħ,

पात भर वापसीक़ बीजीए ॥ झावा केवा केरी शाख राक्तेकी तीखी घाख वाटकुं व का अप मार वापसीक़ बीजीए ॥ झावा केवा केरी शाख राक्तेकी सरायर्थ हैं सार एसी खीजीए ॥ अप गंगाजव बीया, वासित सुर्ज सुवास है ॥साण। तांबू से सार एसी खीजीए ॥ ।। अप गंगाजव बीया, वासित सुर्ज सुवास है ॥साण। तांबू से मार वास है ॥साण। बात हो ॥ सायां है ॥ साण। बेरा उच्हाते तेरमी, कही जिनविज के अप अप संहा ॥ पार वाले हे ॥साण। बेरा उच्हा हो सायां है ॥ साण। वेरा वाले हे हिन पार ॥ हे हिन सुर्व ॥ सायां है ॥ साण। वेरा हे हिन सुर्व ॥ सायां है ॥ साथां है हिन सुर्व ।॥ ता साथां ॥ साथां मार वाले हे हिन सुर्व ॥ ॥ सिर्व वाले हे हिन सुर्व हो ॥ ताथां सुर्व हो ॥ ताथां सुर्व हो ॥ ताथां ॥ साथां ॥ हो हो हो ॥ हा छा उच्हा सुर्व हो ।॥ दे हो सुर्व हो ॥ साथां मार हो ॥ हा छा र धे मी ॥ (पार माथे धंधरंगों पार सोवनरों होगखों साइज ए देहों)

सुणो बाईंडी षग्वात ब्रानीपम ब्रमतणी साध बी, करू वीनति गोव बिराप सिलो सो सिलो पे ब्रिंग साथ जी। तुम नवन सुगुण तिषान सोजापी सेहंसे साण, एष इंद सिंस अवतार सुसार ने वेहरो साण। १॥ करतो कीहा मन कोड सुजोडपी सर्वेश संवा साण। इञ्जापी पर्वेश साण, घरतो मनमें विभागस पावास मोही तवा साण। इञ्जापी प्रवुकार सुवार ने साण, घरतो मनमें विभागस पावास मोही तवा साण। इञ्जापी प्रवुकार सुवार ने ता0, बरतो मनमें विमयात भावात महि तवा साणा इञ्जाति भनुकार मुवार

अ के कहने साए। ६ ॥ इद्धेन कोई आसतम्यान के ग्यान हीये वहां साए, निया करी झम छ छपर राग हतो ने सिव खबारे साण। जाषाजा मन परिणम चवासी एहनो सा०, इचे उंदेरा नेया संयोग मगन नहीं केहने साण।शा एहनो कम छपर स्तेह कहां किम मा बचे सा०, ए आस्वर केरी धाम भाराम नसावक़े साण। श्रमने मनमें उद्देश क्वायो प करन्यो सा०, हो एत्व कमें बिवाय का हवां नीययो सा०॥ ।। ति मोट करी ए श्रमण एकाप्त सा०, हो एव कमें बिवाय का हवां नीययो सा०॥ ।। ति मोट करी ए श्रमण हवां होमे जातने सा०, हे पिए मन हे श्री जात कहें हो मातने साण। पठे जोई शाण। तव जा हम्भर बात सुखी विश्वम कहें हमरती, जिहां वेदो इगलिकुमार तिहां शाण। तव जा बहुमर बात सुखी विश्वम कहें हमरती, जिहां वेदो इगलिकुमार तिहां हाए।। तव जा बहुमर बात सुखी विश्वम कहें हमरती, जिहां वेदो इगलिकुमार तिहां शाण। तव जा महिला हिला हिला विश्व विश्व का बाही है जे इन्हें सुस्तेह वात्मे करी हु०, कहीं कार विलोकी उद्दी हु०॥ १०॥। आपार विश्व सरहाट छनाट न नाहरे हु०, धारा हो हु०, तुज मुख देखी विस्तीर जीजन पिख नीई करे हु०॥। न करे विद्य हु०॥। हु।। होगार हराहिक निहे गरे हु०, करे ठहन परी मन ड ख विसम हम निर्मे हु०॥। हु।।

भी शा माट एवडा छ ख षापे हे एहने कु०, कोइ दीतो होग क्याराघ कहीजे तेहने कुण।

श्री पिया तथवीने समकाव कहो किम खीजीए कु०, खीर नीर पर एक तार प्रियाद्य की

जीए कुण। शा ए महतावंत महेज्यतार्थी हे वाविका हु०, सकुवीणीमा शिरदार वच

म मिताविका कु०।। परणी जे पंचनी साखे ने पाववर्षी जही कु०, देहने विया धवतु

हे कु०, योगेंड पर वरी आज वेदो मन हुठ कुरी कु०।। कही वीदमी डाव रसाव ए चीया

श्री वाजीं कु०, इम जिनविज्ञये मन रंग कब्जडुम रासनी कुण।र॥।

श्री हा ।। देहि ।। पहचे ते राजगुद, बसेगोय मुनिराज ॥ समवस्त्रा सुषरे तिहा, पण्ण

श्री ता हा समाज ॥१॥ वनपातक खापे तिहा, बक्जपिका ने मा साविकुमर ते साज

सी, ब्राविक वह सदेग ॥ १॥ जिम रसवित सवि नीपने, युत मिने रस होय जेम ॥

श्री ता माविका है है ।। पर स्था स्वयोगहों मेम ॥६॥ वेई तास व्यामपी, हप रप मेसी है है व ॥ परिद्वत बहु परिवारयी, गुरु वेदन ततखेव ॥भ॥ पाच श्रानिमम साचवी, : मिषक, निसुषो सुगुरु तमीप ॥ए॥ तानीप ॥ वेहाना अमृतथ्।

हैं हैं, त्या प्रमाण करें मित्मूढ़े । फ्रणालुण।३॥ सावद्याचार्य तेशी परं, बती जिम ज से माली निर्मेष रे।। एकेक बचन नष्ठापते, पाम्पा संसारनी पथ रे।।पाण।सुग। धा तह इ. होने वर्म झावरे, ते विरत्ता इयो जग जीव रे।। भावरी पिषा झवर्षे करे, ते इ. ख तहे से पाणी स्वैवरे।।तेणालुण। ॥। आवरवा का वोहिता, मुनिवरना पंच प्रमाण रे।। वैधे से वरी ने आवरे, ते पामे पव निरवाण रे।।तेणालुण। इ॥ जन्म जरा नय रहितते, स्था से तर शिवमेदिर रूप रे।। केवत्रज्ञानमयी सद्म, तिवर भजर भमर विद्ये रे।।तिण।सुण शे तिदेने काइ काम रे।।वणासुण। ए।। पंच महावततो हथे, सुषो लेहापकी मुवचार रे।। (इस्तिनागपुर वर जाबुं ए वेद्गी) नमता सथल सैसार रे ॥ षायेक्षेत्र बनम कुले, जन भति वेहिलो, जव न ॥ काल १५ मी ॥

नणासुणा १०॥ राजिनोजन ठाढवो, त्रिविषे त्रिविषे घरु पीर रे ॥ ए सुनि घत विवरी

वेदना, जीव सपदाने जोप ॥१॥ यतः॥ शादूसविक्तीहितदुषम् ॥ युक्तक्षीपफर्तं त्यजेति बिहगा ह्यव्केतरः सारसाः, निर्मधेकुनुमं त्यजेति मधुपा दर्षदकात सृगाः॥ निर्द्ध्येतुरु प त्यजेति गविका घटेन्द्रपे तेवकाः, सर्वेः स्वार्षेवहाजनोतित्रसते में कस्प को बह्वनः ॥१॥ जावार्ष –पक्षीट्र फल बिनाना बुक्रनो, सारत पक्षी स्काञ्ज गएला सरीवरतो, न्र मराज्ञ निर्मेष फूलनो, मृगो बलता वननो, गणिका निर्मेन पुरुरनो छाने सेवको राज्य घट राजानो त्याय करे हे ए प्रकार सर्वे स्वाधने बच्च के जो के, तेले एकेकमी छपर हेत राख हे, तपापि वास्त्रविक रीते जोता कोड़ कोच्डु वहालुं नधी ॥१॥ ते माटे मतुमति दि या, मपा करीते भाष ॥ संवय तेड़े सिंह परे, टालूँ जब संसाष ॥१॥ सुपी वयल संघ् क्या, आवरो नावे पक्ष वीररे ।।व्याणासुणारथा। साझुतयी सुषी बेहाना, समज्यो चि च शाक्षि महंतरे ।। ब्रासिक पवारण ए सहू, कहे साधु ते सघलो ततरे।।कणासुण।१०॥ गुरु गदी परे ब्राविया, रपे वेसो शाजिकुमाररे ।। चीपे द्यव्हासे जिन कहे, पन्नरमी ॥ देखः॥ नदाने मणमी कदे, साजव मोरी मात ॥ सायु बचन झणते बही, बी ती सघवी वात ॥ १॥ स्वारपियो संसार सबि, परस्वापि नहि कोष ॥ विविध विदेवन सम्बन्धार है ॥परणासुणाश्रा

ससार

कवाय न वारमा 🖈 हैं। मद मीठ अतोव के ।। जाशाशा सिंहपरे बत आदरी, सिंहनी परे हो पांचे से प्रमाणे के।। जी संपम बेटे लहरके, तस जीवित हो संपम अपमाण के।। जाशा श्रा हो वेदमी संपम बेटे लहरके, तस जीवित हो संपम अपमाण के।। जाशाशाशा हो वेदमी हैं। वित्ते नीर सिहिंदा हो सुदीवाने ने के।। नृप उच्चो वेसते, तें जाशी हो ते देगी हैं। वित्ते ।। जाशाशाशा हे। ते अपो बोत वय सों, आवक बत हो थरे। सुर्पे वित्ते ।। वित्ते ।। वित्ते ।। वित्ते ।। वित्ते हो महोंदे | वित्ते ।। विश्वे ।। विश्वे ।। विश्वे हो सहोंदे | वित्ते ।। विश्वे हो महोंदे | वित्ते ।। विश्वे ।। विश्वे हो महोंदे | वित्ते ।। सहोंदे | वित्ते ।। सहोंदे | वित्ते ।। विद्यों ।। विद्यों ।। विद्यों ।। विद्यों ।। विद्यों हो हो ।। विश्वे ।। विद्यों ।। व

तमरण नत्री न रे । स्नेशा केहने नोजन पिरसीने, बेखवधुं जाववी ज रे । स्नेश ।। एष्ट ।। रेशा स्त्री पीयरने करों, सासरे मुख्यी थाय रे । स्नेशा प्रंप विष्य पीयर की हों, जेंद् ।। रेशा स्त्री पीयरने करों, सासरे मुख्यी थाय रे । स्नेशा क्ष्में कहा किम विसरे केत रे ।। होंगा। तिया डु खबी मुज नयराषी, नीर फरें डे एकति ।। स्थित कायर ।। स्था काय की स्रेसरे, नु क प्रमञ्ज सुण वाच है।। स्त्रेश ।। रेशा से लागी जगमें यपा, ते किम करेय विचार रे ।। स्त्रेश। जेंद्र विचार करी रद्या, ते कायर किरतार रे। स्त्रेशाएण ।। रुशा वाच्यनी वात रे ।। इतो, खार विये जिम कोय रे ।। स्त्रेश प्रथा सामावो, मुज वाच्यनी वात रे ।। स्त्रेश। योवन वय युवती नयी, ठैसे ते ब्रालियात रे।।स्त्रेश। एशा कव्यही एकते मू को, करे विमासण वीहा रे ॥ कोडिंगमे पन परिवेर, मुज वाच्य सुज्याहार रे ।। स्तेश। एश। एशा रक्ष्में कार मालीया, जानिया मंखासय जाय रे ।। स्तेशा ए ब्राव्सिताये प्रमात्रों, वेलो किसि विधि होय रे ।।स्तेशा वर पायवा, रामें सम कक्ष तार रे ।। स्तेश ।।

यझो समज्यो घीर रे।स्नेण। चोषे डब्स्हासे समरमी, जिन कहे ग्रुषा गंनीर रे।स्नेण्ए० इए।।

तुज सीरेखी बितमीठिका, ष्रवर न नारी होय ॥सणा जे तारे नवजल घकी, सवज स बाइ सोय ॥सणाष्टणाक्षा में नाहरो वच मानीयो, सुपरे वरी संवेग ॥सणा बित देखा स्वो हेजघी, टास्पो मन छदवेग ॥सणाषणाशा वय वजी जाहो वेगघी, बलधी ईस्पि

ासणा विषयारस वाहे पके, नोगविया बहु जीना ।सण। घण ॥११॥ तृपतो जीव बयो । कि नहीं, खविरातियी कोड़ कान ।सण। तेष्वन्त्रणी तु सुरंग, सुपंरे हृदय निहास ॥ सण ॥ विष्टे नहीं, खविरातियी कोड़ कान ।सण। तेष्वन्त्रणी तु सुरंग, सुपंरे हृदय निहास ॥ सण ॥ विष्टे न प्रवास ॥ कान माथे नावो माहरे स में हो, कावो जनम काम ॥भेण। कोव करजोठी कतने ॥१४॥ ए षाकपी ॥ पचनी साखे में पालव महारो, ते किम मूक्यो जाय ॥ मीण। ते ने ने पालव माथे, तेवो तुमने सहाया। विष्टे माण । साव विष्टे साव । मीण। तिरोप सुन्त्रच माथे। ते परं, अमचे हियो साव । सीण। काण। है। अवस्त को आषार है, खमचे हुयो से ते परं, अमचो (पण षायोच ॥मीण। काण) हुया साव । स्पातिया साव विष्या , अत्र विद्य जनसाव ॥ सिण। हुये पार ॥सिण। त्याप कियो तिरोते पुरस्त्रमं, परिम्रहत्या नहीं पार ॥ साव विद्य जनसाव ॥ सिण। हिणा । वोष्टे छव्दासे ष्टार । सिण। काण को स्वस्ता साव। हिणा परिमाण। हुये गय रय ग्रह हु तिम, विद्य पव होता ॥ वोष्टे परिमाण। हुये गय रय ग्रह हु तिम, विद्य पव होता ॥ वाणे होता । अधि देहें, विद्य पव सहस

।। ढाल १ए मी ।। (बेबे मुनिवर बदोरपा पागसा जी ए वेहो)
एढ्ये तिहा पुष्यमूगोमे भाविमा जी, जनपति वीर जिष्ड विख्यात है।। समयस कि मादिन मुप्त स्वो जी, तेजे करी दिन्य साकृत है।।एद्देशाशा प्रमक्ष्मी। चोत्रीका कि शतिक्ष्य सुवर होग्नता जी, भए महामातिहाये ग्रहाम है।। सबस जोयपाने इंच्व्व कि तिहा जी, जाने तिम चमेचक अजिशम ।। एए।।।। विग्रहों विश्व को स्वा कि क्यापण | कि ने मादिन को को हो।। चीवीहा चार से विश्व को स्वा के ने साम के ने साम के ने साम के ने साम पर पर पर पर हो है।। सिमाय सिहासन होने पण्डा जी कि मर पर पर पर हो है।। चीवीहा चार होंजे वेबता जी, नाम तब तरिण सहस है। क्षे कंचन केब्रो सुप्रकारा।शृशवपन क्रोड निधिमें रहे, जप्पन क्रोंब डयवसाया। ठप्पनकेड ब्यांजे भी बने, कर्प संख्या परिपूर्ण ॥ इत्यादिक भी बने, कर्प संख्या परिपूर्ण ॥ इत्यादिक भी सिव क्रिके, उन्ती क्षेत्र सूर्ण ॥ धुरमणि आदे भवर पिपा, रखराशि रमणीक ॥ नव शिषि परिप्रद सक्ति, तृष्णेरे तजे ते ठीक ॥ शास्त्र पर्यात स्त्रों तत्र संयम होवा काजा। विते जो सुज नान्ययी, समवसरे जिनराज ॥ शा

सम नूर रे ॥ यह्य विराजे चिहु दिक्षि बारखे जी, देव विनिर्मित जनवी पूर रे ॥ एष् ॥धा चीविह सय संगाये परिवत्वा जो, समवसरपामें श्री जिनराज रे ॥ वेसी सिहास

% भे ने मेध तथा परे जी, यस्ते वधनाग्रुत जीव (इत काज रे ॥ए०॥ प्।।परपद वारे झावे औं प्रेमछीडी, वादीने वेसे विनयपी ताम रे ॥ सीजेले सुपरे किंवसाधन जूषी जी, वेहाना

अज्ञहत गुण खिसराम रे ॥ ए० ॥ हा। भारामिक दीवी जाइ चपामपी जी, जूपति श्रेषि कने छति छन्दराम रे।। सम्ज्ञते बुप ब्रिने ब्रदे जी, कनकरसनाविक दिंगे खीवंदा कि को छति छन्दराम सिंह की जो हो। वर्षने को स्वाचा विकास को जो हो। वर्षने मिला वर्षने को स्वचा जिन का जो रे ।। वेदनी प्रसिक्तापा मन हूती पर्षा जो, ते पशु पाछ घर्षम जिन्दर रे।। सांदिव भाषी जो, ते पशु पाछ घर्षम जिन्दर रे।। सांदिव भाषी में स्वच ने हण्या थाते ग्रेष्ट ।। एवंदा सिंही मिलावो जोग ते दूर रे।। सांदिव भाषी हो। प्रस्त सांद्वा चीर जिप्पेते जो, कमेन हण्या थाते ग्रेष्ट ।। सांद्वा सांदिव जा कुत्री हाटपी जो, वेद्दे घन सक्त जो, प्रमेत पिण खातिह विकास है।। एवं।। पढ्या तिम छ्या कुत्री हाटपी जो, वेद्दे घन सक्त प्रमार ते।। सम प्रदेश को नस्तार है।। प्रमार के आप सांदिव जो, केदाप समरावे की नस्तार है। या ना स्वच का कावपान है। सांदिन जो, संप्रवे तिहा सिहासन सुप्रमाण रे।। स्वाचन सप्ता सत्तरण पाविष्टा हो। केद सुख देश्यो तुम कच्याप रे।। एवं। रे ।। इन सांदिव जो, संप्रवे तिहा सिहासन सुप्रमाण रे।। स्वाचन सप्ता नित्तर स्वाचन सप्ता नित्तर है।। हो। रे ।। इन स्वचन प्रमार होमकाव्यो सुम कच्याप रे।। एवं। रे ।। इन स्वचन प्रमार होमकाव्यो होम कच्याप रे।। हो।

त्रपकुमर पिण माबी इम केंब्रेजी, घन्य घन्य प्रमोहाहि सुजाए रे ॥ घन्य घन्य प प रिकर रामातयो जी, पतिवृता किंद्व ते एड् प्रमाण रे ॥ए०॥१ श। ए वय ए घन एड्वी प्रमाना जी, तजीने जे लेवे संयम नार रे ॥ तेतो न्यायेची हिगबरमधी वरे जी, इम सह अपे नरने नार रे ॥ ए०॥ १ ॥ । बाजा तिहा बाजे विविध प्रकारना जी, जय जय घोले

णावे आति आविलव ॥ ए ॥ पय प्रषामीने बीनवे, मे तुम वयष

प्रमाण ॥ तो ते हवे तुमे माहरों, बंदित करों सुजाण ॥ ह ॥ षत्रे विण हण वयण्णी, वोदो सप्त ससार ॥ ते माहे हुं पण द्वे, ठीमी विषय विकार ॥ ॥ माता मोटम मन करी, दिसे एवं, किछ विषय राखें गढ़ ॥ विर समीप अत प्रधे, राखें सप्त किछो ॥ ।।। जहां मिल्या, सहजारी ससेने ह ॥ ॥ हिंते एवं, किछ विषय राखें गढ़ ॥ बहिन कोवी विहुं मिल्या, सहजारी ससेने ह ॥ ॥ ॥ शे ॥ पर ॥ व्याप्त विषय विकार ॥ अपमाने पुरस्कृत्य, माने हत्वा च प्रधत ॥ ॥ ॥ ।। विवार कार्यक्रो हिं मूखेता ॥ ॥ ।। कार्याप्त कार्यक्री न हा कर ॥ ।। वार्या क्ष्मे बुक्ता ॥ ।। आपाप्त कार्यक्री हें मुखेता ॥ ।। मावाप्त कार्यने न का कर ॥ ।। वार्या क्ष्मे ॥ ।। वार्याप्त कार्याप्त कार्याप्त कार्याप्त करीने ॥ ।। वार्या क्ष्मे ॥ ।। वार्याप्त करियो ॥ । वार्याप्त मुक्ये वार्या ।। वार्याप्त मुक्ये वार्या हे ।। वार्याप्त मुक्ये ।। वार्याप्त मुक्ये वार्या हे ।। वार्याप्त मुक्ये वार्या हे ।। वार्याप्त मुक्ये वार्या हे ।। वार्याप्त मुक्ये ।। वार्याप्त मुक्ये वार्या हे ।। वार्याप्त मुक्ये वार्याहे ।। वार्याप्त मुक्ये

भा प्राय जा प्रत, तक पास ततकाश ॥१॥ जत्ता प्रावको केगव्य।, तनु उपजक्ष रोग ॥पंचिद्य में वर्ग ब्रार्ग, तक नहीं धर्म संयोग ॥३ ॥ यतः॥ वर्गहेतविक्षितवृत्यम्,॥ यावत स्वस्य मिन अर्थारमे, तक नहीं धर्म संयोग ॥३ ॥ यतः॥ वर्गहेतविक्षितवृत्यम्,॥ यावत स्वस्य मिन अर्थारमे वर्गित्यम् वर्गित्यम् कर्गित्यम् कर्गहेत्यम् स्वायम् अर्थारम् स्वयम् ।॥ स्वयम् स्वयम्यम् स्वयम् स्वयम्यम् स्वयम् स्वयम्

बारे एए के बचन विसासनी रे की Ilmon!(॥।
॥ कोहा ॥ माताये धुत स्मेहपी, विविव फक्सा विकाप ॥ तिम स्त्री पिण सचनी कि
॥ कोहा ॥ माताये धुत स्मेहपी, विविव फक्सा विकाप ॥ तिम स्त्री पिण सचनी कि
सत्राहने हु करे, मनमप बुपना बापा ॥श। तब माता कहे ताहरे, झों हे मन शाबोच ॥ इ
शासि कहे संपम जया, हु कर्र सपस संकोच ॥ श। माता सिते मुज पकी, भ्रनुमिति
शासि कहे संपम जया, हु कर्र सपस संकोच ॥ श। माता सिते मुज पकी, भ्रनुमिति
शिक्त के नहाने शाम ॥ श्रनुमित यो दीक्षा तथ्यो, झांतिज्ञप्यो सुखकाम ॥ ॥ ॥ तब चन्ना म
शिक्त नहाने शाम ॥ श्रनुमित यो दीक्षा तथ्यो, झांतिज्ञप्यो सुखकाम ॥ ॥ ॥ तब चन्ना म
शिक्त नहाने शाम ॥ श्रनुमित यो दीक्षा तथ्यो, झांतिज्ञप्यो कोमज स्वरे, एम करे आर सिता ॥ ॥ ॥ ॥ शा शासिकुमर संयम मोह, ईमी सपक सत्तार ॥ के नज़ो वाला के वो, शामो है
शी हिपितार ॥ शा शासिकुमर संयम मोह, ईमी सपक सत्तार ॥ ते नज्यो वाला होवव दीक्षानो म
शिक, श्रमे करहो इपो जाया ॥ ॥ ॥ ॥ शा श्लोहरया पढयो तिहा, देई लाक्ष दीनार ॥ कुतियाव विकार आप आपि आपि आपि आपि आपि आपि ।

॥ बात ११ मी ॥ (वेद्गी कूबखहानी)

नारक भारत है। समेही साजना ॥१॥ ए थाकपी ॥ शा मोटे सप्तम मुहो रे, क्या रे, वेतारे तेपिवार ॥ समेही साजना ॥१॥ ए थाकपी ॥ मुज वाहनी ठाह ॥सणा शा पोतन वर माह ॥सणा ने माह साथ ॥सणा वर्ग मरण जपपी सवा रे, ताले हो को कहा वाच ॥सणा ॥ भाष्टि साथ ॥सणा नाम साथ माह ॥ सणा भारता वर्ग महि साथ ॥ सणा भारता वर्ग महि बाव ॥ सणा ॥ भारता वर्ग महि साथ ॥ स्वाम साथ साथ साथ साथ साथ साथ साथ माह प्राम ॥ है। स्वाम साथ साथ साथ साथ साथ माह प्राम ॥ है। साथ साथ साथ साथ साथ माह साथ ॥ श्रीतक सवि परिवारशुरे, आवे हााबि श्रागार ॥ सनेद्री साजना ॥ ग्रम्ने आपौ

िरे, गुज्फताम मुसिदोप।।मण।।११।। झासिकुमरने निहातने हैं, शिविकामाहि वेसार ।।मण।। वनीशे नारी तिहारें, वेतो करी हिएयगर ।।सण।।११। सहस पुरुप वहें शिविका हे, झो ितत छुचि करि गात्र ॥सण्॥ आगल हुप गय रथ जाता है, तिम बत्ती बाचे पात्र ॥सण् ॥१॥। वेदीजन जप जप करे हे, बोले विरुष सुवित ॥सण। वाजिज बाजे झिति घषा है, सोह्व गावे गीत ॥सण्॥१थ॥ बात देवे षाचक प्रते हे, जे मापे ते सास ॥सण। एष्ट्रें गौ

ी जड़ देवता रे, उड़व करे उच्हाम ।।तणार्था। राजगृही रिलयामधी रे, शिष्णारी तिव तिव ।।तण। शाकारो देवडेडजी रे, वाजे ष्वतीषी बटेव ॥ शण ॥ १६॥ ठत्र घर दिर क परे रे, मेघानंतर देव ।।तणा घामर ब्राति मोहामधार रे, बीजे विषिषी हेव ।।तणा १७॥ १३ थिएक मेचन गज चढी रे, बात्ते परिकर्जुन ।।तणा ब्रवर विदे गौजड़्जी रे, देव स ो जातिकुमार गिराण घन्नोशाब पिष्ण स्वित्यो है, भावी मिल्या तिषिवार ॥सण ॥ १० ॥ १ कुम्में जिम मिसरी मिस्पे हे, द्वांव मिषक सतेज ॥सण॥ तिम शालिनइने तियो समे १) है, पन्नाथी वच्चो हेन ॥ स॰ ॥ छ? ॥ समवरण खान्या वही है, महोटो करीय मनाष रूप प्रयुक्त ।तरु॥१*०॥ मधितमय शिविकामें निहा* रे, पाठव जन्त्र मात ॥तरु॥ मेघतपी परे दरतती रे, वसुपकी भविक विख्यात ॥तरु॥१ए॥ इत्यादिक ब्रामचेरे रे, चाष्ट्या

से सिंधु हे तुम पात ॥।॥ डाख बीगे नयी सुपनमें, सुखोपवित डे एह ॥ तप जप करती है। एहने, जाजवज्यो घरिनेह ॥॥। पुम जमाई पुतिका, बाति ज्ञान जमा ॥। हो बीने से सुखोपवित डाज माहा। हो दियंते सुपरें करी, देता लागे बाज ॥॥। पुम जमाई पुतिका, बाति ज्ञान जमाहा। हे तियंते तुमने ममें, वहाराज्या सीछाह ॥॥। इम कही वादी वीरो, पुमाविकाने तेम ॥ वादी वहु ते तिने में, तहा प्रचा ॥।। हम कही वादी वीरो, पुमाविकाने तेम ॥ वादी वहु ते तिन वानी, वारिम विद्या ॥॥।। कारिजा कार्या विवास ॥॥। कारिजा वार्या विवास वार्या ॥। वास १४ मी ॥ (सुखने मरक्के ए देही)

तव महा नव महा नवि मां, सुखवी इम नाखे ॥ वाह सम्बतीने समजावे जी, सुवप हैं इंकरी वाखे ॥ फक्या मारम अनूप तुमारों जी, मुण। खाव्या पुत्र जमाई भमारा जी।। हिं ह्या जावाय पुत्र नात्या सुमहा वार्डजी, मुण। खाव्या पुत्र जमाई जी।। हुप हैं ह्याज आगये ममेरस दृग्या जी, मुण। एहनी तुर्घ पुष्प कमाई जी।। हु। ॥ होहिनी हिंहो। हा। हा।। हा।। हा।। होहिनी

जोता घए। वाट जी, मुणा षह निधि करता डाबाट जी गिसुणा तेद् झाञ्या पुषय पसा सुणा घमो शायिज्ञ विचारेजी मुणा बीर वचन इवय सैनारे जी 'गसुणाए।। तव ति हाथी पाटा बितपा जी, मुणा पिष्ण किएाही तेब न कलिया जी गसुण। मारगमें मिखी महिपारी जी, मुणा विजयानत पर सुपियारी जी गसुण। २० ॥ बेसि कारिबने झझसित

क्षि शह्य रे ॥ गौतमस्यामीने साथे तेयने रे, चक्का वैनारे थड़ निर्मेख्य रे ॥आणा १॥ हा। |भी म शिनाने पडिनेशी तिहा रे, कीषा सपारा धणाच्या क्यांच्या |भी स्वातने प्रेमझुरे, बारे झरपाा करे कृषिराज रे ।।भाग।।।।।। लाख चोराझी जीवायोनिने रे, खोनेने खमावे हुन नावरे ।। हानु मित्र सने सरिखा गणे रे, विकरपा राखीने इक जाव रे ।। भागाए॥ पदोपगमन खरात्त्य खादको रे, जाबद्धीवद्यों करि जोर रे ॥ काया योज्ञाराबी काची आधानेरे, इक्षि वक्ष कीया देखी चेररे ।।आणाक्षा मदने मदिरा सम जाएषी बो डिया हे, राग हेपने राख्या ते करी दूर है ।। जयनो जय राखोन निनेय यया रे, खेले ते तमता गगने पूररे।।आगाशासुमतिगुपतिने चित्तमादै घरीरे, प्रावे जावना बार रे भगर ताद रे॥ श्रविक क्रम्बम्धी आवी वाववा रे, मनमासी घरती प्रति आब्दाव़ रे॥ भागारणा बावीने वावे जिनवर वीरने रे, तिषिक् विसबी परिय उच्हास रे ॥ सांघु स वेंने निरखे खातिहा रे, शाबिजड तिहा निव देखे पास रे ॥ षाण ॥ ११ ॥ यन्न मुनिवरने टवा जावे श्री जगनाय रे ॥ आष्णाष्णा बार्जिन बांने विविष प्रकारना रे, गाजते घन सम

पिया दीना नद्दी रे, जयन्यो मनमें जांदोने विज्ञ्चेप रे ॥ शु किशा ध्यानाविक्ते लेयने रे, बें बेंग हो के तुन स्थात देख रे ॥ भागा। शा पूठे करनोही जिनपति वीरते रे, शासिज्ञ्ञ मनो ने विज्ञात सर्वि विवर्षी कहारे रे, जहा लगे पहोत्या अपस्पा मन्ने असार सर्वि विवर्षी पर्छ रे, क्वन करे तिश्च असरात्य । असरात्य ॥ अस्पा विवर्षी पर्छ रे, क्वन करे तिश्च असरात्य रे ॥ इत्या वाल प्रवाश स्था विवर्षी वाल रे ॥ भागा। १॥। ववनाही इत्याप्त पर्वा विवर्षी वाल रे ॥ वोष उच्छासे दाल पचवीहामी रे के हिन स्तेह वेषन ने असार रे ॥ मारी विवर्षी नार ॥ वोष उच्छासे दाल पचवीहामी हे, के हिन स्तेह वेषन ने असार रे ॥ मारी वाल प्रवास विवर्षी पर्छ । वाल विवर्षी पर्छ विवर्षी से विवर्षी से अस्प सिक्त के वाल विवर्षी पर्छ विवर्षी से अस्प सिक्त के वाल विवर्ष से विवर्ण से विवर्ष से विवर्ण से विवर्ष से विवर्ष से विवर्ण से विवर्ष से विवर्ण से विवर्ष से विवर्ण स

मुखयी कहे, ए गु की दुं वेन ॥धा।

॥ बात ग्रंमी॥ (चादकियोने क्रम्योरे इरिसी आषमी रे ए देशी) नाइनिया निद्वेनारे केम नेखो नहीरे, श्रमयी तुमे इधिवार ॥ बार बरसपी भ्रा

माने मिटवारे, किम नकरा विषु सार ।।नाणार।। ए खाकणी ।। क्रमे तो निमुणी हु मि मुण कत्वी रे, तुमे में सुणुण निषान ॥ क्षमे तो तुमची पावन चे मह्यो रे, तेहनो म साक्ष्यो पावन के मह्यो रे, तेहनो म साक्ष्यो राज्यो रे मान ।।ताणाश। तुमे क्षम मस्तक मुगट विरोमपार्थी रे, क्षमे तुम चरपनी खे मान ।।वाणा ।। तुमे तो मेनक तुख्य ।। तुमे तो विरोमपार्थी सारितार रे, क्षमे तो मनक तुख्य ।। तुमे तो वैरूपे चिंतामणी सारितार रे, क्षमे तो मनक तुख्य ।। तुमे तो वैरूपे चिंतामणी सारितार रे, क्षाने म माने है कवडी में मूख्य ।।ताणाश। तुमे गंज सरिखा गुलपी गाजतार, स्वानीयम क्षमे म माने है कवडी में मूख्य ।।ताणाश। तुमे क्षमे साहितार ।। क्षाने म क्षाने साहितार ।। क्षाने म क्षाने साहितार ।। क्षाने में हिर करित हिर करित ।। ते तो क्षममें तुम वरिहात वाष्तार ।।ताणाश। मातालीने प्रमने खव के प्रतिय वालार ।। ते विरहातत वालार। वालार ।। वेहिलो मंद्रो कर वा वालार।।। वेहिलो मंद्रो कर ।। ते तो क्षमची पूरी निव पढी रे, एए कर्म विची ।। नाण। रे तो क्षमची पूरी निव पढी रे, एए कर्म विची ।। नाण। रे ।। तालो

वाद विविध्य प्रकार ॥ धन घन तुम भवतारमे, इम कहे वार्वार ॥६॥ स्वती पदती रो वती, पानी वसी प्रवीष्णा बहु वत्रीहो नेपने, भावी इन्खनरी दीन ॥॥। बीर पासे ब्रत यातम काज ॥ तेहनावी ५ ख मेडि थे, घरी खानैव समाज ॥५॥ तव नज्

अवित दीमें जी ॥इणा१३॥ "राजमान अपमान ते जाएयो, ए आश्वर्य खतीने जी ॥ रिवासु गएतु, ३ फूलर्तो मालादिकती पेठ सुवर्षने निर्माख्य गएाडु खने ४ राजाना मा तने भपमान गरादु, ए चार बाता शािनड्ने विषे भद्दोटा भाभवेकारक इता ॥३॥ नं, शावमंदासर्यामिष्चतुष्य ॥३॥ नावाध - रचगेनो उपजोम करवो, १ राजाने क (ह) । कलातने निर्पे कुदालपणु, ए घणुन गरातन, ६ परवेदाने निर्पे पण सुखे सुखे तदस्मी क्षे यो मतनी, ए सानी मदकरी रूप वाणीपी बत तेवा ब्रने ८ विणक जन उता पण, क्षे मन्तनी नोतन म बाने बद्योता मझ कमान्ने निष्टे सर्वोनम बना॥ १ ॥ १॥ भिन्छोण राजाती रोजत, ए भाठे हम्मेशा घम कुमरने विषे सर्वोत्तम हता ॥१॥ १॥ ' देवनोग नरत्त्रवे नोगाविया, फनक निर्मास्य ते कीचो जी ॥ "राजा श्रेधिकने किरियायो, जेवा कारे क्रमून गाजिकुमरने, महुको पन्ति वीचे जी ॥ हण ॥ १४॥ यडक वारित्रे ॥ स्वर्गेष्त्रीगीनुष्तिकयाणक, सुवर्षानिमोल्यमजून्छ्गाविवत् ॥ नरेडमानेप्यपमानर्चित अनुनरधैर्यमनुनरपद ॥शा जावार्थ न्तर्पोल्डट दान, सर्वोल्डट तप, सर्वोत्झट मान, स ्रा अनुनस्पयमनुमस्पव ॥व्या आवाज राजाल्डर भाग, तावाल्डर तम्, तावाल्डर तम्, तावाल्डर मान, त भूगे गेंक्डर वक्, सर्वोक्डर वैधे मने सर्वोत्डर पद एटवे सर्वापेसिङ विमात, ए सर्वे घन्न स्थान श्रनुत्तरं दानमनुत्तर तपो, झनुत्तरं मानमनुत्तरों यज्ञाः ॥ घन्यस्यशालेश्वगुषाभनुतरा , 🗐 प्रकारनी बुब्यि, ३ माटी खरिक्वामा पण (तेजमतूरी नीकजनापी) सुवर्णोसिष्यि

।। वोहा ।। वान पच जिन दासियां, भन्य सुपात्र जनग ।। अनुकंपा जीवतावि तिम, कीसिदान मन रंग ॥१॥ भन्य सुपात्रे मोक्षफ्त, केप त्रिपय सुख नोग ॥ दाहि | पे दानतपे गुपो, शिसत सपत संयोग ॥ ३॥ यत ॥ भाषांबुक्तम्, ॥ भन्य सुपर्वदाण,

| 戸 | | recent anies | 0 | - 0 | 'nà | परदेशीरामानी रास | 9 | 0-R | *** |
|-----|------------|---------------------------|--------|-----|-----------|----------------------------------|-------------------|--------|--------------|
| 44 | ⊃i | THE THE THE THE | n-D * | | 86 | साम्रिजामननो सम | 8 | D D | (-+ - |
| 44 | 9 : | मार्थना मान्याच्या विद्यो | , MI | ь | 8 | क्षमविषाकनो राम | 0 | 9 | \$ \$ |
| Φį | - : | मकावारताय विकास | . E. | | 30 | जीह्नाबसीनो रास | 6 | 9 | t•‡ |
| 44 | | - | D. | | 20 | अंजनासतीनो रास | 8 | 0 | tit |
| άŊ | × = | - | Я | 9 | m² | कानदकतिपारानो रास | a | D) | 44 |
| 44 | | अंक्रप्रियम् | 0 | _ | III | देवकीमा छ पुत्रना रास | 0 | D | 14 |
| νįν | | direct and | 0 | - | ال ال | नबस्मरपा मूजपान | ь | 9 | • |
| ΜŃ | , m | ~ | D | _ | Ш. Ш. | संबयनक्रोतेरा | 9 | er | 1 |
| ate | r =0 | <u>श्रिकतमञ्जीनोरास</u> | ~ | - | 20 | अहोषां नक्षों | 0 | o m | 1 |
| Þ | | धानक्षयन बहाविरी | 9 | _ | 2 | समूद्यीपनी नक्या | ٥ | 0 | r Ŧ |
| Ņ. | - | - | 0-R -0 | - | DDY UH | नारकीना चित्रनी बुक | 0 | 0 | † *• |
| 14 | , D | प्रशिष्टवी | 2 | 87 | | ગુજરાતી લીપિમા છાપેલા યુસ્તકા | 4 | | 11 |
| 4 | ~ | मानत्यमानवतीनोराम | 0 % D | | 8 | روي مد | 2 | ٥ | 14 |
| 144 | 2 | अन्तर्यकुमारनी राम | 8 | Þ | 8 8 | <u> </u> | 000 | 9 | 4.4 |
| विव | (). H). | सिराज मधराजनोराम | 82" | P | 8 8 | ४० केनसन्त्रासभावा साग र मे हि | | 9 9 | 1 |
| 44 | a B | चारमत्येकबुद्धनो राम |) | - | % | દ્રી નાકૃતાવળી અથવા જૈનકધાસમહ કિ | سن دوم دور/ | 9 | ** |
| 4 | | ` | | | | | | | Ш |

ğ Party Here the built make their year तर प्री. वेम तेम ७ पाइन मदार प्रा. 1000 BARRE יו שוויונותיו 0-0119 0-11-0 t of M MAN 30-0-6 -अभागवास かかその) じんらん ひりんない そん િલ. સેવક કચગભાઇ 3 त नेराम्बास काण १ वै। T-3 E-518 (DI GARRES) RIVE THE WAY SEE OUT THE WHATE PIE לאוזשם פרוועל त्याशामिक्यना मस Parting market THE STATE STATE दानीकवति निश Heliella gallalla 12411AT) 30 The Brade book parket book by book





